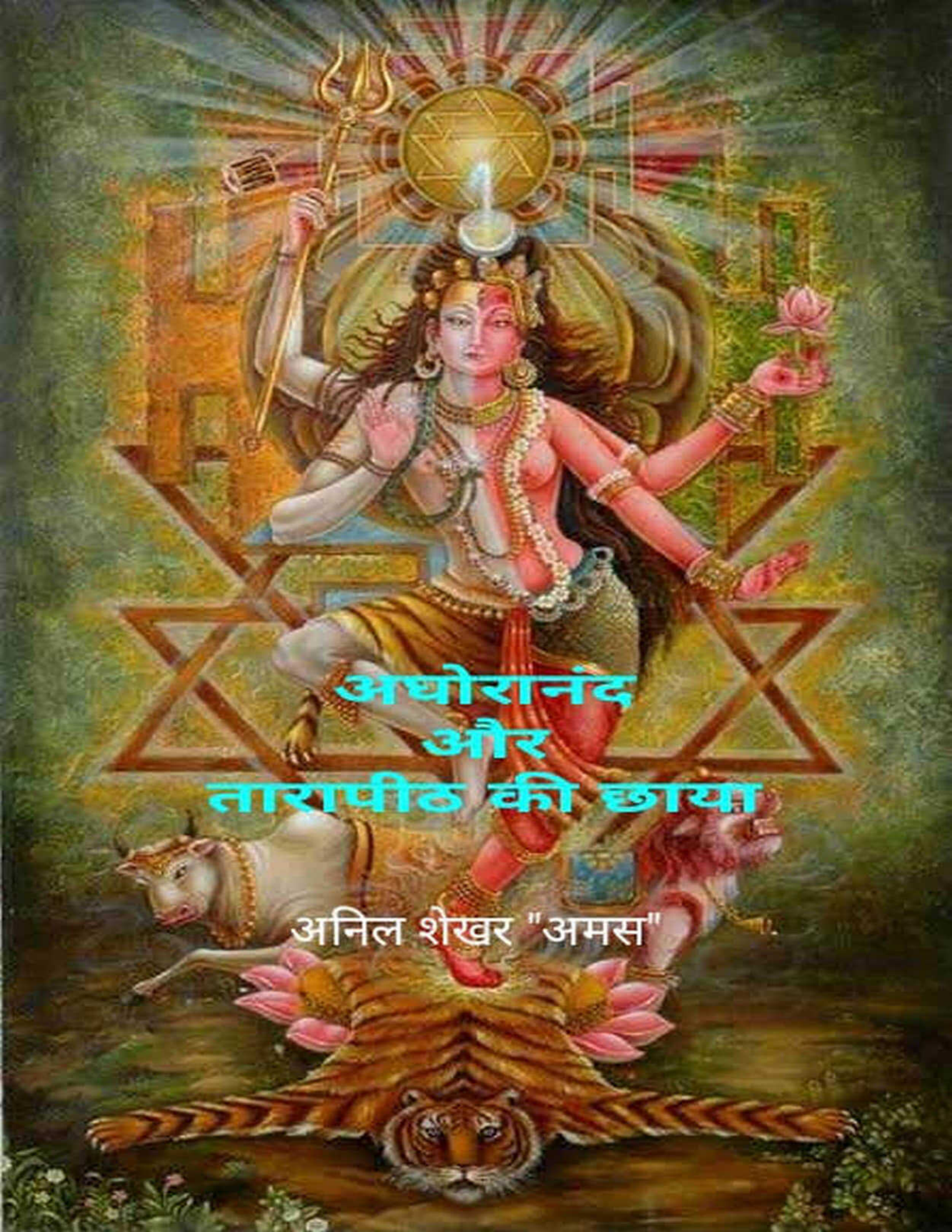
अघोरानंद
और
तारापीठ की छाया
अनिल शेखर "अमस"

अघोरानंद और तारापीठ की छाया

विषय वस्तु

गुरु आदेश

तारापीठ का श्मशान
रहस्यमय कुत्ते
तारा रहस्य
महाश्यामा साधना
दूसरी रात्रि
बामा खेपा का बिम्ब
गर्म पानी की बाल्टी
तारा स्तव मंजरी
बामा खेपा और तारा माई
बामा की माँ का श्राद्ध भोज
बाबा प्रचंडनाथ
अघोरेश्वर
नागमणि वाले नाग
छाया का गीत
तारापीठ का पाँचवाँ दिन
नागमणि
भूगर्भ सिद्धि
छाया का रहस्य
दादा के जमीन का खजाना
तारापीठ की देवी
तारा माई का विग्रह
द्वारिका नदी का घाट
हत्था जोड़ी
जागृत श्मशान
तारा माई की स्वर्ण मूर्ति
तारा माई के दिव्य दर्शन
अघोरानंद और तारापीठ की छाया
गुरु आदेश

एक दिन सुबह गुरुदेव के दिव्य बिंब की उपस्थिति पूजन कक्ष में हुई । उन्होंने निर्देशित किया कि पश्चिम बंगाल में रामपुर में स्थित तारापीठ जाकर तारा साधना करनी है ……

भगवती तारा को 10 महाविद्याओं में से एक माना जाता है । यह महाविद्या साधना बाकी सभी महाविद्याओं से ज्यादा कठिन मानी जाती है । इसके प्रमुख साधक महर्षि

वशिष्ठ माने जाते हैं । इनकी साधना भगवान बुद्ध तथा उनके अनुयाई भी अलग-अलग स्वरूपों में करते हैं । बौद्ध धर्म मे प्रमुख रूप से पूजी जाने वाली पौधे देवी मणिपद्मा मां भगवती तारा का ही स्वरूप मानी जाती है ।

मैं तारापीठ की ओर निकल पड़ा । तारा-पीठ पश्चिम बंगाल में है । भगवती तारा के मंदिर की स्थिति ठीक श्मशान में है । मंदिर का द्वार श्मशान की ओर ही खुलता है । यह एक जागृत श्मशान है ।

तारापीठ में जब मैं पहुंचा तब सुबह के 10 बजे थे । मैं भगवती के मंदिर में पहुंचा । उनके दिव्य दर्शनों का सौभाग्य प्राप्त हुआ । तारापीठ के सामने ही श्मशान है । तारापीठ के शमशान की यात्रा लोग बाकी शमशान की तरह नहीं करते बल्कि एक सिद्ध पीठ की तरह करते हैं । वहां पर लोगों का आना जाना लगा रहता है ।

यह श्मशान कहने को श्मशान है । लेकिन वहां पर बाबाओं के अलग-अलग झोपड़े जो सामान्यतः टेंट के जैसे होते हैं और ताल पत्री या वैसे किसी चीज से बने होते हैं काफी संख्या में है ।

उन्हीं के बगल से निकलता हुआ श्मशान में उस जगह पहुंचा जहां चिता जलती है ।

वहां पर मैंने एक अद्भुत दृश्य देखा……

आज तक मैंने जितने भी श्मशान देखे हैं उसमें लकड़ी रखी जाती है । लकड़ी के ऊपर शव रखा जाता है और उसके ऊपर फिर से लकड़ी रख दी जाती है । उसके बाद आग लगाई जाती है जिससे शव पूरी तरह चारों ओर से जल जाए । लेकिन ! तारापीठ श्मशान में मामला कुछ अलग ही था …..

वहां पर कोयले जैसे ढेर था लकड़ियां थी और लकड़ियों में सबसे ऊपर एक पुरुष का मृत देह उत्थान पड़ा हुआ था । अर्थात पीठ जमीन की ओर थी । उसका कंधे से नीचे का हिस्सा लकड़ी के ऊपर था और कंधे के ऊपर का हिस्सा लटका हुआ था । आग जल रही थी । आजू बाजू में दो डोम खड़े थे । उनके हाथ में बड़े-बड़े बांस थे । जो लगभग 10 से 12 फुट लंबे रहेंगे ।

क्या वजह थी यह तो मैं नहीं जानता, लेकिन उस शव के देह का जो मूल था वह आसमान की ओर तन कर खड़ा हुआ था । दोनों डोम अपने बांस से बीच-बीच में उसे भी एक दो बार मार देते थे लेकिन वह वैसा का वैसा ही था । जैसे-जैसे आग बढ़ती गई, दोनों डोम सिर और पैर को एक तरफ मोड़ते चले गए और आखरी में वह शव एक पोटली जैसा हो गया ।

इस प्रकार की जलाने की अंतिम संस्कार की पद्धति मैंने पहली बार देखी थी । वहां इसी प्रकार से शवदाह होता है और जलने के अंत में वह पूरा शरीर मुश्किल से 1 फुट बाई 1 फुट के गोले जैसा हो गया था ।

इतना देखने के बाद मैं अचंभित होता हुआ वहां से बाहर निकल आया । बाहर निकल कर मैं अपने होटल की ओर चल पड़ा । होटल की बजाय कमरा कहना ज्यादा बेहतर होगा क्योंकि वह एक बड़ा सा मकान था जिसमें मकान मालिक ने लोगों को किराए पर देने की व्यवस्था कर रखी थी । नवरात्रि और पर्व के सीजन में वहां काफी भीड़ रहती है लेकिन जब मैं वहां पहुंचा तो वह आफ़ सीजन वाला समय था । इसलिए मुझे डेड सो रुपए में कमरा मिल गया ।

यह कमरा ठीक-ठाक था । मकान मालिक ने मुझसे आने का कारण पूछा । मैंने उसे बताया कि मैं तारापीठ पर भगवती की साधना करने आया हूं तो उसने मुझसे और कोई सवाल नहीं किया । शायद वहां पर लोग आते रहते होंगे ।

खैर…….

तारापीठ का श्मशान

धीरे-धीरे रात का समय हुआ । लगभग 11 बजे के आसपास मैं फिर होटल से निकला । तब तक तारापीठ के श्मशान में बाबाओं ने अपना अपना भजन पूजन का कार्यक्रम चालू कर दिया था । कोई चिमटा बजा कर गीत गा रहा था तो कोई अपने ही अंदाज में नाच रहा था कुल मिलाकर सब अपनी अपनी मस्ती में थे ।

मैं श्मशान के अंदर घुसा तो वहां के लोगों ने मुझे घूर घूर कर देखना चालू कर दिया । मैं अघोर साधना तो करता था लेकिन अपने गुरु की तरह ही मैं भी गृहस्थ में होने के कारण सामान्य आदमी ही की तरह बाल भी कटवाता था और दाढ़ी भी बनवाता था । अघोर साधना में वस्त्रों का बंधन नहीं रहता है इसलिए मैं सभी प्रकार के वस्त्र पहन लेता था । उस दिन मैं काले रंग की जींस और सफेद रंग की शर्ट पहने हुए था । जो वहां के परिवेश के हिसाब से मैच नहीं हो रही थी । इसलिए शायद वह यह देख रहे थे कि यह कहां से आ गया ?

लगभग सौ कदम अंदर चला होऊंगा तभी एक लाल चोले वाला बाबा ठीक मेरे सामने आकर खड़ा हो गया । शरीर से वह हट्टा कट्टा था । आंखें लाल-लाल थी । गले में एक गमछा था ……...

वह साधु इस तरह से रास्ता रोककर खड़ा था कि उसका सीना मेरे सीने से टकरा रहा था ।

उसने मुझे घूरते हुए कुछ मंत्र पढ़ना चालू कर दिया । मंत्र की भाषा शायद बंगाली थी जिसमे काली कंकाली जैसे कुछ शब्दों के अलावा मुझे कुछ समझ में नहीं आ रहा था ।

यह भी समझ में नहीं आ रहा था कि यह बंदा, जिसको मैं जानता भी नहीं हूं , यह मेरे सामने क्यों खड़ा हुआ है ?

मेरी समझ में यह भी नहीं आ रहा था कि आखिर वह मंत्र जाप करके क्या दिखाना चाहता है ?

तभी मेरे अंदर से कुछ प्रतिक्रिया चालू हुई और मेरे मुंह से भगवती तारा का ध्यान प्रस्फुटित होने लगा।

प्रत्यालीढ़ पदाम मुंडमाला विभूषिताम

खरवा लंबोदरी भीमाम व्याघ्र चरमावृताम कटि.....

यह उच्चारण करते करते मैं आगे बढ़ चुका था। मेरी छाती उसकी छाती से टकरा रही थी ! वह मुझे धकेल रहा था ! मैं उसे धकेल रहा था !

हम लोग लगभग बराबर ताकत थे इसलिए ना वह मुझे ढकेल पा रहा था ना मैं उसे धकेल पा रहा था ! उसका मंत्र जाप जारी था और मेरा ध्यान भी।

यह स्थिति लगभग 2 मिनट रही होगी शायद। फिर एक बार उसने मुझे घूरा और फिर रास्ता दे दिया।

यह था महामाया का अपने पीठ में मेरा पहला परीक्षण.....

बाद में मुझे पता चला कि श्मशान में फालतू लोगों की उपस्थिति रोकने के लिए वह इस प्रकार का परीक्षण करते हैं कि आने वाला व्यक्ति साधना करने आया है या साधना करने वालों को परेशान करने आया है।

इस प्रकार से मेरी उपस्थिति वहां पर हो गई। अब मैंने भगवती के मंदिर के सामने अपना माथा टेका और शमशान के एक खाली कोने की ओर चल पड़ा। शमशान के बाजू में ही द्वारका नदी बहती है। उसके पानी की आहट आ रही थी।

मैं एक कोने में जाकर अपना आसन लगाकर बैठ गया। जो विधान मुझे मिला था उसके तहत मुझे हर रात्रि 108 माला तारा मंत्र का जाप करना था।

वह तारा मंत्र था

|| **ओम तारा तूरी स्वाहा** ||

यह तारा साधना का तंत्रोक्त मंत्र है , और इस मंत्र की 108 माला का जाप मुझे करना था। मेरे पास रुद्राक्ष की छोटे दाने वाली एक माला थी। उससे मैंने मंत्र जाप प्रारंभ किया ।

इसमें दो बातों का ध्यान रखना जरूरी होता है।

पहली तो यह कि प्रतिदिन उसी समय पर जाप करने बैठना है जिस समय पहले दिन बैठे। यानी अगर आप 9 बजे बैठे तो अगले दिन भी ठीक 9 बजे बैठ जाना है।

दूसरी , अगर यह साधना श्मशान में ही करनी है और रात 9 से सुबह 4 बजे के बीच ही करनी है।

रहस्यमय कुत्ते

जैसे ही मैंने मंत्र जाप प्रारंभ किया एक कुत्तों का झुंड भौंकता हुआ मेरी तरफ लपका । मुझे थोड़ा डर लगा लेकिन मैं अपने आसन पर बैठा रहा ।

जैसा कि साधना में होता है आसन लगाने से पहले अपने चारों ओर एक सुरक्षा घेरा बनाया जाता है । यह सुरक्षा घेरा मंत्र से बनाया जाता है और साधक की शक्ति के अनुसार यह भी ताकतवर होता है । यह रक्षा घेरा विभिन्न प्रकार की शक्तियों से रक्षा करता है ।

मैंने भी यह सुरक्षा घेरा बनाया हुआ था । कुत्तों का झुंड मेरे घेरे को पार नहीं कर पाया और घेरे के बाहर रुक गया ।

अभी स्थिति यह थी कि मैं बीच में घेरे के अंदर बैठा हुआ था और घेरे के चारों तरफ 8 कुत्ते बैठकर मुझे घूर रहे थे ।

इसमें सबसे विचित्र बात यह थी कि सारे कुत्ते काले रंग के थे !

सभी की आंखें लाल और चमकती हुई थी !

उनको देखकर ऐसा लगता था जैसे वास्तव में वे भैरव वाहन ही हों ।

उन जैसे हटे कट्टे मोटे तगड़े देसी कुत्ते मैंने कहीं नहीं देखें । हां लैबराडोर कुत्ते जरूर मोटे तगड़े होते हैं । लेकिन यह कुत्ते देसी थे । उसके बावजूद मोटे तगड़े भेड़ियों जैसे दिखते थे । आठों दिशाओं में 8 कुत्ते बैठे हुए थे और मैं घेरे के अंदर बैठकर मंत्र जाप कर रहा था ।

सारी रात यही स्थिति रही । मैं घेरे में रहा । वह आठों घेरे के बाहर एक ही आसन पर अपनी खूँखार आंखों से मुझे घूरते हुए , अपनी लंबी जीभ को बाहर लप-लपाते हुए , मेरे मंत्र जाप पूरा होते तक बैठे रहे ।

इसके बीच मेरे सुरक्षा चक्र के चारों ओर घूमते हुए हर आधे पौन घंटे में वे एक साथ जब विलाप के स्वर निकालते तो ऐसा लगता जैसे कान के पर्दे फट जाएंगे । जब मेरा मंत्र जाप पूरा हुआ तो वे किसी अज्ञात निर्देश को मानकर अपने आप पीछे मुड़कर चले गए ।

इस प्रकार से पहले दिन की साधना पूर्ण हुई । मुझे 8 दिन तक श्मशान में साधना करनी थी । यह पहला दिन था और बिना किसी बड़े व्यवधान के निकल गया । रात के लगभग 2 बजे मेरा जाप पूरा हो गया ।

अब वापस होटल कैसे जाऊं यह एक समस्या थी । क्योंकि इतनी रात को किसी को परेशान करना मुझे ठीक नहीं लगा । मैंने सोचा थोड़ी देर वही सो जाता हूं । मैंने अपनी पूजा सामग्री के थैले को सिरहाना बनाया और सो गया ।

अघोर साधना में जो साधक होता है । उसके लिए आसमान छत और पृथ्वी बिछोना होता है । इसलिए कहीं भी सो जाना उसके लिए बेहद सहज होता है । मुझे भी थोड़े ही समय में नींद आ गई । सूरज की किरने जब चेहरे पर पड़ी तब मेरी नींद खुली । सुबह के लगभग 8 बज चुके थे । गुनगुनी धूप निकल चुकी थी । वापस श्रद्धालुओं समेत लोगों का आना जाना चालू हो गया था ।

मैं उठा और द्वारका नदी की ओर चल पड़ा। वहां जाकर मैंने नित्यकर्म संपन्न किए और नहाया। जब वापस लौट रहा था तो नीले रंग की रेशमी साड़ी पहने हुए एक लगभग 25 वर्ष की सामान्य सी दिखने वाली युवती सामने से आ रही थी।

आमतौर पर युवतियां एक बार नजर मिलाने के बाद हटा लेती है। दूसरी ओर पुरुष जब तक वह नजरों से ओझल ना हो जाए तब तक घूरता रहता है। यही पुरुष और स्त्री के बीच का अंतर है। खैर....

हम दोनों की नजरें मिली। वह मुस्कुराई। मैं उसे जानता नहीं था। इसलिए मैंने सोचा कि वह किसी और को देखकर मुस्कुराई होगी। मैं आगे बढ़ा वह भी आगे बढ़ी।

जब हम दोनों एक दूसरे से लगभग 2 फीट के फैसले पर रह गए तब उसने फिर मुझसे नजरें मिलाइ। उसकी बिल्लौरी आंखों में गजब का तेज था। मैं एक पल को अवाक रह गया मेरे पैर ठिठक गए। मेरी हालत देखकर वह मुस्कुराई। अबकी बार मैं भी मुस्कुराया और हम दोनों अपने अपने रास्ते चले गए।

यह थी छाया से मेरी पहली रहस्यमयी मुलाकात...

मैं अपने कमरे में लौट चुका था मकान मालिक बनर्जी दादा ने पूछा - रात को कहां चले गए थे ?

मैंने बताया - रात में श्मशान में साधना कर रहा हूं।

उन्होंने गहरी नजरों से मेरी तरफ देखा । जैसे आंखों ही आंखों में मुझे तोल रहे हो। उसके बाद उन्होंने मुझे अपने साथ आने का इशारा किया। मैं उनके पीछे पीछे चल पड़ा। घर के पीछे की तरफ खुला दालान था। दालान के आगे एक और कमरा बना हुआ था। वह मुझे उस कमरे में ले गए। कमरे में घुसते ही मैं आनंद विभोर हो गया क्योंकि सामने ही मेरे गुरुवर की फोटो लगी हुई थी। मैं समझ गया कि गुरुदेव ने मेरे आने से पहले ही मेरे लिए सारी व्यवस्था कर दी थी। आगे का मार्ग दर्शन यही गुरुभाई बनर्जी दादा ही करेंगे।

मैंने फोटो को प्रणाम किया और मकान मालिक को भी प्रणाम किया।

तारा रहस्य

वह मुस्कुराए और पूछा - देवी तारा के बारे में क्या जानते हो ?

मैने दादा से कहा - आप ही भगवती तारा के विषय में कुछ बताइए।

उन्होंने बताया कि - महाविद्या तारा को काली कुल की शक्ति माना जाता है। उनका स्वरूप अत्यंत दिव्य है और महाविद्याओं में वे ऐसी विद्या है जो अपने साधक को उंगली पकड़कर साधना के मार्ग पर ले जाती है।

मैंने पूछा - यह तारा शक्तिपीठ कैसे बना ?

दादा बोले - कथा है कि देवी सती प्रजापति दक्ष की कन्या थी। जिसका विवाह महादेव शिव से हुआ था। एक बार प्रजापति दक्ष के यज्ञ आयोजन में भगवान शिव के

लिए स्थान नहीं देकर अपमान से सती अत्यंत क्रोधित हुई । उन्होंने अपनी योग शक्ति से अग्नि उत्पन्न करके अपने शरीर को समाप्त कर लिया । क्रोधित और विचलित भगवान शिव ने जली हुई सती के शरीर को कंधे पर उठाया । उन्हें अपने कंधे पर लेकर वे ब्रह्मांड का चक्कर लगाने लगे । ब्रह्मांड में हाहाकार मच गया । शक्ति का लुप्त हो जाना ब्रह्मांड के अस्तित्व के लिए खतरा बन गया । तब भगवान विष्णु ने सती के शरीर को अपने सुदर्शन चक्र से टुकड़ों टुकड़ों में काट दिया । वे टुकडे एक-एक करके पृथ्वी पर गिरे । जहां-जहां यह टुकड़े गिरे वहां वहां शक्तिपीठ की स्थापना हुई । पश्चिम बंगाल में स्थित तारापीठ में भगवती सती के आंख की पुतली गिरी थी और इसे महाविद्या तारा का सिद्ध पीठ माना जाता है ।

इतना बता कर वे रुके . तब तक चाय आ चुकी थी . हम दोनों ने चाय पी और मैंने विश्राम के लिए इजाजत मांगी . बनर्जी दादा ने एक किताब मुझे सौंपी ।

महाश्यामा साधना

किताब का शीर्षक था **महाश्यामा साधना** ।

यह किताब हिंदी में लिखी हुई थी और उस पर किसी लेखक का नाम नहीं था । मैंने उनकी ओर प्रश्नवाचक निगाहों से देखा । उन्होंने बताया कि यह किताब उन्होंने ही लिखी है । उसे लिखने का निर्देश उन्हें गुरुदेव से प्राप्त हुआ, लेकिन वे किताब प्रकाशित नहीं करवा पाए ।

बनर्जी दादा की हैंडराइटिंग इतनी सुंदर थी कि उसे देखकर प्रिंटेड कॉपी होने का संदेह होता । उन्होंने वह सारी किताब अपने हाथों से लिखी थी । उसे बड़े सुंदर ढंग से बाइंड भी किया था ।

मैं किताब लेकर अपने कमरे की ओर चल पड़ा । पढ़ना मेरा प्रिय शौक है । अगर कोई पसंद की किताब हाथ में लग गई तो उसे खत्म किए बिना कोई दूसरा काम करने का तो सवाल ही नहीं ।

तंत्र साधना मेरे लिए सबसे दिलचस्प विषय है । श्यामा साधना के विषय में मैंने हल्का-फुल्का सुना जरूर था लेकिन किसी प्रकार की प्रामाणिक जानकारी उपलब्ध नहीं थी । उसके विषय में जानने की प्रचंड आकांक्षा को महसूस करते हुए दादा ने वह किताब मुझे दी थी । किताब मिलते ही मेरे मन में जो पहला विचार आया वह यही था कि इसे पढ़े बिना अब आज कोई दूसरा काम नहीं करना है ।

कमरे में पहुंचकर मैं पढ़ने में लीन हो गया । उस किताब में इस रहस्यमय साधना के बारे में सब कुछ लिखा हुआ था.....

श्यामा साधना तंत्र जगत की सबसे जटिल साधना मानी जाती है । श्यामा साधना की विधि मंत्रों के साथ पूरे बृहद रूप में उस किताब में वर्णित की गई थी । साथ ही इसमें

बनर्जी दादा के साधनात्मक संस्मरण भी जुड़े थे।

आध्यात्मिक ग्रंथों का प्रकाशन सामान्यत: फायदे का धंधा नहीं होता है। इसलिए ऐसे ग्रंथों के लिए प्रकाशक बड़ी मुश्किल से मिलते हैं। शायद इसी लिए बनर्जी दादा को भी उसका प्रकाशक नहीं मिल पाया था।

श्यामा साधना युगल साधनाओं में सबसे मुश्किल और सबसे उच्च कोटि की साधना मानी जाती है।

इस साधना के लिए काफी लंबी तैयारी करनी पड़ती है। आत्म नियंत्रण और ध्यान का बहुत तगड़ा अभ्यास जरूरी होता है।

इसमें पूर्ण यौवनवान स्त्री ओर पुरूष को दिगंबर अवस्था में एक दूसरे के सामने बैठना होता है। आप खुद सोचें कि दुनिया का सबसे बड़ा आकर्षण आपके सामने होता है।

आपको विचलित नहीं होना है.....

यह स्थिति लगभग वैसी ही है कि किसी भूखे आदमी के सामने छप्पन भोग रखा हुआ है और वह उसे देखकर लार तक नहीं निकाल सकता....

ऐसी स्थिति में अपने आसन से हिले बिना पूरे 24 घंटे तक एक दूसरे को देखते हुए श्यामा मंत्र का जाप करना पड़ता है। इस दौरान दोनों के मन में किसी प्रकार का विकार नहीं आना चाहिए। अगर किसी वजह से विकार आ गया तो साधना खंडित हो जाती है। इसके परिणाम स्वरूप दोनों साधकों की या तो मानसिक अवस्था गड़बड़ा जाती है। या फिर वे मृत्यु को प्राप्त हो जाते हैं।

इसलिए इस साधना में बहुत कम लोग प्रवृत्त होते हैं।

उस किताब में ऐसे ही यह घटना का विवरण भी था। एक पहाड़ी गुफा में उच्च कोटि की साधना में लीन एक साधक तथा साधिका का विवरण था। जो कामाख्या की एक पहाड़ी गुफा में श्यामा साधना में संलग्न हुए थे। साधना सुबह 6 बजे से प्रारंभ हुई थी और अगले दिन सुबह 6 बजे उसे पूर्ण होना था । उस दिन रात लगभग 8 बजे तक साधना ठीक चल रही थी । बनर्जी दादा गुफा के बगल वाली दूसरी गुफा में अपनी साधना में लीन थे। रात के लगभग 9 बजे दोनों को साधना में छोड़कर बनर्जी दादा किसी कार्य से कामाख्या शक्तिपीठ तक गए। संभवत: रात्रि काल में शेष साधना के दौरान साधक और साधिका दोनों विचलित हुए थे और दोनों समाहित हो गए थे । जिसके परिणाम स्वरूप अगले दिन दोनों का शव युग्म अवस्था में साधना कक्ष में पड़ा हुआ मिला था। यह रोंगटे खड़े कर देने वाला और भयानक संस्मरण था। इसके अलावा दो तीन घटनाएं थी मैंने सारी की सारी पढ़ डाली। पूरी किताब पढ़ने के बाद किताब तकिए के नीचे रखकर मैं सो गया। जब नींद खुली तब शाम के 5 बज चुके थे।

बनर्जी दादा अपनी संध्या पूजा में व्यस्त हो चुके थे उनके कक्ष में से सुमधुर ध्वनि में भगवती तारा का स्तोत्र उच्चरित हो रहा था।

मैं भी जाकर उनके पास बैठ गया.....

लगभग आधे घंटे तक उनकी पूजा चली होगी। मैं साथ में बैठा रहा। चमेली के फूलों से भगवती का श्रंगार किया हुआ था। सामने मिनी पेड़े का भोग लगा हुआ था। पांच कटोरिया लाइन से रखी हुई थी और हर कटोरी में 3 पेड़े रखे थे। हर कटोरी के सामने एक दीपक था।

दीपक गुलाबी था। उसके अंदर की बत्ती गुलाबी थी। दादा की धोती गुलाबी थी। यानी पूजन कक्ष पूरा गुलाबी था। यहां तक कि दीवारें तक गुलाबी थीं। यही नही लगा हुआ बल्ब भी गुलाबी प्रकाश बिखेर रहा था।

पूजा समाप्त होने के बाद दादा ने बताया - देवी तारा की साधना में गुलाबी रँग के वस्त्र आसान का प्रयोग किया जाता है।

फिर उन्होंने पूछा - किताब पढ़ ली ?

मैंने सहमति में सिर हिलाया। उनका अगला सवाल था - फिर क्या सोचा ?

मैंने जवाब दिया - एक बार कोशिश जरूर करूंगा।

उनके चेहरे पर रहस्यमयी मुस्कुराहट आई और विलुप्त हो गई। इसका मतलब मैं समझ नहीं पाया।

दूसरी रात्रि

रात को 11 बजे मैं फिर से मसान की ओर निकल पड़ा। मेरे गुरु ने बताया था कि अगर 11:30 से 12:30 का समय साधना करते हुए गुजरे तो वही वास्तविक रात्रि साधना मानी जाती है। इसलिए मैंने रात के 11 बजे का समय चुना था ताकि साधना प्रारंभ होते होते 11:30 बज जाए। जिससे अर्ध रात्रि का समय मंत्र जाप करते हुए गुजरे।

जब मैं श्मशान पहुंचा तब लगभग 11:05 हुआ होगा। कल वाला साधु आज भी मौजूद था। वह मुझे देख कर मुस्कुराया। मैंने उसे हाथ जोड़कर प्रणाम किया। शायद शमशान के साधुओं को पता चल गया था कि मैं भी उन्हीं की बिरादरी का हूं। यह आत्मीयता सारे साधुओं के चेहरों पर छलक रही थी। यह ठीक वैसा ही था जैसा एक समाज के लोग एक दूसरे को देख कर खुशी व्यक्त करते हैं या सहज महसूस होते हैं। साधुओं का समाज लगभग हमारे समाज जैसा ही होता है। उनकी अपनी प्रतिबद्धताएं और नियम कानून होते हैं। लेकिन मानव तो वे भी हैं। इसलिए उनमें भी बाकी मानवों की तरह सहज भावनाएं, प्रेम, उत्साह, आत्मीयता सब कुछ होती है। वे भी क्रोधित होते हैं। वह भी प्रसन्न होते हैं। अपने जैसों के बीच में ज्यादा सहज भी महसूस करते हैं। उनका व्यक्त करने का तरीका अलग होता है, बस फर्क इतना ही है।

मैं वापस अपने स्थान पर पहुंच गया और प्रारंभिक पूजन सुरक्षा क्षेत्र आदि बनाने के बाद फिर से मंत्र जाप में बैठ गया। दूसरी माला खत्म होते होते आठों कुत्ते फिर से आ गए। कल की स्थिति में वे फिर से पोजीशन लेकर बैठ गये। मेरा मंत्र जाप चलता रहा और बीच-बीच में उनका आलाप भी चलता रहा।

लगभग 1 घंटे का समय गुजर गया। रात के 1 बजे के आसपास बारिश चालू हुई। बारिश हल्की फुल्की बारिश नहीं थी बल्कि घनघोर बारिश।

बारिश के साथ बार-बार बिजली भी कड़कती। एक बार साधना में बैठ जाने के बाद आसन नहीं छोड़ना चाहिए इसलिए मैं भी बारिश के बावजूद अपने आसन पर डटा हुआ था। जोरदार बारिश हो रही थी। बिजली गिर रही थी। धीरे धीरे यह स्थिति हो गई कि मैं पानी के तालाब के बीच में लगभग आधा कमर तक डूबा हुआ बैठा हुआ था।

बामा खेपा का बिम्ब

बारिश चालू होने के साथ सभी कुत्ते गायब हो चुके थे। 1:30 बजे के आसपास बिजली मेरे बाजू में लगभग 10 फुट की दूरी पर खड़े हुए एक पेड़ पर गिरी। नीम का यह पेड़ लगभग 15-16 फुट ऊंचा था। बिजली गिरते ही उसमें आग लग गई। बारिश के चलते थोड़ी देर में वह आग बुझ गई। मेरा मंत्र जाप चलता रहा और हर 10 मिनट के बाद उसी पेड़ पर बिजली गिरती, आग लग जाती और फिर बारिश की बूंदे उसे बुझा देती। उसके बाद उसमें से हल्का हल्का धुंआ निकलता रहता। ऐसा लगभग 10-12 बार हुआ।

जब जब बिजली कड़कती बिजली के साथ एक विशालकाय लंगोट पहना हुआ व्यक्ति भी दिखाई देता। मैं समझ नहीं पा रहा था कि वह कौन है। उनकी आंखें लाल लाल और बाल लंबे लंबे थे जो कंधे तक बिखरे थे। दाढ़ी लम्बी थी जो लगभग सीने तक आती थी। बिजली के साथ उनका चेहरा पेड़ के बराबर दिखाई देता था। अभी भी जब वह दृश्य याद आता है तो पूरे शरीर में सिहरन सी दौड़ जाती है। उस दिन का जाप बारिश और बिजली के साथ पूर्ण हो गया।

क्षमा प्रार्थना के साथ पूजन संपन्न हुआ। मैंने देखा सामने वही व्यक्तित्व सफेद रंग के धुए के बीच खड़ा था। वह आठों कुत्ते उनके चरणों में बैठे हुए थे। यह देख कर मुझे आभास हो गया कि कोई दिव्य शक्ति है। मैंने साष्टांग दंडवत प्रणाम किया। उन्होंने आशीर्वाद की मुद्रा में हाथ उठाया। मेरी आंखें अपने आप बन्द हो गई क्योंकि उनकी आंखों का तेज देखने का साहस मुझसे नहीं हो पा रहा था। यह स्थिति कुछ क्षण रही होगी। उसके बाद जब मैंने आंखें खोली तो वह स्वरूप गायब था। आठों कुत्ते वहीं के वहीं मौजूद थे।

वे 8 कुत्ते मेरे चारों तरफ पहले की तरह घूमने लगे और धीरे-धीरे उनकी गति बढ़ने लगी। बढ़ते बढ़ते गति इतनी ज्यादा हो गई जैसे कोई बवंडर हो। बवंडर ने मुझे भी उठा

लिया । बवंडर के अंदर मुझे एक नीले रंग का प्रकाश दिखाई दे रहा । इस नीले रंग के प्रकाश का कोई ओर छोर दिखाई नहीं दे रहा था । ऐसा लग रहा था जैसे कोई नीले रंग की लेजर बीम हो । जो किसी अज्ञात स्रोत से आ रही थी और अज्ञात गहराइ की ओर जा रही है । वह दृश्य बेहद अद्भुत था अकल्पनीय था रोमांचक था और अवर्णनीय था ।

एक ऐसा दृश्य था जिसकी व्याख्या करना या वर्णन करना शब्दों की सीमा से परे है । हां यह जरूर था कि मुझे बेहद आनंद की अनुभूति हो रही थी । ऐसा लग रहा था जैसे वह बवंडर अनंत काल तक चलता रहे ! वह नीला प्रकाश यूं ही बना रहे ! और मैं उसी को देखता बैठा रहूं…….

यह तो मेरी इच्छा थी लेकिन ऐसा हुआ नहीं । कुछ देर बाद बवंडर शांत होने लगा । उसके घूमने की रफ्तार धीमी पड़ने लगी । अब कुत्ते भी मुझे थोड़ा-थोड़ा दिखाई देने लगे ।

जब बवंडर छटा तो मैं तारा माई के मंदिर के प्रांगण में पड़ा हुआ था । आठों कुत्ते मेरे चारों तरफ बैठे हुए थे और मसान के सारे बाबा वहीं खडे थे । उनकी आंखें अविश्वास से भरी थीं । कुत्ते किसी को मेरे पास आने नही दे रहे थे ।

जैसे ही मुझे होश आया । आठों कुत्ते मेरी तरफ बढ़े । एक एक करके उन्होंने मेरी तरफ छलांग लगाई और शून्य में लुप्त हो गए । ऐसा लगा जैसे वे मुझमे समा गए हों । हर कुत्ते के कूदते ही मुझे भी एक झटका लगता था और मैं दो कदम पीछे सरक जाता था । उसके बाद वह गायब हो जाता था । मेरी समझ मे कुछ भी नही आ रहा था कि यह क्या हो रहा है ?

मैंने उठकर माई को प्रणाम किया और वापस जाने की सोची । सभी बाबा मेरे पास आ चुके थे । सारे बाबा भयभीत भी थे और उत्सुक भी ।

लेकिन मैं बात करने की स्थिति में नही था । भय , जिज्ञासा, आश्चर्य, अविश्वास सब की मिश्रित स्थिति में था और नींद भी आ रही थी । बवंडर और कुत्तों की वजह से मेरी हालत वैसे ही खराब हो चुकी थी । मैं वहां से भाग जाना चाहता था ।

रात के तीन बजे चुके थे । दादा ने कमरे की एक चाबी मुझे भी दे दी थी । इसलिए मैं वापस कमरे की ओर चल पड़ा ।

गर्म पानी की बाल्टी

कमरे पर पहुंच कर मैंने ताला खोला । मेरे पूरे कपड़े भीग चुके थे । मन में यही विचार आया कि काश थोड़ा गर्म पानी मिल जाता । नहा कर सो जाता । अब इतनी रात को कोई उठकर मुझे गर्म पानी तो नहीं देता । इसलिए गुसल खाने में जाकर अपने कपड़े उतारे तथा जैसे ही बाल्टी में हाथ डाला , मैं दंग रह गया । बाल्टी में गर्म पानी भरा हुआ था । बंद कमरे में गर्म पानी की बाल्टी ? यह मेरी समझ से बाहर था ….

गरम पानी की बाल्टी उस समय एक वरदान जैसी लगी । मैंने झटपट स्नान किया और बदन पोंछकर बिस्तर पर लुढ़क गया । गहरी नींद में पहुंचने में मुझे मुश्किल से 5 या 10 सेकंड लगे होंगे ।

अगली सुबह 10 बजे तक मेरी नींद नहीं खुली । 10 बजे जब उठा तो मेरा शरीर तप रहा था । ऐसा लग रहा था जैसे 102 डिग्री का बुखार हो ।

तभी दरवाजे को किसी ने खटखटाया । मैंने उठकर दरवाजा खोला । सामने बनर्जी दादा खड़े थे । मैंने दरवाजे से हटकर उन्हें अंदर आमंत्रित किया । मेरी हालत देखकर उन्हें लगा कि कुछ गड़बड़ है ।

उन्होंने मेरा हाथ पकड़ा । बुखार से तपते हाथ से उन्हें मेरी हालत का पता चल गया….

उन्होंने पूछा - क्या रात को दर्शन हुए ?

मैंने पूरे विस्तार से उनको सारी घटनाएं बताइ ।

पूरी बात सुनकर वे अपनी जगह से उठे और मुझे गले से लगा लिया । उल्लास और उत्साह उनके चेहरे से फूट रहा था । उन्होंने मुझे गले लगा कर नाचना शुरू कर दिया । उन्हें भी और मुझे भी यह ध्यान नहीं रहा कि मुझे बुखार है । लगभग 5, 10 मिनट हम लोग यूं ही एक दूसरे को गले लगाकर कूद-कूद कर नाचते रहे ।

जब वे थोड़े शांत हुए तो उन्होंने कहा - बेटा तू भाग्यशाली है । तुझे बाबा ने दर्शन दिए ! तुझे साक्षात महातारा के पुत्र बामाखेपा ने दर्शन दिए ! तेरा जीवन धन्य हुआ ! और तेरे दर्शन करके मेरा जीवन भी धन्य हुआ !!!

थोड़ा शांत होने पर हम दोनों बिस्तर पर बैठ गए । उन्होंने कहा - तू नहा कर मेरे साधना कक्ष में आ ।

इतना कहकर वे कक्ष से बाहर निकल गए ।

तारा स्तव मंजरी

बामाखेपा के बारे में मैंने ज्यादा कुछ पढ़ा नहीं था इसलिए बनर्जी दादा का उत्साह देखकर उनके बारे में और जानने की इच्छा प्रबल होती ऊंट की हो उठी मैंने झटपट स्नान किया दांत के साथ साथिया और 10 मिनट में दादा के साधना कक्ष में हाजिर हो गया ।

चमेली के फूलों से भगवती का श्रंगार किया हुआ था । सामने मिनी पेड़े का भोग लगा हुआ था । नौ कटोरिया लाइन से रखी हुई थी । हर कटोरी में 3 पेड़ा रखा था । हर कटोरी के सामने एक दीपक था ।

दादा ने अपने आसन के बगल में मेरे लिए भी एक आसन बिछा हुआ था हवन कुंड रखा था और उसमें अग्नि जल रही थी । उनके सामने एक किताब खुली हुई पड़ी थी । मैं उसे बड़ी जिज्ञासा से देख रहा था ।

मेरी जिज्ञासा समझ कर दादा ने बताया - यह किताब तारा स्तव मंजरी है, जोकि कल्याण मंदिर प्रकाशन प्रयाग से प्रकाशित है । इस किताब में भगवती तारा के विभिन्न स्तोत्रों का संग्रह है। इसमें सबसे महत्वपूर्ण है तारा त्रैलोक्य विजय कवच। इसी कवच के माध्यम से आज का हवन हम संपन्न करेंगे ताकि तुम्हारी साधना निष्पक्ष रुप से पूर्ण हो सके और भगवती की पूर्ण कृपा प्राप्त कर सको।

तारा त्रैलोक्य विजय कवच हवन प्रारंभ हुआ। यह भगवती तारा के 108 स्वरूपों का बीज मंत्रों से संगठित मंत्रात्मक कवच है। जो भगवती की कृपा प्रदान करने वाला माना जाता है। हर स्वरुप के मंत्रों के साथ साथ आहुतियां चलती रही। हम दोनों स्वाहा के उच्चारण के साथ दशांग अग्नि को समर्पित करते रहे। लगभग 45 मिनट का समय इस हवन में लगा होगा और हवन के अंतिम चरण की आहूतिया चल रही थी। पूर्णाहुति के लिए कवच के अंत में एक विशेष मंत्र दिया हुआ है। उस मंत्र का उच्चारण करते दादा हाथ जोड़ कर बैठ गए। मैं भी हाथ जोड़ कर बैठ गया और जब अंत में स्वाहा आ गया तो मैंने सोचा कि अब दशाग हवन में डालना होगा।

मैंने दशांग की ओर हाथ बढ़ाया, लेकिन दादा अब भी हाथ जोड़कर बैठे थे। उनकी आंखें बंद थी तो मैंने भी दशांग वापस छोड़ दिया। तभी ! एक आश्चर्यजनक घटना घटित हुई ! यज्ञ कुंड में से अग्नि की सात लपटें कटोरियों की तरफ बढ़ी। सातों कटोरियो में रखे पेड़े यज्ञ कुंड में आ गिरे।

अग्नि को सप्त जिह्वा कहा जाता है। अर्थात सात जीभ वाली कहा जाता है। ऐसा प्रतीत हुआ जैसे अग्नि की जीभ ने आगे बढ़ कर उन कटोरियों में रखें पेड़े को ग्रहण कर लिया।

पूजन के बाद जब हमने देखा तो 7 कटोरियों के पेडे कुंड के अंदर विलुप्त हो चुके थे। दो कटोरिया वैसी की वैसी रखी थी और उनमे पेड़े रखे हुए थे। हवन के बाद क्षमा प्रार्थना तथा शांति पाठ करने के बाद दादा ने एक कटोरी मेरी तरफ बढ़ाई और एक कटोरी खुद अपने पास रख ली। मैंने प्रश्नवाचक निगाहों से उनको देखा। वे कटोरी से पेड़ा खाने के लिए उठा चुके थे। मुझे भी उन्होंने संकेत किया। भगवती को प्रणाम करते हुए मैंने तीनों पेड़े उदरस्थ कर दिए।

जैसा कि आप लोग जानते होंगे मिनी पेड़ा मिठाइयों में सबसे सस्ते मिठाइयों में से आता है , लेकिन उन पेड़ों में जो स्वाद था उसकी तुलना काजू कतली जैसे महंगी मिठाइयों से भी नहीं की जा सकती है। वैसा स्वादिष्ट मिष्ठान मैंने कभी नहीं खाया। उसका स्वाद अनूठा था। जिसे मैं जिंदगी भर नहीं भूल सकता।

वापस लौटते समय दरवाजे के ऊपर लगे हुए फोटो पर मेरी नजर पड़ी। मैं ठिठक कर रुक गया। अरे यह तो उसी बाबा की फोटो है। यह उसी व्यक्तित्व की फोटो थी जिसे

कल रात को मैंने बिम्ब रूप से देखा था। चित्र के नीचे लिखा हुआ था तारा पुत्र बामाखेपा । मुझे उत्सुक देखकर दादा ने कहा चल तुझे बाबा की कहानी सुनाता हूं।

बामा खेपा और तारा माई

पश्चिम बंगाल के एक गांव में वामा चरण नाम के बालक का जन्म हुआ। बालक के जन्म के कुछ समय बाद उसके पिता का देहांत हो गया। माता भी गरीब थी। इसलिए बच्चों के पालन पोषण की समस्या आई। उन्हें मामा के पास भेज दिया गया। मामा तारापीठ के पास के गांव में रहते थे। जैसा कि आमतौर पर अनाथ बच्चों के साथ होता है दोनों बच्चों के साथ बहुत अच्छा व्यवहार नहीं हुआ।

धीरे धीरे वामाचरण की रुचि बाबाओं की तरफ होने लगी। गांव के मशान में आने वाले बाबाओं की संगत में रहते रहते बामाचरण में भी देवी के प्रति रुझान बढ़ने लगा। अब वह तारा माई को बड़ी मां कहते और अपनी मां को छोटी मा।

बामा चरण कभी श्मशान में जलती चिता के पास जाकर बैठ जाता कभी यूं ही हवा में बातें करता रहता। ऐसे ही वह युवावस्था तक पहुंच गया। उसकी हरकतों की वजह से उसका नाम बामाचरण से वामा खेपा पड़ चुका था। खेपा का मतलब होता है पागल। यानी गांव वाले उसको आधा पागल समझते थे। उसके नाम के साथ उन्होंने पागल उपनाम जोड़ दिया था। वे यह नहीं जानते थे कि वस्तुत कितनी उच्च कोटि का महामानव उनके साथ है।

भाद्रपद मास की शुक्ल पक्ष की तृतीया तिथि थी मंगलवार का दिन था भगवती तारा की सिद्धि का परम सिद्ध मुहूर्त। रात का समय था बामाखेपा जलती हुई चिता के बगल में श्मशान में बैठा हुआ था तभी !

नीले आकाश से ज्योति फूट पड़ी और चारों तरफ प्रकाश ही प्रकाश फैल गया। उसी प्रकाश में वामाचरण को माँ तारा के दर्शन हुए।।

कमर में बाघ की खाल पहने हुए !
एक हाथ में तलवार लिए।
एक हाथ में खोपड़ी लिए।
एक हाथ में नीले कमल का पुष्प लिए।
एक हाथ में खड्ग लिए हुए।
आलता लगे सुंदर पैरो में पायल पहने हुए।
खुले हुए कमर तक बिखरे केश से युक्त ,
परम ब्रह्मांड की स्वामिनी, सौंदर्य की प्रतिमूर्ति।
नील वर्णी , मंद मंद मुसकाती माँ तारा, वामाखेपा के सामने खड़ी थी.....

वामाखेपा उस भव्य और सुंदर देवी को देखकर खुशी से भर गए। माता ने उसके सर पर हाथ फेरा और बामाखेपा वही समाधिस्थ हो गए वे 3 दिन और 3 रात उसी समाधि की अवस्था में वे श्मशान में रहे। 3 दिन के बाद उन्हें होश आया और होश आते ही वह मां मां चिल्लाते हुए इधर उधर दौडने लगे। अब गांव वालों को पूरा यकीन हो गया कि बामा पूरा पागल हो गया है।

वहां की रानी जी को सपने में भगवती तारा ने दर्शन दिए और निर्देश दिया कि मसान के पास मेरे लिए मंदिर का निर्माण करो और बामा को पुजारी बनाओ। अगले दिन से मंदिर निर्माण का कार्य प्रारंभ हो गया कुछ ही दिनों में मंदिर बनकर तैयार हो गया और बामा को मंदिर का पुजारी बना दिया गया। बामा बेहद खुश हो गए क्योंकि क्योंकि उनकी बड़ी मां अब उनके साथ है…...

रानी के द्वारा बनाया मंदिर अर्थात मोटे चढ़ावे की संभावना। अब ऐसे मंदिर में एक आधे पागल को पुजारी बनाना बहुत से पण्डों को रास नहीं आया। वे बामाखेपा को निपटाने का मार्ग खोजते रहते थे। बामाखेपा की हरकतें अजीब अजीब हुआ करती थी। कई बार वह दिन भर पूजा करता। कई बार 2-2, 3-3 दिन तक पूजा ही नहीं करता। कभी देवी को माला पहनाता कभी खुद पहन लेता। इनमें से कोई भी प्रक्रम पंडों के हिसाब से शास्त्रीय पूजन विधि से नहीं मिलता था। यह बात उनको खटक रही थी।

एक दिन ऐसा हुआ कि प्रसाद बना और प्रसाद बनने के बाद जब मंदिर में पहुंचा तो देवी को भोग लगाने से पहले वामा चरण के मन में विचार आया, कि “इसे चखकर देख लो ! यह माता के खाने के लायक है भी कि नहीं”। बस फिर क्या था। उन्होंने प्रसाद की थाली में हाथ डाला और चखने के लिए अपने मुंह में डाल लिया। चखने के बाद जब सही लगा तो बाकी प्रसाद उन्होंने माई को अर्पित कर दिया ।

इतना बड़ा अवसर पंडित कहाँ छोड़ते। उन्होंने बवाल मचा दिया कि, देवी के प्रसाद को बामा ने खा लिया है। उसे जूठा कर दिया है। झूठा प्रसाद देवी को चढ़ा दिया है। अब देवी रुष्ट हो जाएगी, उसका प्रकोप सारे गांव को झेलना पड़ेगा। उसके बाद भीड़तंत्र का बोलबाला हुआ और गांव वालों ने मिलकर पंडों के साथ बामाचरण की कस कर पिटाई कर दी। उसे श्मशान में ले जाकर फेंक दिया। मंदिर पर पण्डों का कब्जा हो गया। उन्होंने शुद्धीकरण और तमाम प्रक्रियाएं की। उस दिन पूजन पण्डों के अनुसार संपन्न हुआ।

उधर बामाखेपा को होश आया तो वह माई पर गुस्सा हो गया - मैंने गलत क्या किया जो तूने मुझे पिटवा दिया। तुझे देने से पहले खाना स्वादिष्ट है या नहीं देख रहा था। इसमें मेरी गलती क्या थी ? मैं तो तुम्हें स्वादिष्ट भोग लगाने का प्रयास कर रहा था और चाहता था कि तुझे अच्छे स्वाद का प्रसाद ही मिले। अगर स्वाद गड़बड़ होता तो उसे फेककर दूसरा बनवाता। लेकिन तूने बेवजह मुझे पिटवाया जा मैं अब तेरे पास नही आऊंगा।

मसान घाट पर बैठकर बामाचरण ने मां को सारी बातें सुना दी और वहां से उठकर चला गया जंगल की ओर। जंगल में जाकर एक गुफा में बैठ गया। यह स्थिति बिलकुल वैसे ही थी जैसे अपनी मां से रूठ कर बच्चे किसी कोने में जाकर छुप जाते हैं। बामाचरण और तारा माई के बीच में मां और बेटे जैसा रिश्ता था। यह रिश्ता बिल्कुल वैसा ही था जैसे एक अबोध शिशु और उसकी मां की बीच में होता है।

अपने शिशु की व्यथा तारा माई को सहन नहीं हुई। उसी रात रानी के स्वप्न में माई प्रकट हुई। क्रोधित माई ने रानी को फटकार लगाई - तेरे पण्डों ने मेरे पुत्र को बुरी तरह से मारा है। मैं तेरा मंदिर छोड़ कर जा रही हूं। अब तुझे और तेरे राज्य को मेरा प्रकोप सहना पड़ेगा, अगर मेरे प्रकोप से बचना चाहती है तो कल के कल मेरे पुत्र को वापस लाकर मंदिर में पूजा का भार सौंप वरना प्रतिफल भुगतने के लिए तैयार रह।

एक तो तारा माई का रूप ऐसे ही भयानक है। क्रोधित अवस्था में सीधी सरल माता भी काली से कम नहीं दिखाई देती। क्रोधित माई का स्वरूप व्याख्या से परे था।

रानी हड़बड़ा कर पलंग पर उठ बैठी। रानी के लिए रात बिताना भी मुश्किल हो गया। उसने सारी रात जागकर बिताई। अगले दिन अपने सेवकों को दौड़ाया और मामले का पता लगाने के लिए कहा। जैसे ही पूरी जानकारी प्राप्त हुई रानी अपने लाव लश्कर के साथ मंदिर पहुंच गई। सारे पण्डों को कसकर फटकार लगाई और मंदिर में प्रवेश से प्रतिबंधित कर दिया। अपने सेवकों को आदेश दिया कि जैसे भी हो बामाखेपा को पकड़कर लाओ।

अब सारे सेवक चारों तरफ बामाखेपा की खोज में लग गए। एक सेवक को गुफा में बैठा हुआ बामाखेपा मिल गया। बड़ी मनोव्वल के बाद भी वह नहीं माना सेवक में जाकर रानी को बात बताई। अंततः रानी खुद गुफा तक पहुंची।

बामा ने उनपर भी अपना गुस्सा उतारा - आप के कहने पर मैं पूजा कर रहा था और मुझे देखो इन लोगों ने कितना मारा !

उनकी बाल सुलभ सहजता को देखकर रानी का नारी हृदय भी ममत्व से भर गया। उनकी समझ में आ गया कि तारा माई मातृत्व इस बामाखेपा के प्रति क्यों है।

उन्होंने फरमान जारी कर दिया। इस मंदिर का पुजारी बामाखेपा है। उसकी जैसी मर्जी हो जैसी विधि वह करना चाहे उस प्रकार से पूजा करने के लिए वह स्वतंत्र है। कोई भी उसके मार्ग में आएगा तो दंड का भागी होगा। यह मंदिर बामाखेपा का है और तारा माई भी बामाखेपा की है। वह जिस विधान को सही समझे, उस विधान से पूजा करेगा और वही विधान यहां पर सही माना जाएगा।

बामाखेपा को तो जैसे मन मांगी मुराद मिल गई। मां और बेटे का मिलन हो चुका था। मंदिर व्यवस्था फिर से बामाखेपा के हिसाब से चलने लगी।

ऐसा माना जाता है कि तारा माई खुद बामाखेपा के हाथ से प्रसाद ग्रहण करती थी। ऐसे अद्भुत ढंग से बामाखेपा तारा माई के पूजन करते जिसका कोई नियम नहीं था। कभी सुबह 4 बजे पूजा चल रही है तो कभी दोपहर 12 बजे तक पूजा प्रारंभ नहीं होती। क़भी रात भर पूजा चल रही है तो कभी पूरे दिन भर मंदिर की ओर बामाखेपा के दर्शन ही नहीं होते थे । उनकी पूजन विधि लोगों को पसंद नहीं थी ,लेकिन उनके पास कोई उपाय नहीं था , क्योंकि रानी का फरमान था।

बामा की माँ का श्राद्ध भोज

बामाखेपा अपनी मस्ती में जीते थे और लोग उन्हें नीचा दिखाने का रास्ता खोजते। एक दिन बामाखेपा की मां का निधन हो गया। नदी में बाढ़ थी। नदी के उस पार गांव था। बामा जिद पर अड़ गए छोटी मां का दाह संस्कार बड़ी मां के पास वाले श्मशान में किया जाएगा। गांव वाले बाढ़ वाली नदी को पार करने में जान का खतरा है यह जानते थे , लेकिन बामा को समझाना किसी के बस की बात नहीं।

नाव वाले से बाबा ने देह को नदी के पार पहुंचाने की बात की। नाव वाले ने साफ इंकार कर दिया। बाबा ने नाव देने के लिए कहा। नाव वाला हाथ जोड़कर बोला - बाबा यही मेरे जीवन का सहारा है अगर बाढ़ में यह बह गया तो मैं घर कैसे चला लूंगा ?

बामा के चेहरे में रहस्यमई मुस्कान बिखर गई। जैसे उन्होंने कोई निर्णय ले लिया हो। उन्होंने अपनी माता के शव को उठाया और खुद नदी पर चलते हुए इस पार पहुंच गए। गांव वाले आंखें फाड़े उस दृश्य को देखते रह गए। बामा की इच्छा के अनुसार ही उन्होंने माई के मंदिर के पास वाले श्मशान में अपनी मां का दाह संस्कार संपन्न किया।

मृत्यु भोज के लिए आसपास के सारे गांव में जितने लोग हैं सभी को निमंत्रित करने के लिए बामाखेपा ने अपने घर के लोगों और आसपास के लोगों को कहा। सब इसे बामाखेपा का पागलपन समझकर शांत रहें। जिसके पास दो वक्त की रोटी का पता नहीं वह आसपास के 20 गांव को खाना कैसे खिलाएंगा यह उनके लिए कल्पना से भी परे की बात थी।

जब कोई भी निमंत्रण देने जाने को तैयार नहीं हुआ तो बामाखेपा अकेले निकल पड़े। उन्होंने आसपास के 20 गांवों में हर किसी को मृत्यु भोज के लिए आमंत्रित कर लिया। सारे गांव वाले यह देखने के लिए तारापीठ पहुंचने लगे कि देखा जाए यह पगला किस प्रकार से इतने सारे लोगों को मृत्यु भोज कराता है।

गांव वालों की आंखें उस समय फटी की फटी रह गई जब सुबह से बैल गाड़ियों में भर-भर कर अनाज सब्जी आदि तारापीठ की तरफ आने लगी। बैल गाड़ियों का पूरा एक काफिला मंदिर के पास पहुंच गया। अनाज और सब्जियों का ढेर लग गया। जो लोग आए

थे उन्होंने खाना बनाना भी प्रारंभ कर दिया । दोपहर होते-होते सुस्वादु भोजन की गंध से पूरा इलाका महक रहा था ।

प्रकृति भी कब छोड़ती है, आसमान में बादल छाने लगे । प्रकृति ने भी रौद्र रूप धारण कर लिया । बिजली कड़कने लगी । हवाएं चलने लगी और जोरदार बारिश के आसार नजर आने लगे । बामाखेपा अपनी जगह से उठे और जिस जगह पर श्राद्ध भोज होना था , उस पूरे जगह को बांस के डंडे से एक घेरा बनाकर घेर दिया ।

घनघोर बारिश चालू हो गई लेकिन घेरे के अंदर एक बूंद पानी भी नहीं गिरी । गांव वाले देख सकते थे कि वे जहां बैठकर भोजन कर रहे हैं वह पूरा हिस्सा सूखा हुआ है और उस घेरे के बाहर पानी की मोटी मोटी बूंदें बरस रही है और जमीन से जल धाराएं बह रही हैं । वह पूरा इलाका जिसमें भोज का आयोजन था ,पूरी तरह से सूखा हुआ था । 20 गांव से आए हुए सभी लोगों ने छक कर भोजन किया । हर कोई तृप्त हो गया ।

अब बारी थी वापस अपने अपने गांव जाने की । घनघोर बारिश को देखते हुए वापस जाने के लिए दिक्कत आएगी यह सोचकर सभी चिंतित थे । बामाखेपा ने माई के सामने अपना अनुरोध पेश किया और कुछ ही क्षणों में आसमान पूरी तरह से साफ हो गया और धूप खिल गई । सारे लोग बड़ी सहजता से अपने अपने गांव तक पहुंच गए ।

इस घटना के बाद बामाखेपा की अलौकिकता के बारे में लोगों को पता लगा । धीरे-धीरे लोगों की भीड़ बामाखेपा की तारा पीठ में बढ़ने लगी । कोई बीमार आता तो बामाखेपा उस पर हाथ फेर देते तो वह स्वस्थ हो जाता है । निसंतानों को संतान प्राप्ति हो जाती और सभी आगंतुकों की इच्छा और मनोकामना तारापीठ में पूरी होने लगी ।

बामाखेपा कभी भी बिना चखे माई को भोजन नहीं कराते थे । ऐसा माना जाता है कि माई स्वयं अपने हाथ से उनको भोजन खिलाती थी और उनके हाथों से भोजन ग्रहण करती थी । ऐसे अद्भुत महामानव बामाखेपा अपने अंत समय में माई की प्रतिमा में लीन हो गए ।

उस अद्भुत महा साधक के जीवन का वर्णन सुनकर रोंगटे खड़े हो गए । हृदय में गर्व की अनुभूति भी हुई कि मुझे ऐसे दिव्य साधक के दर्शन हुए । दादा ने आगे बताया - तारापीठ पर आने वाले साधकों की साधना के हिसाब से जो श्रेष्ठ साधक होता है उसे बाबा अवश्य दर्शन देते हैं और उस साधक के लिए आगे साधना का मार्ग प्रशस्त हो जाता है ।

इतना बताने के बाद दादा रुके और फिर हम दोनों भोजन करने के लिए चल पड़े । भोजन करने के बाद अपने कपड़े वगैरह धोने के कार्य में लग गया और शाम हो गई ।

बाबा प्रचंडनाथ

शाम को कुछ सामान खरीदने के लिए बाजार जाना पड़ा …….

बाजार में सारी खरीदारी पूरी हो गई और मैं वापस लौट रहा था। वही साधु श्मशान वाला बाजार में मिल गया। हम दोनों ने साथ में चाय पी। चाय पीने के बाद साधु मेरी तरफ देख कर मुस्कुराया और बोला - गुरुजी आपसे मिलना चाहते हैं।

मैंने पूछा - कौन से गुरु जी।

उसने बताया - मेरे गुरुजी, जो शमशान के बाबाओं के प्रमुख है, वह तुमसे मिलना चाहते हैं।

बाजार से आने के बाद मेरे पास भी कुछ काम नहीं था। रात को भोजन करना नहीं था इसलिए फ्री था। तभी कपालिनी ने कान में आवाज लगाइ - चले जाओ।

मैंने उसे कहा - ठीक है मैं रात को लगभग 8 बजे तारा मंदिर के पास मिलूंगा। उसने हामी भरी। मैं घर आ गया।

बनर्जी दादा इंतजार में थे उन्होंने मुझे एक छोटी सी बोतल दी उसमें लाल रंग का कुमकुम जैसा कोई पदार्थ था।

मैंने प्रश्नवाचक निगाहों से उनकी तरफ देखा तो उन्होंने बताया - यह कामिया सिंदूर है। देवी को इसका अर्पण बहुत पसंद है। विशेष कार्यों की पूर्ति के लिए देवी को अर्पित करने से कार्य निर्विवाद रूप से पूरा होता ही है।

मैंने उसे लेकर प्रणाम किया फिर मैंने पूछा - दादा यह मिलता कहां है।

दादा ने बताया - यह कामाख्या पीठ की पहाड़ियों में पाया जाता है,इसका बड़ा महत्व है। यह तेरे काम आएगा।

बोतल मैंने जेब में डाली और कमरे के अंदर सामान रखा। चाय पीने के लिए दादा की तरफ से आवाज आ चुकी थी। जब तक चाय पी तब तक 7:30 बज चुके थे।

मैं शमशान की ओर निकल पड़ा। तारा मंदिर पहुंचा और माता जी को प्रणाम करके अपने ज्ञान के अनुसार पूजन समर्पित किया तब तक साधु आ चुका था। उसने अपना नाम गोपालदास बताया था।

गोपाल ने मुझे अपने साथ चलने का इशारा किया। मैं उसके साथ चल पड़ा। मसान के अंदर बनी हुई झोपड़ियों में से एक झोपड़ी में मुझे लेकर गया। जो दो भाग में बंटी थी। सामने की तरफ साधना करने की जगह थी। एक धूनी जल रही थी। त्रिशूल जैसे अघोरी साजो सामान वहां पर जमीन पर पड़े हुए थे। 1 आसन भी लगा हुआ था और उस आसन के नीचे खोपड़ी का हिस्सा नजर आ रहा था। जो साधक अघोरी साधना में सिद्ध होते हैं। वे मुंडासन का प्रयोग करते हैं अर्थात नरमुंड को अपने आसन के नीचे सिद्ध करके रखते हैं।

गोपालदास ने बताना चालू किया - गुरु जी का नाम प्रचंडनाथ है। वे पंच मुंडी आसन पर बैठते हैं और कई सालों तक कामाख्या में तपस्या करके आए हैं। पिछले 10 सालों से

तारापीठ में ही साधना कर रहे हैं । तारापीठ के श्मशान में सबसे वरिष्ठ साधु है । उनकी आयु करीब 70 साल की है ।

इतना बताते बताते गुरुजी अंदर से बाहर आ गए । हम दोनों ने उनको प्रणाम किया । उन्होंने आशीर्वाद की मुद्रा में हाथ उठाया । गोपाल को उन्होंने कुछ इशारा किया । वह झोपड़ी से बाहर निकल गया ।

प्रचंडनाथ जी ने अपने पंचमुंडी आसन पर बैठकर मां को प्रणाम किया और मुझे गहरी निगाहों से देखा । जैसे वह मुझे नापने की कोशिश कर रहे हैं । कुछ क्षणों तक उनकी दिप दिप करती तेजस्वी आंखें मुझ पर टिकी रही । उसके बाद उनके चेहरे पर मुस्कुराहट के भाव उभरे ।

मुझसे पूछा - अघोरानंद साधना कैसी चल रही है ।

मैंने हाथ जोड़कर प्रणाम किया और कहा - तारा माई और आप लोगों की कृपा से ठीक है ।

प्रचंडनाथ जी ने कहा - बेटा ! मेरे पास एक दुर्लभ तांत्रिक वस्तु है । जो मैं तुम्हें देना चाहता हूं । लेकिन उसे प्राप्त करने के लिए तुमको एक परीक्षा देनी होगी । क्या तुम इसके लिए तैयार हो ?

मुझे कपालिनी का संकेत प्राप्त हो चुका था, इसलिए मैंने सहमति में सिर हिलाया ।

बाबा प्रचंड नाथ ने आगे कहा - बेटा मैं पंचमुंडी आसन पर बैठकर साधना करता हूं । तुम इसके बारे में जानते होगे ।

मैंने कहा - बाबा थोड़ा बहुत जानता हूं । आप और प्रकाश डालेंगे तो ज्यादा बेहतर जान पाऊंगा ।

बाबा ने कहा- अघोर साधना में सिद्ध साधक ही मुंडासन में बैठने के अधिकारी होते हैं । जैसे-जैसे साधनाओं की उग्रता बढ़ती जाती है | मुंड की संख्या भी आसन के नीचे बढ़ती जाती है । पंचमुंडी आसन श्रेष्ठतम आसनों में से एक होता है । यह जिस पर मैं बैठा हूं | वह पंचमुंडी आसन है । इन आसनों की विशेषता यह होती है कि यह केवल समर्थ साधकों को ही अपने ऊपर बैठने देते हैं । कोई सामान्य व्यक्ति इसपर बैठ जाए तो यह मुंड उसे उठाकर फेंक देते हैं । इन आसनों पर बैठकर साधना करने का फल ठीक वैसा ही होता है जैसे शवासन पर बैठकर साधना करने का ।

इतना कहकर उन्होंने मेरी तरफ देखा । जैसे मेरे भावों को पढ़ रहे हों ……

प्रचंड नाथ - तुम्हारी योग्यता मैं समझ रहा हूं लेकिन तुम्हें मेरे इस आसन पर बैठकर यह सिद्ध करना होगा कि तुम उस तांत्रिक वस्तु के योग्य अधिकारी हो ।

मैंने पूछा - कितनी देर बैठना होगा बाबा जी, क्योंकि 11:30 बजे मुझे अपनी साधना करनी है ।

बाबाजी का उन्मुक्त अट्टहास झोपड़ी में गूंज उठा। जय भोले। हर हर महादेव। के उद्घोष के साथ उन्होंने कहा - तुझे बैठकर केवल माई का ध्यान लगाना है और अघोरेश्वर महादेव के मंत्र की एक माला फेरनी है। ज्यादा से ज्यादा इस में घंटा भर लगेगा।

उस समय लगभग 8 बज रहे थे, और मेरे पास पर्याप्त समय था, मैंने हामी भर दी। बाबा ने धूनी की आग को कुरेदा। धूनी की आग भभक कर जल उठी। बाबा ने मुंडासन और माई को प्रणाम किया और नीचे उतरने के बाद मुझे आसन पर बैठने का संकेत किया। मैंने उनके चरण स्पर्श कर आसन की ओर बढ़ा।

आसन के 2 फुट दूर पहुंचते ही मुझे अपने पांव में जलन सी महसूस हुई। यह सुरक्षा घेरा था। जिसे भेद कर मुझे अंदर जाना था। हर फील्ड में जिस प्रकार किसी भी मेडल के मिलने के लिए परीक्षा देनी होती है या किसी स्पर्धा में भाग लेकर प्रथम आना होता है ठीक वैसे ही अघोर साधनाओं में भी आगे की श्रेणी में पहुंचने के लिए आपको अपनी क्षमता दिखानी और साबित करनी पड़ती है।

अब समय था कि मैं सुरक्षा चक्र को भेद कर आगे बढ़ूं। मैंने प्रचंड नाथ जी की ओर देखकर आंखों ही आंखों में अनुमति मांगी उन्होंने मुस्कुरा कर अनुमति दी। मैंने शांति मंत्र का जाप करते हुए सुरक्षा घेरे को शांत किया और आगे बढ़ा। इस बार पांव में जलन महसूस नहीं हुई।

थोड़ा आगे बढ़ते ही मुझे जोर का धक्का लगा और मैं लड़खड़ा कर पीछे हट गया। मैं बड़ी सहज स्थिति में आगे बढ़ रहा था क्योंकि मुझे लगा कि जब बाबा मुझे बैठने के लिए कह रहे हैं तो मुझे सिर्फ जाकर बैठना है। लेकिन वास्तव में वैसा नहीं था। मुझे किसी वीडियो गेम की तरह कई लेवल की परीक्षा देकर आगे बढ़ना था। गेम के हर लेवल में अलग-अलग किस्म की रुकावटें पार करनी थी। धक्का लगते ही जहां मैं लड़खड़ा कर पीछे हटा। वही कमरा फिर बाबा प्रचंडनाथ के अट्टहास से गूंज उठा - अघोरानंद तू पंचमुंडी पीठ पर बैठने जा रहा है, इसे बच्चों का खेल मत समझ। सावधानी से आगे बढ़।

इतना सुनकर मेरे दिमाग की बत्तियां जली और मैं अपने अघोर रूप में आया। मैंने कपालिनी को याद किया। मंत्रों से अभिमंत्रित किया। अघोरेश्वर महादेव को प्रणाम किया और अपने गुरु मंत्र से स्वयं को रक्षित करके सर्वेश्वर मंत्र का जाप प्रारंभ करते हुए अपनी जेब से काली मिर्च के दाने निकाल कर आसन की तरफ उछाला।

यह मंत्र भगवान शिव के सबसे उग्र रूप का मंत्र है इसलिए लगभग 90% बंधन इस मंत्र के द्वारा टूट जाते हैं। मैंने जैसे ही काली मिर्च के दाने उछाले विस्फोट जैसी आवाज आई और ऐसा लगा जैसे कोई कमरे से निकलकर भागा।

अबकी बार बाबा प्रचंडनाथ का अट्टहास और जोरदार था साथ में उनकी तालियों की आवाज भी थी। बोले - शाबाश आगे बढ़।

मैंने फिर कदम आगे बढ़ाया। अब मैं पूरी तरह से सावधान था। हर सूक्ष्म से सूक्ष्म गतिविधि पर मेरी नजर थी। मैंने देखा उस मुंड पीठ के चारों तरफ चार शक्तियां जो डाकिनी तुल्य लग रही थी वह मौजूद थी। उनको संतुष्ट किए बिना उस पीठ पर बैठना नामुमकिन था। मैंने कपालिनी को फिर से याद किया और अपने झूले में से द्रव्य और खंड निकाले।

मैंने डाकिनी साधना कर रखी थी। डाकिनी का सूक्ष्म स्वरूप मेरे मानस पटल पर स्पष्ट हुआ और फिर सामने रखे हुए पीठ पर स्थापित एक शक्ति का स्वरूप मेरे सामने उपस्थित था। यह लगभग 3 फुट ऊंची गहरे काले रंग की शक्ति थी। जिसके चेहरे पर सिर्फ एक आंख थी और पूरा सिर गंजा था। एक आंख की वजह से चेहरा भयंकर भयानक लग रहा था।

डाकिनी को प्रसन्न करने के लिए हमेशा यह ध्यान रखना पड़ता है कि उसको भरपूर सम्मान देना चाहिए। किसी भी प्रकार का विकृत स्वरूप होने पर भी साधक के हृदय में घृणा जुगुप्सा जैसे भाव उत्पन्न नहीं होने चाहिए। इससे डाकिनी जल्दी प्रसन्न होती है। मैं अपनी डाकिनी साधना के दौरान ऐसे ऐसे स्वरूप देख चुका था। मैं समझ गया कि यह माई का मुझे बरगलाने का प्रयास है। मैंने मुस्कुराते हुए सहज स्वरूप में द्रव्य और खंड अर्पित किया जिसे ग्रहण करके वह शांत हो गई। इस प्रकार उस मुंड पीठ की एक रक्षक शक्ति को मैंने शांत कर लिया था।

अब तीन और बाकी थे...

पहली शक्ति के खंड ग्रहण करते ही फिर से बाबा प्रचंड नाथ का अट्टहास गुंजा। वह शायद इसलिए खुश हो रहे थे कि उन्होंने जिसे चुना है वह उनके परीक्षण पर खरा उतर रहा था। उनके अट्टहास से मेरा उत्साहवर्धन हो रहा था।

जीवन में जब भी आप कोई कार्य कर रहे हो और वह कार्य बेहद जटिल है तो किसी भी प्रकार का उत्साहवर्धन आपके लिए बहुत जरूरी होता है। इससे आप कठिनाइयों को आसानी से पार कर पाते हैं। यह अखंड सत्य है। मेरे साथ भी यही हो रहा था।

मुझे यह पता था कि अखंड नाथ जी मुझे वह तांत्रिक वस्तु देना चाहते हैं। उससे पहले वह अपना परीक्षण भी कर लेना चाहते हैं ताकि वे निश्चिंत हो सके की वह तांत्रिक वस्तु योग्य हाथों में जा रही है।

अब बची हुई तीन शक्तियों को साधना बाकी था। मैंने भगवती का ध्यान किया और उन शक्तियों का भी आह्वान किया। आसन के दूसरे कोने से धूंआ निकला और धुएँ का वह गुबार लगभग झोपड़ी की छत तक पहुंच गया। धीरे धीरे धुआँ कमरे में बढ़ता गया और सांस लेने में भी दिक्कत होने लगी। मेरे मानस पटल पर अचानक वह काले कुत्ते नजर

आए। मैंने संकेत समझा और काल भैरव मंत्र का जाप करते हुए काली मिर्च के दानों को पीठ की ओर उछाल दिया।

धुए का वह गुबार घटने लगा। उसके स्थान पर एक अत्यंत सुंदर लगभग 10 वर्ष की आयु की बालिका खड़ी थी। मैंने उन्हें श्रद्धा पूर्वक प्रणाम किया। बाबा प्रचंडनाथ का अट्टहास फिर गुंजा, लेकिन इस बार उस अट्टहास में एक स्त्री अट्टहास भी शामिल था। मैं देखने के लिए पलटा। झोपड़ी के दरवाजे पर हँसती हुई छाया खड़ी थी। वह अपनी कटाक्ष भरी मुस्कान के साथ मुझे देखते हुए झोपड़ी से बाहर निकल गई।

यह थी छाया से मेरी दूसरी मुलाकात……..

आसन की दो शक्तियां संतुष्ट हो चुकी थी। दो शक्तियां बाकी थी। भैरव मंत्र का उच्चारण करने के बाद दूसरी शक्ति लुप्त हो चुकी थी लेकिन धुएं का गुबार अभी भी हल्का-हल्का बाकी था। धीरे-धीरे वह भी छंटता चला गया। पूरा कमरा साफ हो चुका था।

मैने गुरुदेव को याद किया, उनके द्वारा दिए गए पशुपतास्त्र मंत्र का प्रयोग प्रारंभ किया। मंत्र लगभग डेढ पेज का है। मंत्र पूरा होते-होते तीसरी शक्ति प्रकट हो चुकी थी। यह शक्ति आदिवासी स्त्री के स्वरूप मे थी। ऊपर का हिस्सा नग्न था और नीचे के हिस्से में हरी पत्तियों से बनी हुई छोटा सा वस्त्र पहने हुए थी। यह लगभग चार फुट के आसपास ऊंची थी। इसकी देहराशि गहरी सांवली थी। चेहरा सुंदर था। शरीर की तुलना में वक्षस्थल विशाल थे। पृथुल नितंबों से युक्त उनका स्वरूप बेहद मनमोहक था। वह मेरे बेहद करीब आकर खड़े हो गई। उसकी देह तप रही थी जिसकी तपिश में भी महसूस कर सकता था। ऐसा लग रहा था जैसे मैं किसी भट्टी के पास खड़ा हूं। उसकी अंदर तक घुस जाने वाली तेज युक्त आंखें मेरी आंखों से टकरा रही थी कुछ क्षणों के लिए मैं अपने होश हवास भूल गया । ऐसा लग रहा था जैसे मैं उसके सम्मोहन में आ गया। उसकी आंखों से नीली नीली रश्मिया सी निकल रही थी । जो सीधे मेरी आंखों में प्रवेश करती हुई महसूस हो रही थी। थोड़ी देर के बाद में सहज हुआ । मैंने उनको द्रव्य भोग प्रस्तुत किया भोग स्वीकार कर वह भी विलुप्त हो गयी।

चौथी और अंतिम शक्ति बाकी थी जिसे संतुष्ट किए बिना मैं आसन पर नहीं बैठ सकता था । कपालिनी भी शांत थी। कोई ऐसी शक्ति थी जो शायद उसके अधिकार क्षेत्र से बाहर की थी। ऐसा सिर्फ महाविद्या के साथ ही हो सकता है। इसलिए मैंने भगवती महाकाली का ध्यान किया उनका बिंबात्मक स्वरुप मानस पटल पर स्पष्ट हुआ। मैंने महाकाल काली कवच का पाठ करके अपनी अनामिका उंगली भेद कर रक्त की बूंद समर्पित की। वह बूंद जमीन पर पडने से पहले लुप्त हो गई अर्थात मेरा अर्पण स्वीकार कर लिया गया था।

अब पूरा कमरा चमेली की खुशबू से महक उठा। मैं आगे बढ़ा और आसन को प्रणाम किया। आसन किसी वाइब्रेटर की तरह हिलने लगा । मैं उस पर चढ़कर बैठ गया । मेरे बैठने के बावजूद उसका हिलना नहीं रुका। वह दाएं बाएं हिल रहा था। जैसे मुझे नीचे धकेलना चाहता हो। मेरे मानस में ख्याल आया कि जिन लोगों की मुंडी आसन पर स्थापित है , उनको तो मैंने भोग समर्पण किया ही नहीं। यह ध्यान में आते ही मैंने अपने चारों दिशाओं में भोग द्रव्य समर्पित किया। साथ ही भोग द्रव्य सामने धूनी के पास समर्पित कर दिया। पांचवा भाग द्रव्य समर्पित होते ही आसन का हिलना बंद हो गया।

धूनी की आग भभक कर जलने लगी। लपटों की ऊंचाई लगभग 6 फुट थी। धूनी में मुश्किल से 4 लकड़ियां थी, लेकिन उसकी आग लगभग 5 फुट तक भभक रही थी। आग की लपटें ऊपर की तरफ भभकती रही। उसके बाद पूरी तरह से मुड़कर मुंडासन की और आ गई। ऐसा लग रहा था जैसे अग्नि भी कुछ चाह रही हो। मेरे पास जो भोग द्रव्य था, वह मैंने अग्नि को भी समर्पित कर दिया। अग्नि शांत हो गई। वह थम कर नीचे बैठ गई और लगभग 1 फुट की ऊंचाई तक आग की लपटें बनी रही।

मेरे मानस पटल पर भगवती महाकाली का बिंब था और मैंने उनका ध्यान उच्चरित करना प्रारंभ कर दिया। आग की लपटें फिर भभकने लगी। अबकी बार आग की लपटों ने न सिर्फ ऊपर की तरफ बढ़ना चालू किया बल्कि दाएं बाएं भी बढ़ने लगी।

उसकी आकृति लगभग 6 से 8 फीट तक ऊंची हो गई। झोपड़ी का ऊपर का हिस्सा प्लास्टिक का बना हुआ था। उसमें लगभग 4 फीट व्यास का छेद हो गया। आग की लपटें झोपड़ी की छत से भी ऊपर निकल रही थी। मेरी समझ में यह नहीं आ रहा था कि मैं क्या करूं ? तभी ! मेरे कानों में गुरुदेव का गंभीर स्वर गूंजा - कामिया सिंदूर।

अब मेरी समझ में आया कि दादा के द्वारा दिया हुआ कामिया सिंदूर का डब्बा मैंने अपनी जेब में क्यों डाल दिया था। मैंने फटाक से उसे निकाला। दाहिने हाथ में पलटा और भगवती को समर्पित कर दिया। अग्नि में से एक लपट जैसे हाथ की तरह मेरे सर पर आई और लुप्त हो गई। सामान्यतः आग की लपटों को गर्म होना चाहिए और परिस्थिति के हिसाब से मेरे सर के बालों को जल जाना चाहिए था। इसके उलट अग्नि की ज्वाला बेहद ठंडी थी। मुझे ऐसा एहसास हुआ जैसे किसी मां ने अपने शिशु के सर पर प्रेम से और वात्सल्य से हाथ फेरा हो।

मेरी आंखों से अपने आप आसुंओ की धारा बह निकली । मैं हिचक हिचक कर रोने लगा। वह लपट मेरे सर पर किसी हाथ की तरह काफी देर तक छुअन का एहसास देती रही। जैसे मां मुझे सांत्वना दे रही हो।

थोड़ी देर में मैं शांत हुआ। मेरे शांत होते ही वह ज्वाला भी अपनी वापस धूनी में समा गई। बाबा जी दंडवत मुद्रा में भूमि पर लेटे हुए थे।

अघोरेश्वर

मैंने भी उठकर धूनी को दंडवत प्रणाम किया और वापस जाकर मुंडासन पर बैठ गया । भगवान अघोरेश्वर महादेव का ध्यान करने के बाद मुझे एक माला मंत्र जाप करना था ।

ध्यान पूरा होते होते वातावरण में भारीपन आने लगा । अगर आप कभी श्मशान गए हो और किसी शव के साथ नहीं गए हो तो आप इस भारीपन को महसूस कर सकते हैं । जब हम किसी के शव के साथ जाते हैं तो हमारे मानस पटल पर गए हुए व्यक्ति का बिम्ब इतना हावी रहता है कि हम उस भारीपन को महसूस नहीं कर पाते । शाम के समय अगर आप मसान में जाएंगे तो आपको इस भारीपन का एहसास होगा ।

वहीं भारीपन अब कमरे में बढ़ता जा रहा था, चिता के जलने पर मांस और बाल जलने की बदबू कमरे में भरने लगी । अघोरेश्वर महादेव का मंत्र लगभग 4 लाइनों का है, इसलिए उसे पढ़ने में थोड़ा समय लगता है ।

ॐ नमः शिवाय महादेवाय नीलकंठाय आदि रुद्राय अघोरमंत्राय अघोर रुद्राय अघोर भद्राय सर्वभयहराय मम सर्वकार्यफल प्रदाय हन हनाय | ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ | टं टं टं टं टं | घ्रीं घ्रीं घ्रीं घ्रीं घ्रीं | हर हराय सर्व अघोररुपाय त्र्यम्बकाय विरुपाक्षाय ॐ हौं हः हीं हः ग्रं ग्रं ग्रं हां हीं हूं हैं हौं हः क्षां क्षीं क्षूं क्षैं क्षौं क्षः ॐ नमः शिवाय अघोरप्रलयप्रचंड रुद्राय अपरिमितवीरविक्रमाय अघोररुद्रमंत्राय सर्वग्रह उचचाटनाय सर्वजनवशीकरणाय सर्वतोमुख मां रक्ष रक्ष शीघ्रं हूं फट् स्वाहा ।

मंत्र जाप जारी था । कमरे का भारीपन बढ़ रहा था । लगभग आधी माला का जाप पूरा हो चुका था और तेज हवाएं चलने लगी । ऐसा लग रहा था जैसे झोपड़ी उड़ जाएगी । बांस के सहारे ताल पत्री को बाँधा गया था । वह सारे बास पीपल के पत्तों की तरह हिल रहे थे । ताल पत्री जिन रस्सियों के सहारे बंधी हुई थी वह रस्सियां एक-एक करके टूट रही थी ।

जब सारी रस्सियां टूट गई तो ताल पत्री हवा में तेजी से फड़फड़ाने लगी । आग की लपटें फिर तेज होने लगी । एक बार ऐसा लग रहा था जैसे वह पूरी झोपड़ी को लील जाएंगी ।

माला पूरी होते-होते धूनी में एक विस्फोट जैसा हुआ । उसमें डली हुई सारी लकड़ियां और अंगारे पूरी झोपड़ी में छितर गए । झोपड़ी के छप्पर ताल पत्री सब में आग लग गई । अब यह स्थिति थी कि मैं मुंडासन पर बैठा हुआ था और ऊपर में आसमान दिख रहा था । पूरी झोपड़ी गायब हो चुकी थी । सामने अग्नि अपनी प्रचंडता के साथ लगभग आठ दस फुट की ऊंचाई तक जल रही थी । आसपास की झोपड़ियों से लोग बाहर निकल के आ गये ।

मेरी माला में दो चार दाने बाकी थे । माला जैसे ही समाप्त हुई उस लपट ने मुंडासन का घेरा लगाया । ऐसा लगा जैसे मैं आग के समुद्र में गिर गया हूं । यूं कह लीजिए कि वह अग्नि का घेरा मेरे चारों तरफ एक दीवाल जैसा खड़ा था । आग का वह गोल घेरा जब मुझे पूरी तरह घेर चुका तब अग्नि की उस दीवाल में अघोरेश्वर महादेव का जाज्वल्यमान स्वरूप दिखने लगा । उनकी दिव्य और तेजस्वी आंखों में करुणा का सागर उमड़ रहा था ।

मैं अभिभूत था ।

निःशब्द था ।

इससे बड़ा सौभाग्य क्या होगा ?

अघोरेश्वर ! अघोर साधनाओं के अधिपति ! मेरे आराध्य ! साक्षात ! मैं कृत कृत्य हुआ ।

मेरा जीवन धन्य हुआ .....

उसके बाद सब कुछ शांत हो गया ।

उस अनिर्वचनीय सुख के सागर से बाहर निकलना बेहद दुखद था, मैं चाहता था कि वे क्षण कभी समाप्त न हो। अनंत काल तक उस दिव्य सानिध्य में आनंद की अनुभूति के दिव्य एहसास को लेकर उसी तरह रह जाऊं…….

समय थम जाए…….

लेकिन !

वे अद्भुत क्षण समाप्त हो चुके थे ……

वही श्मशान था……

उसमें मुंडा सन और उस पर बैठा हुआ मैं…..

मैं आसन से नीचे उतरा और बाबा ने मुझे गले लगा लिया ……...

बाबा की आंखें भी वात्सल्य प्रेम करुणा और शायद योग्य पात्र मिल जाने की प्रफुल्लता के कारण गीली थी ……

उन आंखों में ठीक वैसी ही करुणा !

वैसी ही दया !

वैसा ही वात्सल्य ! भरा हुआ था जैसे एक प्रिय शिशु को पहली बार चलता देखकर देखकर माता के आंखों में झलकता है। यह प्रकृति का शायद सबसे अद्भुत तोहफा है।

उन्होंने कहा - बेटा तू वास्तव में इसका योग्य अधिकारी है।

तुझ जैसे साधक को पाकर मैं धन्य हुआ।

यह तारापीठ धन्य हुआ।

तू हीरा है हीरा।

धन्य है वह गुरु और धन्य है वह माता जिसकी कोख से तुझ जैसा नररत्न पैदा हुआ। बाबा मुझे काफी देर तक गले से लगा कर रखे रहे।…….

फिर उन्होंने अपनी जेब से एक गुटिका निकाली और मुझे सौंप दी। गुटिका बेहद सामान्य सी नीले हरे रंग की कंकर जैसी थी। उसे देख कर मन में सबसे पहला ख्याल यही आया कि यह सामान्य सी दिखने वाली गोली क्या वास्तव में इतनी अद्भुत है जिसके लिए इतना परीक्षण हुआ ?

शायद उन्होंने मेरे मन के भावों को पढ़ लिया और फिर उनका अट्टहास गुंजा और बोले - यह मदन कामेश्वर गुटिका है। दिखने में सामान्य है बच्चा ! लेकिन कई जन्मों के पुण्य अर्जित होते हैं ! साधनाओं की चरम सीमा स्पर्श करनी पड़ती है ! तब जाकर यह गुटिका मिलती है ! बनर्जी तुझे इसके बारे में बाकी सारी बातें बताएगा। जा तुझे रात्रि साधना भी करनी है।

अब पाठक यह सोच रहे होंगे कि बाबा प्रचंडनाथ को बनर्जी के बारे में कैसे पता और उसे सुनकर मैं आश्चर्यचकित क्यों नहीं हुआ ?

अघोरियों के लिए किसी का नाम पता कर लेना उसका भूत वर्तमान देख लेना बहुत सामान्य सी बात है। डोम बाबा से लेकर जितने भी सिद्ध पुरुष मिले थे उनको अपने बारे में कुछ बताने की जरूरत नहीं पड़ती थी क्योंकि वह काल के गर्भ में छुपे हुए रहस्य को बेहद सहजता से भाप भी लेते थे ! समझ भी लेते थे ! और समझा भी लेते थे !

खैर.....

गुटिका को माथे और हृदय से लगाकर मैंने जेब में रखा और बाबा के चरणों में साष्टांग दंडवत प्रणाम करके अपनी कृतज्ञता व्यक्त की। उन्होंने हृदय से लगाकर आशीर्वाद दिया। कल्याण कामना की।

साधना का समय हो रहा था इसलिए मैंने अपने साधना स्थल की ओर प्रस्थान किया .....

आज की अद्भुत उपलब्धि के बाद सब कुछ प्राप्त हो गया ऐसा लग रहा था .....

लेकिन साधनाये जब प्रारंभ की जाए तो उन्हें पूरा करना एक साधक का कर्तव्य होता है ....

और गुरु आदेश जीवन की सबसे बड़ी सिद्धि.....

नागमणि वाले नाग

घड़ी देखा तो समय 11:20 हो रहा था। साधना स्थल पर पहुंचकर मैंने अपना आसन लगाया और मंत्र जाप फिर से प्रारंभ हो गया। लगभग आधे घंटे मंत्र जाप करते हुए गुजरा होगा तभी एक नाग का जोड़ा मेरे आगे से निकला।

लगभग दस बारह फीट की दूरी पर जाकर वह आलिंगन बद्ध होने लगे। जब सर्प सन्सर्ग करते हैं तो पूरी तरह से एक दूसरे से चोटी की तरह ट्विस्ट हो के लिपट जाते हैं और बीच-बीच में लगभग आधे से ज्यादा हिस्सा हवा में उठ जाता है। यह दुर्लभ दृश्य माना जाता है।

कुछ समय के बाद एक और जोड़ा वहां प्रकट हुआ। प्रकट इसलिए कह रहा हूं कि मैंने उन्हें आते हुए नहीं देखा। जोड़े में से एक ने सामने अपने मुंह से कुछ चमकदार सी चीज जमीन पर रखी। वह छोटी सी एल ई डी की लाइट जैसी चीज थी। जिसमें से हल्के दूधिया रंग का प्रकाश निकल रहा था। मेरी आंखें फटी की फटी रह गई। मैंने आज तक सिर्फ कहानियों में पढ़ा था कि नागमणि नाम की कोई चीज होती है। आज मैं उसे साक्षात देख रहा था। सर्प के नागमणि छोड़ते ही सांपों का दूसरा जोड़ा वहां से दूर चला गया।

अब नया आया हुआ दोनों सांपों का जोड़ा आलिंगन बद्ध होने लगा। सांपों का इस प्रकार का आयोजन बेहद तीव्र और आक्रामक किस्म का होता है। वे इस प्रकार आलिंगनब्द्ध होते होते लगभग 20 फुट की दूरी तक आगे चले गए। फिर उसी प्रकार से लिपट के लुढ़कते एक दूसरे के ऊपर चढ़ते वापस उस गुटिका के पास आ गए। वह मणि

बेहद मध्यम मध्यम रोशनी बिखेर रही थी। उसकी रोशनी को देखने से पूर्णिमा के चंद्रमा की रोशनी जैसा मृदुल सरल और सौम्य स्पर्श महसूस हो रहा था। इसकी व्याख्या करना असंभव है। मैं मंत्र जाप भूल गया और उस दिव्य नागमणि को देखकर स्तंभित सा बैठा रह गया। कुछ समय बाद मुझे होश आया मैंने फिर मंत्र जाप आरंभ किया।

सांपों की वह रासलीला चलती रही। काफी देर तक वे उसी मणि के आसपास रहे। धीरे-धीरे उनका दायरा बढ़ने लगा। उनका मूवमेंट द्वारिका नदी की ओर ज्यादा था। शायद उस तरफ की ठंडक उनको अपने संसर्ग की गर्मी को शांत करने वाली लगती हो.....

लगभग आधे घंटे के बाद दोनों सर्प उसी प्रकार द्वारिका नदी की ओर बढ़ते बढ़ते मेरी दृष्टि से ओझल हो गये .....

मुझे नागमणि का ख्याल आया। नागमणि मुझसे मुश्किल से 15 फुट की दूरी पर पड़ी हुई थी। एक क्षण के लिए मुझे ख्याल आया कि क्यों न उसे उठाकर रख लू। इतना तो मैं भी जानता था कि नागमणि अत्यंत दुर्लभ वस्तु है.....

मणि लेने के लिए मुझे आसन से उठना पड़ता। अगर आसन से उठता तो साधना खंडित होती।

मैं बड़े धर्म संकट में था। मन का लालच कह रहा था - नागमणि जैसी दिव्य वस्तु जीवन में दोबारा प्राप्त नहीं हो सकती। यह भगवती द्वारा उपलब्ध कराया गया अवसर है। उन्होंने तुझे नागमणि उपलब्ध कराई है। प्राप्त कर लो।

मन का दूसरा हिस्सा कह रहा था - भगवती ने तेरे सामने एक बड़ा लालच रखा है ताकि तू साधना छोड़कर मणि पकड़ने चला जाए और तेरी साधना खंडित हो जाए। मायाजाल में मत फस। साधना कर .....

मन मे ऊहापोह चल रहा था लेकिन अंततः मैंने निर्णय लिया की गुरुदेव ने मुझे मां तारा साधना करने के लिए भेजा है ना कि नागमणि हासिल करने के लिए। यह विचार आते ही मैंने अपने आसन से ना उठाने का निर्णय लिया। यह निर्णय कठिन था। मगर ठीक था.....

तभी मैंने देखा ....

गोपाल दास झाड़ियों के बीच से निकल रहा था। शायद वह किसी वजह से उठा होगा और उसे नागमणि दिखाई दे गई होगी। सांपों के दूर जाने की प्रतीक्षा में झाड़ियों में छुपा हुआ था। जैसे ही वे नजरों से ओझल हुए कुछ क्षण की प्रतीक्षा के बाद गोपाल दास नागमणि की ओर तेजी से लपका। जैसे ही वह नागमणि उठाने के लिए झुका, ऐसा लगा जैसे किसी ने उसके सीने पर जोरदार प्रहार किया हो वह लगभग 4 फुट उछलकर 15 फुट दूर जा गिरा। मिट्टी गीली थी। इसलिए शायद उसे ज्यादा चोट नहीं लगी। वह धूल झाड़ता हुआ कुछ ही क्षणों में उठ खड़ा हुआ। उठने के बाद कुछ देर सोचता रहा कि क्या हुआ ?

उसे कुछ समझ में नहीं आया तो फिर से वह नागमणि के पास पहुंचा। तभी वह सर्पों का जोड़ा दूर में दिखाई देने लगा। उनकी दूरी लगभग 25 से 30 फ़ीट रही होगी। जैसे गोपालदास मणि के पास पहुंचा न जाने कहां से एक हरा सांप उड़ता हुआ आया। वह मुश्किल से डेढ़ या दो फीट का रहा होगा। उसकी मोटाई लगभग क्रिकेट के स्टंप जैसी होगी। उड़ते हुए सांप ने गोपाल दास के गले पर प्रहार किया। वह जिस तेजी से उड़ता हुआ था आया था उसी तेजी से उड़ता हुआ गायब हो गया। गोपाल दास भूमि पर बेहोश पड़ा हुआ था। गले से खून बह रहा था। उसका शरीर नीला पड़ता जा रहा था। मेरी तीन माला बची हुई थी …..

अब मैं और संशय की स्थिति में आ गया। अगर गोपाल दास की मदद करने जाऊं तो भी साधना खँडित होती है और ना जाऊं तो ऐसा लगता है कि मैंने एक व्यक्ति को मरने के लिए छोड़ दिया …….

फिर मन में यह विचार आया कि - कहीं यह महामाया का कोई परीक्षण तो नहीं है। अंत में मैंने निर्णय किया कि जब इतना सब हो चुका है तो तीन मालाएं भी पूरी करके ही उठूंगा …..

छाया का गीत

मैंने तीन माला पूर्ण की तीसरी माला पूरी होते-होते सर्प का वह जोड़ा नागमणि के पास फिर से उपस्थित हुआ। नागमणि को उसने पुनः निगल लिया और वहां से चले गए …

गोपाल दास का नीला शरीर पड़ा हुआ था। मेरी माला पूर्ण हुई। मैंने आंख बंद करके भगवती तारा का ध्यान किया, गुरुदेव को प्रणाम किया आसन को प्रणाम किया। अपने माथे को भूमि पर स्पर्श कराकर कान पकड़ते हुए सभी त्रुटियों के लिए क्षमा मांगी। उसके बाद जैसे ही सर उठाकर देखा। सामने गोपाल दास का शरीर गायब था। वहां दूर-दूर तक उसका कोई निशान नहीं दिख रहा था …...

मतलब ! वह माया थी !

इतना हो जाने के बाद मैंने भी अपना सामान समेटा और अपने कमरे की ओर जाने के लिए आगे बढ़ा। जब मैं चिता भूमि के पास से आ रहा था तभी मुझे एक महिला के गाने की आवाज सुनाई दी। बेहद मधुर कंठ में वह बंगाली में कुछ गा रही थी। उसका गायन बेहद मीठा था। कोयल जैसी उसकी आवाज थी …..

मैं ठिठक कर रह गया !

मेरे कदम चिता भूमि की ओर बढ़ गए। जिस चिता पर मैंने शव को जलते हुए देखा था। जिसका वर्णन मैंने पहले खंड में किया था उसी चिता के ऊपर एक युवती खड़ी हुई थी ……

उसका एक हाथ कमर पर था ……

और दूसरा हाथ हवा में उठा हुआ था……

वह आसमान की ओर देखते हुए मधुर स्वर में कुछ गा रही थी…….

रात का समय था लगभग 2 बज रहे थे। इतनी रात में एक युवती श्मशान में ! वह भी चिता के ऊपर खड़े होकर गाना गा रही है ! यह मेरे लिए दुनिया के सातवे आश्चर्य से कम नहीं था। क्योंकि यह अनुभव मुझे सामान्य अवस्था में हो रहा था।

साधना काल में अजीब अजीब दृश्य देखना पड़ता था, जिसकी वजह से वहां किसी भी चीज के लिए मैं तैयार रहता था। लेकिन सामान्य जीवन में इस प्रकार की घटना अद्भुत और अविश्वसनीय थी।

मैंने और करीब जाकर देखा…….

यह तो वही सांवली युवती थी जिससे मैं एक बार रास्ते मे और एक बार बाबा प्रचंडनाथ की झोपड़ी में टकरा चुका था।

उसका गाना चलता रहा मैं भी वहीं खड़ा खड़ा सुनता रहा …..

पूरा श्मशान सो रहा था…….

कुत्ते भी सो चुके थे …….

इसलिए हवा से पत्तों की सरसराहट के अलावा कोई और आवाज नहीं आ रही थी ……

गाना पूरा होते ही वह वही पालथी मारकर बैठ गई। उसकी पीठ मेरी तरफ थी। इसलिए शायद उसे मेरे होने का आभास नहीं हुआ। जो भी हो मैं वहीं खड़ा रहा। उसने पालथी मारकर बैठने के बाद कुछ मुद्राएं दिखाईं इनमें से ढेर सारी ऐसी मुद्राएं जी जो केवल अघोरी की दिखाते हैं या यूं कहें कि केवल वाममार्गी साधना में ही प्रयुक्त होती है इससे मुझे यह तो समझ में आ गया कि यह युवती तंत्र साधिका है।

मुद्राएं दिखाने के बाद उसने हल्की आवाज में कुछ मंत्र जाप प्रारंभ किया। मैं उससे करीब 15 फुट की दूरी पर था इसलिए आवाज स्पष्ट नहीं थी कि वह किस विद्या का मंत्र जाप कर रही है लेकिन उसकी बैठने की मुद्रा और भाव यह बता रहे थे कि वह मंत्र जाप में लगी है लगभग 15 मिनट तक उसका मंत्र जाप चलता रहा।

उसका आभामंडल काफी स्पष्ट था। आभामंडल वह चीज होती है जो भगवान के फोटो में उनके सर के पीछे प्रकाश जैसी दिखाई देती है। यह हर आदमी में पाई जाती है। यह **आभामंडल** व्यक्ति के व्यक्तित्व की पहचान बताता है।

इसे अंग्रेजी में **ऑरा** भी कहते हैं। पश्चिम में इसपर काफी रिसर्च हुई है। वहां इसे विकसित करने के लिए विभिन्न प्रक्रियाओं का भी इस्तेमाल तथा चर्चा जारी है। आभा

मंडल के द्वारा व्यक्ति के स्वस्थ होने, बीमार होने यहां तक कि उसकी संभावित मृत्यु तक की पहचान की जा सकती है। इसके लिए अनुभव और साधना दोनों जरूरी है।

जो साधक होता है उसको आभामंडल दिखता है। चाहे वह सामान्य व्यक्ति का हो या किसी साधक का। उसी आभा मंडल के द्वारा वह पहचान पाता है कि सामने वाला व्यक्ति कितने उच्च स्तर का साधक है। खैर...

उस युवती के आभामंडल में साधनात्मक तेज स्पष्ट दिखाई दे रहा था। जैसे-जैसे उसका मंत्र जाप बढा, उसका आभामंडल हल्के नीले रंग का हुआ और धीरे-धीरे गहरे नीले रंग का होने लगा। ऐसा लग रहा था जैसे वह नीले रंग की रोशनी में नहा रही हो .....

कुछ देर के बाद उसके सामने एक धुंधली सी आकृति उभरने लगी। ऐसा लग रहा था जैसे धूंआ कोई आकार ले रहा हो। उस आकृति का स्वरूप गणेश भगवान के जैसा था , लेकिन रंग एकदम काला था। जैसे महाकाली गणेश भगवान में परिवर्तित हो गई हो। गहरा काला रँग, 15 फीट का विशाल शरीर, बड़े-बड़े कान, बड़ी सी सूंड और लाल-लाल आंखें। सफ़ेद रंग के 4 -4 फूट के दो लंबे लंबे मुड़े हुए दाँत | कुल मिलकर भयानक आकृति थी ..... बाद मे बनर्जी दादा ने बताया कि वह भगवान गणपती का तांत्रिक स्वरूप था जिसे उच्छिष्ट गणपति कहा जाता है ....

उस भयानक आकृति को मैं स्तब्ध खड़ा देखता रह गया | गणों के अधिपति महागणपति अपने तांत्रिक स्वरूप में उस युवती के सामने खड़े थे और वह उनके चरणों में झुकी हुई थी | मुश्किल से 5 या 10 सेकंड तक यह दृश्य रहा | उसके बाद प्रभु विलुप्त हो गए |

उसकी आभामंडल का नीलापन और गहरा गया था | कुछ क्षणों तक यही स्थिति रही | उसके बाद उसका आभामंडल वापस सामान्य हो गया | उसके बाद उस युवती ने हाथ जोड़कर प्रणाम किया। प्रणाम करने के बाद वह खड़ी हुई और चिता की भस्म को अपने माथे पर लगाया और प्रणाम करने के बाद वह खड़ी हुई | वह पलट कर मेरी तरफ मुड़ी। जैसे वह मेरी तरफ मुड़ी उसकी नजरें मुझसे टकराई .....

अपनी आदत के अनुसार वह रहस्यमय ढंग से मुस्कुराई .....

यह हमारी तीसरी मुलाकात थी .....

इस बार मैं उसके बारे में जानना चाहता था कि वह है कौन ?

और बार-बार मुझसे क्यों टकराती है ?

जैसा कि मैंने आपको बताया था। उस चिता में जमीन से लगभग 8-10 फुट ऊंचाई तक कोयले और लकड़ी का ढेर था। उसके ऊपर चिता जलाई जाती थी और उसी ऊंचाई पर वह युवती खड़ी थी। वह दौड़ कर नीचे उतरी और मेरे बगल से होकर जाने लगी। इस बार मैं छोड़ने के मूड में नहीं था। मैंने उसकी कलाई पकड़ ली। कुछ देर उसने कलाई

छुड़ाने का उपक्रम किया , लेकिन जब नहीं छुड़ा पाई तो शांत होकर खड़े हो गई । मैंने भी उसकी कलाई छोड़ दी ।

मैंने पूछा - तुम कौन हो ?

उसने सीधा जवाब दिया - छाया ।

अब वो एक सीधी-सादी सामान्य युवती लग रही थी । उसके चेहरे की मासूमियत को देख कर कोई यह नहीं बोल सकता था कि, यही अभी कुछ देर पहले चिता के ऊपर खड़े होकर गाना गा रही थी । मैंने अपने जीवन में एक से एक महिला साधिकाओं को देखा है | उनमें से कई देखने पर ऐसे लगती हैं जैसे सबसे सरल और आसानी से बेवकूफ बनाए जाने लायक महिला है, जिसे दुनियादारी से लेकर आध्यात्मिकता तक का कोई ज्ञान नहीं है | लेकिन जब वे अपनी औकात पर आ जाए तो उनकी सिद्धियों के सामने बड़े-बड़े तांत्रिकों को उनके चरणों में साष्टांग दंडवत होते हुए देखा है |

ऐसे ऐसे भ्रष्ट महिला तांत्रिकों को भी देखा है, जो जानती तो कुछ नहीं है, लेकिन हाव भाव, भाव भंगिमा और वेशभूषा के दम पर अच्छे-अच्छे को बेवकूफ बनाकर निकल जाती है |

यह युवति पहली श्रेणी की साधिका थी जो साधनात्मक रूप से बेहद उच्च कोटि पर होने के बावजूद अपने आप को सहज और सरल बनाए रखने में सक्षम थी | उनकी इच्छा के बिना आप उनके ज्ञान या सिद्धियों की कोई थाह नहीं पा सकते | यह तो मेरा सौभाग्य था कि उसके साधना काल में मुझे उस के दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ और साथ ही गणों के अधिपति विघ्नहर्ता भगवान महागणपति का दिव्य स्वरुप भी देखने को मिला | ऐसे साधक दुर्लभ होते हैं और इन को पहचानना, इनके ज्ञान की गहराई मापना लगभग असंभव होता है | खैर.....

मैंने पूछा - छाया, तुम मुझे बार-बार क्यों दिख रही हो ? मैं यह जानना चाहता हूं ।

वो खिलखिला कर हंसी और श्मशान के दूसरे कोने की ओर दौड़ पड़ी । मैं भी पीछे दौड़ा । आज मैं जान लेना चाहता था कि वह है कौन ? लगभग सौ कदम दौड़ने के बाद एक झुरमुट के पीछे जाकर वहां बैठ गई । मैं भी वहां पहुंचा और उसके पास जाकर बैठ गया ।

उसने अपनी आंखें उठाकर मुझे देखा । उसकी आंखों में गजब का तेज था । ऐसा लग रहा था जैसे आंखों से रश्मियाँ सी निकल रही हों ।

वह पालथी मारकर बैठ गई । मैं भी उसके सामने पालथी मार कर बैठ गया ।

मैंने फिर अपना सवाल दोहराया - तुम मुझे बार-बार क्यों दिख रही हो ।

उसने मेरे सवाल को अनसुना करते हुए पूछा - तुम कौन हो ?

मैंने कहा- अघोरानंद ।

उसका अगला प्रश्न - यहां कैसे ?

मैंने कहा - तारा माई की साधना करने आया हूं |

छाया - साधना पूरी हो गई ?

मैंने कहा - नहीं अभी 4 ही दिन हुए हैं 4 दिन बाकी है |

वह फिर खिलखिला कर हंस पड़ी और बोली - उसके बाद ?

मुझे समझ में नहीं आया कि क्या जवाब दूं, क्योंकि मुझे भी नहीं पता था उसके बाद क्या करूंगा | आने का रिजर्वेशन तो कराया था लेकिन वापसी तय ना होने के कारण 15 दिन बाद का रिजर्वेशन कराया था | यहाँ पर शुरू के 8 दिन की साधना करनी थी उसके बाद जो 7 दिन बचने थे उसमे क्या करूंगा ? यह कुछ निश्चित नहीं था | इसलिए मैं मौन रहा |

वह फिर खिलखिला कर हंस पड़ी बोली- अपना पता नहीं ! दूसरों की खोजबीन करने चला है !

मैं अपने आपको बेहद शर्मिंदा महसूस कर रहा था | वह जो कह रही थी वह वास्तविकता थी | मैं अपने बारे में नहीं जानता था कि मैं आगे क्या करने वाला हूँ ? और उससे पता करने की कोशिश कर रहा था कि वह बार-बार क्यों दिख जाती है | मुझे लगा यह मैंने गलत किया | भगवती की इच्छा पर मुझे उसे छोड़ देना चाहिए था | इस तरह उसे रोक कर पूछताछ करना शायद उचित नहीं था |

गहरी आत्मग्लानि के साथ मैं जाने के लिए उठा ..... वह भी साथ में उठी.....

तभी ! उसकी नजर मेरे गले पर पड़ी ! मेरे गले में रुद्राक्ष के छोटे दानों की एक माला थी उस माला में मेरे गुरु के द्वारा दिए गए रुद्राक्ष थे ! वह माला लगभग 10-11 सालों से मेरे पास थी | उसके साथ इतना लगाव था कि मुझे वह अपने शरीर का एक हिस्सा जैसे लगती थी | उसने वह रुद्राक्ष की माला पकड़ी ! मेरी ओर गौर से देखा | उसके सुमेरु में गौरी शंकर रुद्राक्ष लगा हुआ था | उसने उसे बड़े ध्यान से देखा |

उसे पकड़े पकड़े छाया ने मुझसे कहा - यह माला बड़ी सुंदर है ! इसको मुझे दे दे |

मेरे लिए धर्म संकट की स्थिति थी | भगवती तारा का दिव्य पीठ और उसमें उसका स्वरूप यह छाया, मुझसे रुद्राक्ष की माला मांग रही थी | यह वह रुद्राक्ष की माला थी जो मेरे गुरु ने मुझे दी थी, इसलिए मैं उसे देना नहीं चाहता था | मैं सोच में डूबा हुआ और निशब्द रहा |

मुझे देख कर वो फिर खिलखिला कर हंस पड़ी - गुरु ने दिया है ! इसलिए संभाल कर रखता है ! ठीक है ! रख ले....

मैंने सोचा जान बची | उस रुद्राक्ष की माला को मैं दुर्लभ तो नहीं कहूंगा क्योंकि उसके दाने सामान्य दाने थे लेकिन गुरु से मिलने की वजह से मेरे लिए वह अनमोल थे और मैं उसे देना नहीं चाहता था |

उसने कहा - तेरी आंखें बड़ी सुंदर है ! मुझे दे दे ! और फिर खिलखिला कर हंस पड़ी .....

जब कोई अनजान महिला ऐसा करें | वह भी रात के 2 बजे तो आपकी पूरी बहादुरी की हवा निकल जाती है | मेरी भी निकल चुकी थी |

मेरी दयनीय दशा देखकर शायद वह समझ गई ! इसलिए वह थोड़ी गंभीर हुई |

उसने कहा - सब कुछ तो मिल गया तुझे अब और क्या चाहता है ?

मैंने पूरी विनम्रता से पूछा कि - आप बार-बार मिल रही हो | इसमें जो रहस्य है | वह मैं समझ नहीं पा रहा हूँ |

वह फिर खिलखिला कर हंस दी और और काफी देर तक हसती रही | ऐसा लग रहा था जैसे उसकी हंसी थम ही नहीं रही हो |

जब वह काफी देर हंस ली तो बोली - बनर्जी दादा की किताब को भूल गया क्या तू …

और वहां से नौ दो ग्यारह हो गई ...

दो सेकंड में उसका वहां कोई अता पता ही नहीं था .....

मैं उसकी कही गई बात का मतलब समझ रहा था तब तक वह लापता हो चुकी थी.....

बनर्जी दादा के द्वारा दी गई किताब थी महा श्यामा साधना और छाया के कहने का मतलब शायद यह था कि आने वाले समय में उसी साधना से संबंधित कुछ बात बनने वाली है.....

इन्हीं विचारों में जूझता हुआ किसी निष्कर्ष पर पहुंचने की कोशिश करता हुआ मैं कमरे पर पहुंच गया और बिस्तर पर लेटते ही फिर नींद के आगोश में चला गया…….

तारा पीठ पर 4 दिन हो चुके थे.....

इन 4 दिनों में एक युग का अनुभव प्राप्त हो चुका था |

अगर आप किसी शक्ति पीठ पर साधना करते हैं तो उस जगह की विशिष्टता कहे या वहां का साधनात्मक प्रभाव या अधिष्ठात्री शक्ति का प्रभाव आपको साधना अनुभव बहुत प्रबल होते हैं | इस प्रकार के अनुभव साधक को उत्साहित करते हैं और वह ज्यादा लगन से साधना करता है | उसका विश्वास भी प्रबल होता है | शायद इसीलिए विशिष्ट साधनाएं शक्तिपीठ पर करने का तांत्रिक प्रावधान रहता है....

तारापीठ का पाँचवाँ दिन

रात को सोते सोते लगभग 4 बज चुके थे इसलिए सुबह मेरी नींद नहीं खुली | दरवाजा खटखटाने से मेरी नींद खुली | मैंने दरवाजा खोला | सामने बनर्जी दादा का नौकर बापी खड़ा था | बापी लगभग 20 साल का हट्टा कट्टा युवक था | शक्ल सूरत से वह नेपाली लगता था | उसने बताया दादा चाय पीने बुला रहे हैं | मैंने कहां हाथ मुंह धोकर

आता हूं | बापी चला गया | मुझे अभी भी नींद आ रही थी और चाय पीने की इच्छा तो बिल्कुल नहीं थी | मैं चाहता था एक-दो घंटे और सो जाऊँ | मैंने दरवाजे की सांकल लगाई और फिर बिस्तर पर लुढ़क गया |

फिर नींद आ गई, शायद दादा भी समझ गए होंगे इसलिए उन्होंने दोबारा मुझे नहीं बुलाया | लगभग दोपहर के 1 बजे ऐसा लगा जैसे किसी ने मुझे पकड़ कर झकझोर दिया | बंद कमरे में कौन झकझोर देगा ऐसा सोच कर फिर मैंने आंखें बंद कर ली | फिर किसी ने मुझे जोर से झकझोरा । साथ में चूड़ियों की खनकने की आवाज भी आ रही थी । अब सकपकाने की बारी मेरी थी ।

मैं हड़बड़ा कर उठ बैठा । मेरी नींद लापता हो चुकी थी । मैंने चारों तरफ देखा लेकिन कोई नहीं था । कमरे में अजीब सी सुगंध फैली हुई थी । जो अष्टगंध जैसी लग रही थी और बहुत ही शांति प्रदान करने वाली लग रही थी | लेकिन कोई दिखाई नहीं दे रहा था । यह तो आभास हो गया था कि कोई ना कोई शक्ति उस कमरे में मौजूद थी | मैंने सोचा जब उसकी इच्छा होगी, वह सामने आएगी |

मैं अपने काम में लग गया | अब नींद पूरी हो चुकी थी, इसलिए मैंने नहा धोकर फ्रेश होने का निर्णय लिया | नहा धोकर मैंने गुरु ध्यान किया और दैनिक पूजन संपन्न किया | गुरु मंत्र की माला जपी और कमरा खोल कर बाहर निकला ।

बापी मुझे देख कर मुस्कुराया और बोला - खाना निकाल दूँ ? मैंने सहमति में सिर हिलाया | दादा कहीं दिखाई नहीं दे रहे थे | मैंने इधर उधर देखा तो बापी बोला - दादा अभी घर पर नहीं है, कामाख्या गए हैं | मैं चुपचाप भोजन करने लगा |

खाना खाकर मैं वापस कमरे में आ गया और बिस्तर पर लेट गया | मुझे पता भी नहीं चला और मैं फिर वापस नींद मे चला गया | जब नींद खुली तो रात के 8 बज चुके थे | मैंने नींद भगाने के लिए फिर से स्नान किया | मेरी सारी बची खुची नींद पूरी हो चुकी थी और मैं वापस रिचार्ज हो गया था |

रात के लगभग 10 बजे मै श्मशान की ओर चल पड़ा | तारापीठ मंदिर के पास गोपालदास खड़ा हुआ था | हम दोनों एक दूसरे को देख कर मुस्कुराए |

मैंने पूछा - कैसे हो ?

वह बोला - माता जी की कृपा से सब कुशल मंगल है | वहीं पर चाय की दुकान लगी हुई थी | मैंने दो चाय मंगाई | गोपाल और मैंने चाय पी | मुझे लगा कि अगर कल वास्तव में यह नागमणि उठाने आया होगा तो कुछ ना कुछ बात जरूर करेगा, लेकिन उसने ऐसी कोई बात नहीं की |

फिर हम दोनों बाबा प्रचंडनाथ के डेरे की ओर चल पड़े | मेरे पास लगभग 1 घंटे का समय था | मैंने सोचा कि बाबा से भी भेंट करता चलूँ | बाबा की झोपड़ी रात को पूरी तरह से तहस-नहस हो चुकी थी |

गोपाल दास ने बताया कि आज दिन भर झोपड़ी के काम में लगा रहा | अब बाबा की झोपड़ी तैयार हो चुकी है | मैंने सोचा मैं भी चल कर देख लूँ क्योंकि उनकी झोपड़ी के नष्ट होने का प्रमुख कारण तो मैं ही था | मैंने सोचा कि अगर हो सकेगा तो कुछ अपनी तरफ से आर्थिक मदद कर पाऊंगा |

वहां पहुंचने पर देखा बाबा की झोपड़ी एकदम नई लग रही थी | बाकी सारी झोपड़ियों की तालपतरिया पुरानी हो चुकी थी | बाबा की झोपड़ी मे नई लगी थी इसलिए सुंदर दिख रही थी | मैं बाहर खड़ा रहा | गोपालदास अंदर गया |

किसी की झोपड़ी में या साधना स्थल में उसका शिष्य तो घुस सकता है लेकिन किसी अन्य साधक को मर्यादा का पालन करते हुए घुसना चाहिए, इसलिए मैं बाहर खड़ा रहा | गोपालदास अंदर गया और थोड़ी देर बाद बाहर आकर मुझे भी अंदर बुलाया | हम दोनों अंदर पहुंचे |

बाबा जी अपने मुंडासन पर विराजमान थे मुझे देख कर मुस्कुराए | मैंने उनको दंडवत प्रणाम किया और अपनी जेब से ₹ 2,000 निकालकर उनके सामने रख दिया । बाबा का अट्टहास फिर गुंजा बोले - पहले झोपड़ी जला दी अब मुआवजा देने आया है ?

मैं क्या बोलता ! सर झुका कर बैठा रहा | मैं दुखी था कि मेरे चक्कर में उनकी झोपड़ी तबाह हो चुकी थी और उनको फिर से बनाना पड़ा था | मुझे दुखी अवस्था में देखकर वह स्वयं आसन से उठ कर आए और सर पर हाथ फेर कर बोले - बेटा यह तो चलता रहता है | महामाया का परीक्षण है | यह पैसे तू वापस रख ले |

मैंने कहा - बाबा मैं जानता हूं कि आप समर्थ हैं, लेकिन फिर भी मेरी तरफ से एक तुच्छ भेंट समझकर इसे स्वीकार करेंगे तो मुझे अच्छा लगेगा |

फिर बाबा प्रचंड नाथ का अट्टहास गुंजा और उन्होंने गोपालदास को कहा - ले रख ले, यह नहीं मानेगा |

गोपालदास ने उसे उठाकर अपनी जेब में रख लिया | मुझे थोड़ा संतोष हुआ कि मेरे कारण हुए नुकसान की थोड़ी बहुत भरपाई कर पाया | बाबा जी ने गोपालदास को चाय लेकर आने के लिए भेज दिया |

गोपाल बाहर चला गया तो बाबा ने मुझे कहा - बेटा आने वाला समय तेरे लिए बहुत अच्छा है । तू दुर्लभ साधनाओं को भी प्राप्त कर सकेगा | इसलिए आलस्य मत करना | प्रमाद मत करना | अहंकार मत करना | और कभी अपनी विद्याओं का प्रदर्शन मत करना ।

उन्होंने कुछ मंत्र जाप किया और हवा में हाथ फैलाया | हाथ मे एक रुद्राक्ष का दाना आ गया | मैं आश्चर्यचकित था |

उन्होंने बताया - यह अष्ट सिद्धियों में से एक है | इसे शून्य सिद्धि कहते हैं | इसमें आप किसी भी पदार्थ को शून्य से प्राप्त कर सकते हैं |

यह मेरे लिए एक नई जानकारी थी | उन्होंने मुझे वह रुद्राक्ष दिया और कहा - यह एक 21 मुखी रुद्राक्ष है |

बाबा के आशीर्वाद को मैंने प्रणाम के साथ स्वीकार किया तब तक गोपालदास चाय लेकर आ चुका था | चाय की चुस्कीओं के साथ बाबा प्रचंड नाथ ने बहुत सारे साधनात्मक तथ्य बताएं जो आगे मेरी साधना में सहायक हुए |

नागमणि

रात के लगभग 11 बज चुके थे | उन्होंने मुझे जाने की अनुमति दी | मैं तारा मंदिर पहुंचा वहां बामा खेपा तथा माई को प्रणाम किया और वापस शमशान स्थल में अपनी साधना की जगह पर पहुंचा |

अपने आसन पर बैठकर मैंने मंत्र जाप चालू किया । 12:30 बजे के आसपास वह मणि वाले सांपों का जोड़ा फिर से प्रकट हुआ । दोनों साँप मुझसे मुश्किल से 4 फुट की दूरी पर आकर बैठ गए । दोनों ने फन काढ लिया और दोनों की नजरें मुझ पर टिकी हुई थी। मुझे लग रहा था कि अब आगे क्या होगा ?

दोनोँ उसी प्रकार फन काढ़े बैठे रहे । लगभग 10 मिनट तक आंखों से डराने के बाद बड़ा वाला सांप मेरी तरफ बढा । मुझसे लगभग 2 फुट की दूरी पर उसने अपनी मणि को निकाल दिया । अब 2 फुट की दूरी पर मणि पड़ी हुई थी और उनका युगल नृत्य प्रारंभ हो गया ।

इस बार खासियत यह थी कि वह मेरे आस-पास ही नृत्य कर रहे थे । लगभग 1 घंटे तक उसी प्रकार का आयोजन चलता रहा । फिर दोनों दूर होते होते मेरे नजरों से ओझल हो गए ।

मुझ से 2 फुट की दूरी पर नागमणि पड़ी हुई थी …..

वह चमक रही थी…..

उसका प्रकाश मुझे आकर्षित कर रहा था…..

बार-बार मुझे लग रहा था कि मैं उसे उठाकर रख लूँ । लेकिन आसन नहीं छोड़ना था । मेरा मंत्र जाप चलता रहा । उस रात और कुछ विशेष घटना नहीं हुई । नागमणि मेरे सामने पड़ी रही और मेरा मंत्र जाप चलता रहा । लगभग 2 बजे के आसपास मेरा मंत्र जाप पूर्ण हुआ ।

दोनों सांपों का कोई अता-पता नहीं था । दूर-दूर तक कोई नहीं दिख रहा था । मैंने जाप पूरा करने के बाद साधना स्थल को प्रणाम किया । नागमणि को भी प्रणाम किया । सारी सामग्री समेटकर थैली में डाली । साँप अभी भी नही दिखे ...

कुछ देर वहीं बैठा रहा कि वह सांप आएंगे और मणि को ले जाएंगे । आधे घंटे तक ऐसा कुछ भी नहीं हुआ । मन में विचार आया चलो इसको जरा स्पर्श कर लिया जाए । मैंने

उस मणि को छूकर देखा, वह बेहद ठंडी थी। ऐसा लग रहा था जैसे फ्रिज से निकाल कर बाहर रखी हुई किसी चीज को छू लिया हो।

मैंने इधर उधर देखा। कोई इंसान तो दिखाई नहीं दे रहा था | हां, कुछ दूरी पर 2 - 4 कुत्ते जरूर लेटे हुए थे। सांपों का भी कोई अता पता नहीं था। छूने के बाद मेरी इच्छा और बढी। मैंने उसे अपनी हथेली पर उठा लिया। मणि बेहद सुंदर थी उसे देखने पर ऐसा लगता था जैसे देखते रह जाओ।

उसे हाथ मे लेकर मैने आंख बंद की तो मेरा ध्यान लग गया। इसके बाद मुझे नीले रंग का प्रकाश दिखने लगा। वह एक प्रकाश का अनंत स्रोत लग रहा था। हर तरफ नीला प्रकाश फैला हुआ था। मैं उसके बीच यहां वहां घूम रहा था। एक अंतहीन यात्रा .....

फिर से किसी ने मुझे झकझोरा ! जब आंख खुली तो देखा 3 बज चुके थे। कुछ देर और मैं वहीं बैठा रहा। लेकिन साँप नहीं आए। फिर मैंने अपनी जेब से रुमाल निकाला। उस मणि को लपेटा और अपनी जेब में डाल दिया। पूजा सामग्री का थैला उठाया और सीधा तारा मंदिर में आ गया।

मंदिर में बाहर बैठकर मैंने थोड़ी देर भगवती का ध्यान किया | प्रणाम किया और अपने कमरे की ओर चल पड़ा .....

भगवती महामाया महातारा की कृपा से मेरे पास दो दुर्लभ वस्तुएं आ चुकी थी। एक बाबा के द्वारा मिली हुई मदन कामेश्वर गुटिका और दूसरी नागमणि। यह अद्भुत था ....

चार बजे के आसपास मै अपने कमरे पर पहुंचा। अंदर एक बड़ा रहस्यमय घटनाक्रम मेरा इंतजार कर रहा था। मैंने ताले में चाबी डाल ताला खोल दिया। जैसे ही बंद कमरे का दरवाजा खुला तो सामने का दृश्य भयंकर था। वे दोनों सांप मेरे बिस्तर पर बैठे हुए थे.....

मुझे लगा कि वे नागमणि वापस लेने के लिए आए हैं। मैंने जेब से नागमणि निकाली तथा जमीन पर रख दी। लेकिन वे अपनी जगह से नहीं हिले और बिस्तर पर ही बैठे रहे। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि मैं क्या करूं ? क्योंकि नागमणि के वास्तविक अधिकारी तो वही थे और मैंने वह नीचे रख दी थी। लेकिन वह दोनों बिस्तर पर ही फन काढ़े बैठे थे।

अब मैं क्या करूं यह मुझे समझ नहीं आ रहा था । 10 मिनट तक वही स्थिति रही उसके बाद मैंने सोचा अब अंदर घुस कर देखते हैं। जो होगा देखा जाएगा। मैं अंदर घुसा और दरवाजा बंद कर लिया। वे दोनों अभी भी अपनी जगह पर विराजमान थे। मैने मणि को उठाया और उनके पास बिस्तर पर रख दिया।

जैसे ही मैंने मणि को बिस्तर पर रखा , दोनों ने एक साथ फुकार मारी। मैं हड़बड़ा कर पीछे हट गया | दोनों गुस्से में थे। मुझे लगा मेरे मणि उठा कर लाने से दोनों गुस्सा है, मैं हाथ जोड़कर खड़ा हो गया। क्योंकि गलती तो मैंने कर दी थी। दोनों बिस्तर से नीचे उतरे

और मेरी तरफ बढ़े। मैं यह समझ चुका था कि यह सामान्य सर्प नहीं है। इसलिए वैसे ही हाथ जोड़कर खड़ा रहा। दोनों मेरे पास आए और फन फैलाकर खड़े हो गए।

मैं सोच रहा था इसके बाद क्या होगा ?

और वह दोनों पता नहीं क्या करें।

यह स्थिति लगभग 10 मिनट रही होगी। मेरे प्राण मुँह की ओर आ रहे थे। दोनों मेरी तरफ आगे बढ़े और दोनों ने मेरे एक एक पांव पर डस लिया। मुझे बेहोशी सी आने लगी और मैं वहीं पर गिर पड़ा। उसके बाद मुझे पता नहीं चला कि क्या हुआ ?

लगभग 9 बजे के आसपास बापी ने दरवाजा खटखटाया। दरवाजा खटखटाने की आवाज से मेरी बेहोशी टूटी। मुझे ऐसा लग रहा था कि सांपों के काटने से शायद में मर गया। लेकिन दरवाजे की आवाज सुनाई दे रही थी। उससे मुझे पता चला कि मैं जिंदा हूं। बापी की आवाज मुझे सुनाई दे रही थी , मैंने आवाज लगाने की बहुत कोशिश की लेकिन मेरे मुंह से आवाज नहीं निकल रही थी। मैं जमीन पर ही पड़ा हुआ था। मुझसे उठा नहीं जा रहा था। काफी देर खटखटाने के बाद बापी चला गया। उसको लगा शायद मैं सो रहा हूं।

दस बजे के आसपास मुझे बनर्जी दादा की आवाज आई। बनर्जी दादा कामाख्या से वापस लौट चुके थे। उनकी आवाज सुनकर मुझे अच्छा लगा, उम्मीद जगी कि वह जरूर मेरी अवस्था को भाँप लेंगे, और वैसा ही हुआ। बनर्जी दादा ने आते ही दरवाजे को लात मारी। सांकल उखड़ गई और दरवाजा खुल गया। मैं जमीन पर पड़ा हुआ था। दादा के पीछे बापी भी खड़ा था। दोनों ने मुझे उठा कर बाहर खुली हवा में चारपाई पर डाल दिया। मैं सोच रहा था कि सांप के काटने से मेरे पूरे शरीर में जहर फैल गया होगा। मैंने अपना हाथ उठाकर देखा तो वह नीला नहीं था। बाहर निकालने के बाद बनर्जी दादा ने मुझे पानी पिलाया और मैं उठ कर बैठ गया। मैंने अपने शरीर को देखा तो सब ठीक था , फिर मुझे ध्यान आया कि उन दोनों सांपों ने मेरे पांव पर काटा था। मैंने अपने पांव की तरफ देखा तो वह भी सही सलामत थे। कहीं पर कोई निशान नहीं दिखाई दे रहा था। मतलब मैं डर के मारे बेहोश हो गया था और उसी की वजह से कुछ नही बोल पा रहा था । इसका मतलब वह सब कुछ माया थी और वास्तव में वैसा कुछ भी नहीं हुआ था।

मुझे ध्यान आया कि फिर अगर ऐसा है तो नागमणि को बिस्तर पर होना चाहिए। मैं चारपाई से उतरकर कमरे की ओर भागा। कमरे में जाकर मैंने बिस्तर पर देखा तो रुमाल में लिपटी हुई नागमणि वहीं पर पड़ी हुई थी। मुझे इस तरह भागता देखकर मेरे पीछे-पीछे बनर्जी दादा भी अंदर आए। मेरे हाथ में नागमणि देखकर उनके आश्चर्य का ठिकाना न रहा ।

उन्होंने मेरी तरफ आश्चर्य भरी निगाहों से देखते हुए पूछा - यह नागमणि तुझे कैसे मिली।

उनको विश्वास नहीं हो रहा था कि मुझे नागमणि मिल गई है।

वह बोले - अघोरानंद तू वास्तव में अद्भुत साधक है। इस नागमणि के लिए लोग अपना पूरा जीवन गला देते हैं तब भी उनको नागमणि नहीं मिलती। तुझे सिर्फ 4 दिन की साधना में नागमणि भी मिल गई। गुरुदेव की तुझ पर अनंत कृपा है और महामाया का आशीर्वाद भी।

मैं समझ नहीं पा रहा था कि मैं क्या कहूं। रात को जो हुआ था उसके बाद तो मुझे ऐसा लग रहा था कि वह सांप नागमणि वापस ले जाएंगे और उन दोनों के डसने के बाद मैं सीधा स्वर्गवासी हो जाऊंगा.....

लेकिन यहां तो पूरी कहानी ही पलटी हुई थी। मेरे शरीर पर चोट के कोई निशान नहीं थे न ही जहर चढ़ने का कोई लक्षण था। ना ही मेरा शरीर नीला पड़ा था। सबसे बड़ी बात नागमणि भी सुरक्षित थी। यह अविश्वसनीय और अद्भुत घटना थी। मैं इसके बारे में सोचता हुआ बिस्तर पर बैठ गया।

भूगर्भ सिद्धि

बनर्जी दादा ने कहा - तू नहा धो ले फिर बात करते हैं। और वह कमरे से बाहर चले गए। मैं ब्रश करके नित्य कर्मों से निवृत्त हुआ और नहाने चला गया। इन सब में मुझे लगभग आधा घंटा लगा होगा। 11 बजे के आसपास में फ्रेश होकर बाहर निकल आया। बापी तब तक नाश्ता लगा चुका था। बनर्जी दादा के साथ बैठकर मैंने नाश्ता किया और चाय की चुस्की लगाते हुए हम लोगों ने चर्चा प्रारंभ की।

मैंने उनको विस्तार से मसान घाट में घटी हुई घटना के बारे में बताया कि किस प्रकार से वे दोनों साँप मेरे सामने नागमणि छोड़कर गायब हो गए थे और काफी देर इंतजार करने के बाद में नागमणि लेकर घर आ गया था।

उन्होंने कहा - यह नागमणि तुझे भूगर्भ सिद्धि देगी।

मैंने पूछा- यह क्या होता है ?

उन्होंने बताया - अनंत काल से भूमि में कई लोगों ने अलग-अलग कालखंड में अपना खजाना छुपा कर रखा है। इसमें सोने चांदी के अलावा विभिन्न प्रकार के रत्न भी शामिल है। जिस व्यक्ति को भूगर्भ सिद्धि प्राप्त होती है वह पृथ्वी के नीचे स्थित चीजों को देखने की क्षमता से युक्त हो जाता है। इसलिए इन खजानों के बारे में भी उसे जानकारी होने लगती है। इन गड़े हुए खजाने का रक्षक या अधिपति सांपों को माना जाता है। अधिकांश खजानों के साथ उनकी रक्षा के लिए नाग शक्तियों को नियुक्त किया जाता है क्योंकि सांप

का जीवनकाल बहुत लंबा माना जाता है। यह सब शक्तियां उस खजाने की रक्षा करती हैं और उसके उपयुक्त वारिस के अलावा किसी को उसे हासिल करने से रोकती हैं।

मैंने पूछा - अगर किसी खजाने का वारिस नहीं हो या मर गया हो तो ऐसी स्थिति में उस खजाने का क्या होता है ?

बनर्जी दादा ने बताया - वारिस के मर जाने की स्थिति में भी नाग उस खजाने की रक्षा करते रहते हैं क्योंकि उनको संकल्प द्वारा उस खजाने के साथ मंत्रबद्ध कर दिया जाता है। यदि किसी व्यक्ति को वह खजाना निकालना होता है तो सबसे पहले उसे इन मंत्रबद्ध सर्पों के बंधन को तोड़ कर उन्हें प्रसन्न करना होता है। उनकी प्रसन्नता के लिए आवश्यक कर्मकांड संपन्न करने के बाद वे सर्प उस खजाने की रक्षा से अलग हो जाते हैं। तब जाकर उस खजाने को खोदकर बाहर निकाला जा सकता है। यदि इस प्रक्रिया का पालन न किया जाए तो वह खजाना प्राप्त करने वाला व्यक्ति उस खजाने का उपयोग नहीं कर पाता है। कई बार खजाना निकालने की प्रक्रिया के दौरान ही उसकी अज्ञात कारणों से , सर्प काटने से, किसी दुर्घटना से मृत्यु हो जाती है या उसका मानसिक संतुलन बिगड़ जाता है।

यह मेरे लिए अद्भुत और आश्चर्यजनक बातें थी। जमीन के अंदर खजाना गड़ा होना यह बात तो मैं समझता था लेकिन उस खजाने की रक्षा के लिए सर्पों को मंत्रबद्ध करके रखा जाता है और वे कई सालों तक उस खजाने की रक्षा करते हैं यह जानकर मैं आश्चर्यचकित रह गया।

बनर्जी दादा तंत्र साधनाओं के विषय में अनंत ज्ञान के भंडार थे। उनके पास से मुझे ऐसी ऐसी बातों का पता चला जो सुनने में अद्भुत और अविश्वसनीय ही लगती थी। कई बार मुझे भी उनके काल्पनिक होने का संदेह हो जाता था। खैर.....

उसके बाद मैंने बाबा प्रचंड नाथ के झोपड़ी में घटी हुई घटनाओं के बारे में भी बनर्जी दादा को बताया। बनर्जी दादा के चेहरे पर खुशी उल्लास और उत्साह के भाव लगातार आ रहे थे। यह बिल्कुल वैसा ही था जैसे एक छोटे भाई की सफलता की बात सुनकर बड़ा भाई प्रसन्न और आनँदित होता है। हम दोनों एक ही गुरु के शिष्य थे, इसलिए मेरी सफलता से शायद वे भी अपने आपको गौरवान्वित महसूस कर रहे थे।

पूरा घटनाक्रम सुनने के बाद उनके चेहरे पर उत्सुकता और आश्चर्य के भाव थे। उन्होंने मुझसे कहा - कहां है वह गुटिका ? मैं भी दर्शन तो कर लूँ।

मैं कमरे के अंदर गया। मेरे पीछे-पीछे बनर्जी दादा भी आये। मैंने अपने थैले में से मदन कामेश्वर गुटिका निकालकर दिखाई। वे उसे दाहिने हाथ में रखकर वही ध्यानस्थ हो गए। लगभग 15 मिनट तक ऐसे ही निश्चल भाव में बैठे रहे। मैं उनके आंख खुलने की प्रतीक्षा में उनके सामने बैठा रहा। लगभग 15 मिनट के बाद उनका ध्यान टूटा। गुटिका को

माथे तथा आंखों से लगाकर मुझे वापस दिया। मैंने भी उसे माथे से लगाकर वापस थैले में डाल दिया।

मैं बोला - मैंने इसके विषय में पूछा था लेकिन उन्होंने कहा कि सारी जानकारी आप देंगे। आपको बाबा प्रचंडनाथ कैसे जानते हैं। इस गुटीका के बारे में भी मुझे जानकारी दें।

बनर्जी दादा मुस्कुराए और बोले - मैंने और बाबा प्रचंडनाथ ने कामाख्या में कुछ साधनाएं एक साथ की थी इसलिए वह मुझे जानते हैं। हम लोगों ने वहां पर वाममार्गी साधनाएं संपन्न की थी। जिसमें उनके साथ काफी समय बिताने को मिला था। हम दोनों कामाख्या की पहाड़ियों में एक गुफा में लगभग डेढ़ साल साथ रहे थे। इसलिए उन्होंने ऐसा कहा होगा।

मैंने गुटिका के बारे में पूछा उन्होंने बताया - यह मदन कामेश्वर गुटिका है। इसे रति राज गुटिका भी कहते हैं। इसका प्रयोग विभिन्न वाममार्गी साधना में किया जाता है। यह गुटिका जिसके हाथ में होती है उसके अंदर पूर्ण पौरुष उत्पन्न हो जाता है। वह साक्षात कामदेव बन जाता है। उसकी शारीरिक व्याधियां समाप्त हो जाती है और वह पूर्ण स्वस्थ पुरुष बन जाता है। वह 40-50 वर्ष का होने पर भी उसके अंदर किसी युवा की तरह ऊर्जा होती है और काम क्षमता होती है। महा श्यामा साधना जैसी साधना में यह उसी काम शक्ति को नियंत्रित करने का काम भी करता है। इसके पास रहने से काम शक्ति नियंत्रण में रहती है, जो साधनात्मक विचलन का सबसे बड़ा कारण है। जिस साधक के पास यह गुटिका होती है, उसके पथभ्रष्ट होने की संभावना नहीं के बराबर होती है। यह गुटिका उसे आत्म नियंत्रित बनाने में मदद करती है। साथ ही प्रचंडता भी प्रदान करती है। तू भाग्यशाली है, और गुरुदेव की अनंत कृपा है, जिसकी वजह से तुझे यह गुटिका मिली है। इस गुटिका के लिए कई कई वर्षों तक साधना करनी पड़ती है। बाबा प्रचंड नाथ ने 3 साल की तपस्या करके इसे प्राप्त किया था। उनका शरीर छोड़ने का समय हो रहा है | इसलिए वह एक योग्य व्यक्ति की तलाश में थे | जिसे वह यह गुटिका सौंप सके।

मैंने पूछा - फिर उसने आपको यह गुटिका क्यों नहीं सौंपी। वह हंसने लगे बोले - एक साधक दो दो गुटिका रखके क्या करेगा ?

मतलब बनर्जी दादा के पास यह गुटीका पहले से ही थी। मैंने पूछा - आप दोनों ने इसकी साधना एक साथ की थी क्या ?

उन्होंने बताया - बाबा प्रचंडनाथ उस समय यह गुटिका प्राप्त कर चुके थे जब मैं उनसे मिला। उन्होंने मुझे उसकी साधना विधि बताई थी और मैंने वाराणसी के मणिकर्णिका घाट पर बैठकर इसकी साधना संपन्न की थी। मुझे डेढ़ साल साधना करने के बाद यह गुटिका प्राप्त हुई थी। वाममार्गी साधना में सफलता प्राप्त करने के लिए इस गुटिका का होना बेहद लाभदायक होता है। तू भी जब भविष्य में इन साधनाओं में प्रयुक्त

होगा तब तुझे इस गुटिका के बारे में और जानकारी प्राप्त हो जाएगी। तू भाग्यशाली है जो तुझे यह गुटिका प्राप्त हुई। यह तुझे वाममार्गी साधनाओं के शिखर तक पहुंचाने में सक्षम है। इसकी जितनी तारीफ की जाए वह कम है। एक साधक के लिए उसके जीवन का सौभाग्य है कि उसे मदन कामेश्वर गुटिका प्राप्त हो जाए। तू तो भाग्यशाली है नागमणि के साथ-साथ मदन कामेश्वर गुटिका भी तुझे मिल गई है।

छाया का रहस्य

इतना कहकर वे चुप हो गए। मैं इस उधेड़बुन में था की छाया के बारे में बनर्जी दादा को बताऊं या ना बताऊ। मैंने सोचा कि इस रहस्य को भी पता करना ही पड़ेगा। मैंने छाया के साथ हुई घटना के बारे में विस्तार से बताया। उसे सुनकर बनर्जी दादा मंद मंद मुस्कुराते रहे। बोले - तो वह पगली तुझे भी मिल गई।

मैंने प्रश्नवाचक निगाहों से उनकी तरफ देखा। उन्होंने कहा - तारापीठ उसका निवास है। उसका जन्म तारापीठ में ही हुआ था। वह भगवती तारा की कृपा प्राप्त साधिका है।

मैंने पूछा - तारापीठ में कैसे जन्म हुआ ?

दादा ने बताया - बरसात के मौसम में कई साल पहले छाया की मां जो गर्भ से थी तारापीठ पर दर्शन करने के लिए आई। उसकी अवस्था ऐसी थी कि प्रसव कभी भी हो सकता था, लेकिन उसके मन में यह प्रबल इच्छा थी कि उसे तारा माई के दर्शन करने हैं। वह एक विधवा स्त्री थी उसके पति का हृदयाघात से निधन हो चुका था। वह इस आघात को सहन करने की क्षमता प्रदान करने के लिए तारा माई के दर्शनों को आई थी। छाया की मां लगभग 1 हफ्ते तक उसी कमरे में रही। जिस कमरे में तुम अभी रह रहे हो। वह रोज सुबह स्नान आदि करके तारापीठ पर जाकर बैठ जाती और फिर शाम को ही वहां से वापस लौटती थी। ऐसा चार-पांच दिन तक चलता रहा। वह एक अमावस्या की रात्रि थी, जब वह बिना किसी को बताए कमरे से बाहर निकल गई और तारापीठ में पहुंच गई। तारापीठ में पहुंचते ही अचानक उसे प्रसव पीड़ा होने लगी। अब तारापीठ में रात को किसी का मिलना असंभव था, लेकिन अचानक एक बुढ़िया दाई वहां पर प्रकट हुई। तू समझ सकता है कि वह कौन थी। उसने पूरी प्रसव प्रक्रिया संपन्न कराई। उस बच्ची को बाबा प्रचंड नाथ को सौंपा और उसकी मां को लेकर तारापीठ के अंदर चली गई। उस दिन के बाद ना तो उस वृद्ध महिला को और ना ही छाया की मां को किसी ने देखा।

दादा आगे बोले - तब से बाबा प्रचंडनाथ और श्मशान के बाबाओं के संरक्षण में वह पली बढ़ी। बचपन से ही वह साधनाओं के प्रति आकर्षण का भाव रखती थी, प्रचंडनाथ तथा अन्य साधुओं ने उसे एक से बढ़कर एक साधना सिखाई और उसने पूरी तन्मयता और श्रद्धा के साथ साथ पूरी निष्ठा और एकाग्रता के साथ हर साधना को संपन्न किया और

सिद्धियां प्राप्त की। वह एक अभूतपूर्व साधिका है। मैंने अपने जीवन में बहुत कम साधकों को उस स्तर तक पहुंचते देखा है जिस स्तर पर छाया खड़ी है।

उसका संकेत और बाबा प्रचंड नाथ द्वारा तुझे मदन कामेश्वर गुटिका देना यह लगभग निश्चित कर देता है कि आने वाले समय में तुझे महा श्यामा साधना करने का अवसर अवश्य मिलेगा। करोड़ों साधकों में से कोई एक साधक इस साधना को सफलतापूर्वक संपन्न कर पाता है और मुझे पूरा विश्वास है कि तू अवश्य ही साधना को संपन्न कर पाएगा। इतना कहकर बनर्जी दादा खामोश हो गए। तब तक दूसरी चाय आ चुकी थी। हम दोनों ने अपनी-अपनी चाय पी और मैं फिर अपने कमरे में वापस आ गया।

दोपहर के लगभग 12:30 बज रहे थे। मैंने कमरे का दरवाजा बंद किया और बिस्तर पर अपने तांत्रिक थैले के साथ बैठ गया। अब मुझे वह थैला दुनिया का सबसे बड़ा खजाना लग रहा था क्योंकि उसमें दो अभूतपूर्व तांत्रिक वस्तुएं रखी हुई थी। यह ऐसा ही था जैसे किसी छोटे बच्चे को उसकी कल्पना से परे के खिलौने मिल जाए। मैं उन्हें देखना चाहता था। सबसे पहले मैंने मदनकामेश्वर गुटिका को हाथ में उठाया और आँख बंद करके बैठ गया।

आँख बंद करते ही मैं ध्यानस्थ हो गया | लगभग 1 घंटे तक मैं ध्यान की अवस्था में बैठा रहा मुझे विचित्र विचित्र किस्म के दृश्य दिखाई देते रहे | चौसंठ योगिनी मंदिर और खजुराहो मंदिर भी मुझे दिखाई दिए | उसके बाद मैं अपने आप को अंतरिक्ष में महसूस कर रहा था हर तरह काला रंग छाया हुआ था और मेरे चारों तरफ काफी दूरी पर चमकते हुए गोल गोल पिंड दिखाई दे रहे थे वह दृश्य अलौकिक और अद्भुत था | मुझे ऐसा लग रहा था जैसे मैं किसी अज्ञात लोक की यात्रा पर निकल गया हूं | 1 घंटे के बाद मैं वापस तटस्थ हुआ और मैंने आंखें खोली | गुटिका को प्रणाम किया और उसे वापस थैली में डाल दिया |

दादा के जमीन का खजाना

अब नागमणि की बारी थी | मैं उसे भी अपने हाथों में स्पर्श करके महसूस करना चाहता था | जैसे-जैसे इन दिव्य वस्तुओं की महिमा मुझे पता चल रही थी मेरा आकर्षण उनके प्रति और बढ़ता जा रहा था | ऐसा लग रहा था कि उनके बारे में जितना जान सकता हूं जान लूँ | मुझे थकान भी लग रही थी इसलिए मैं बिस्तर पर लेट गया और उस नागमणि को अपने हृदय के पास रख लिया | नागमणि का ठंडा ठंडा स्पर्श बहुत सुखद लग रहा था | उसमें से निकलने वाली रश्मियां बहुत स्पष्ट दिखाई नहीं देती थी लेकिन उसका ठंडापन मौजूद था | मैं उसे हृदय पर रखे रखे नींद में चला गया और मुझे सपने दिखने लगे | सपने मे मुझे वह दोनों साथ ही दिखाई दे रहे थे | दोनों कुछ देर तक सांप जैसे दिखते रहे फिर अचानक वह एक सुंदर युवक और युवती में बदल गए | इसके बाद उनकी क्रीड़ाएं प्रारंभ हो गई | मैं अपने आपको भी वहां पर देख सकता था |

कुछ समय के बाद दृश्य बदला | अब मुझे बनर्जी दादा का घर दिखाई दे रहा था | बनर्जी दादा के साधना कक्ष के खिड़की के बाहर वाले हिस्से में पीपल के पेड़ के नीचे की जमीन मुझे पारदर्शी लगने लगी | उसके अंदर का सब कुछ मुझे दिखाई दे रहा था | पीपल के पेड़ की जड़ों के साथ वहां पर एक तांबे का लगभग 1 फुट लंबा 1 फुट व्यास का मटका दिखाई दिया | उस मटके के अंदर चांदी के सिक्के भरे हुए थे यह देख कर मैं हड़बड़ा कर उठ बैठा | मैं अपने कमरे में ही था | कुछ देर बाद पानी पीकर लेटा फिर नींद लग गई, दुबारा से सपने आने चालू हो गए | फिर वही सपना आया कि पीपल के पेड़ के नीचे चांदी के सिक्कों से भरा हुआ मटका गड़ा हुआ है | मै हड़बड़ा कर उठ बैठा | यह तो बड़ी गड़बड़ थी | इस अजीब से सपने का मैं क्या करूं ? यह सोचते सोचते मैं फिर से नींद के आगोश में चला गया | तीसरी बार फिर वही सपना आया | पीपल का पेड़ और उसके नीचे चांदी के सिक्कों से भरा मटका | मैं फिर से जाग गया | मुझे लगा कि यह नागमणि की वजह से हो रहा है | मैंने उसे वापस तांत्रिक थैले में रुमाल में लपेट कर डाला और उसे अलमारी में रख दिया, और वापस सो गया | इस बार कोई सपना नहीं आया और मैं आराम से 3:30 बजे तक सोता रहा |

नहा धोकर लगभग 4 बजे मैं कमरे से बाहर निकला | अब बारी थी उस सपने की तहकीकात करने की | मुझे लगा कि मुझे दादा को सपने के बारे में बताना चाहिए | बापी वहीं खड़ा था | मैंने उससे पूछा - दादा कहां है ?

बापी ने बताया - वह अपनी मौसी के घर गए और रात तक आएंगे |

मेरी उत्सुकता अपने चरम पर थी ! नया-नया उत्साह था ! पहली बार नागमणि हाथ लगी थी ! और हाथ लगते ही एक खजाने का पता चल रहा था ! इच्छा हो रही थी कि मैं खुद कुदाली लेकर पीपल के पेड़ के पास पहुंच जाऊं और खुद खजाने को निकाल लूँ | लेकिन यह संभव नहीं था | क्योंकि मेरे पास खोदने के लिए कोई हथियार नहीं था | फिर मुझे विचार आया क्यों ना बापि को साथ में लेकर खुदाई की जाए | घर में बनर्जी दादा और बापी के अलावा कोई तीसरा नहीं था | मैंने बापी को खुदाई के लिए तैयार करने का सोचा और उसे अपने सपने के बारे में बताया | नागमणि और मदन कमेश्वर गुटिका वाली बात उसे पता नहीं थी | इसलिए खजाने वाली बात बताना मुझे उचित नही लगा | मैंने उसे बताया कि सपने में मुझे पीपल के झाड़ के नीचे एक मूर्ति दिख रही है, चलो उसे खोद कर निकालते हैं | दादा मुझे चाहते थे और मेरा सम्मान भी करते थे इसलिए बापी तुरंत तैयार हो गया | सपने के अनुसार वह खजाना लगभग 2 फुट की गहराई पर था | बापी ने खोदना चालू किया | 2 फुट की खुदाई हो गई, लेकिन कुछ नहीं दिख रहा था | मुझे थोड़ी सी निराशा होने लगी, लेकिन बापी निराश नहीं हुआ था | उसने कहा - थोड़ा बहुत ऊपर नीचे हो जाता है दादा | हम और खोद कर देखेंगे | खोदते खोदते हम चार फुट तक पहुंच गए

लेकिन कुछ नहीं मिला | अब मुझे निराशा होने लगी मुझे लगा की बेवजह मैंने खुदाई करवा दी अब दादा को क्या जवाब दूंगा.....

तभी ! कुल्हाड़ी मारते ही टंग की आवाज आई | यह आवाज वैसी थी जैसे लोहा लोहे से टकराता है तब आता है | या वह किसी धातु से टकराता है तब आता है | बापी ने मेरी तरफ देखा मैंने बापी की तरफ | हम दोनों एक दूसरे को देख कर मुस्कुराए | हमारा मिशन सक्सेसफुल होने जा रहा था |

आवाज सुनते ही बापी का जोश चार गुना हो गया था | मैंने धीरे-धीरे मट्टी को हटाया तो घड़े जैसी आकृति दिखने लगी | मट्टी को सावधानी से हटाकर बापी ने उसको बाहर निकाल दिया | यह ठीक वैसा ही था जैसा मुझे सपने में दिखाई दे रहा था | लगभग 1 फुट की हाइट 1 फुट के व्यास का | अब मुझे विश्वास हो गया कि इसके अंदर चांदी के सिक्के पक्का मिलेंगे |

लेकिन हम दोनों नौसिखिये थे ! दोनों डर रहे थे क्योंकि वह तांबे का मटका ऊपर से एक तांबे के ढक्कन से बंद था | उसके ऊपर छोटी छोटी कीले लगाकर फिक्स कर दिया गया था , जिन्हें तोड़कर ही उस मटके को खोला जा सकता था |

हम दोनों ने एक दूसरे की तरफ देखा कि आगे क्या किया जाए ? यहां तक तो हम लोग पहुंच चुके थे लेकिन आगे की कार्यवाही करने के लिए दोनों झिझक रहे थे | तभी बापी ने घोषणा की - दादा ऐसे खजाने को जमीन से मिलने पर पूजा पाठ करके खोलना होता है | तुमको मालूम है क्या कैसे करते हैं ?

मुझे तो जमीन के अंदर खजाना मिलता है यह भी पहली बार पता चला था | पूजा-पाठ तो बहुत दूर की बात थी | मैंने नहीं मैं सिर हिलाया क्योंकि बापी की बात बिल्कुल सही थी | मटका निकालने तक तो ठीक था लेकिन उसे बिना उचित उपाय के खोलना सही नहीं था | हम दोनों ने मिलकर तय किया कि अभी इसको यही छोड़ देते हैं और हल्का मिट्टी उसपर डाल देते हैं | जब दादा आएंगे तब उसको बाहर निकाल लेंगे |

अब हम दोनों बड़ी बेसब्री से दादा के आने का इंतजार करने लगे | जब आप इंतजार करते हैं तो समय बड़ी धीमी गति से आगे बढ़ता है | ऐसा लगता है जैसे 1 घंटे में 120 मिनट हो गए हो | हम दोनों दरवाजे की तरफ टकटकी लगाए बैठे हुए थे, कि कब दादा आए और कल हम उनको कथा सुनाएं |

तीन चार चाय पीते रात के सात बज गए तब दादा का आगमन हुआ | दादा ने बाहर से आवाज लगाई | दादा के अंदर घुसते ही बापी ने दरवाजे की संकल लगाई | हम दोनों उन्हे पकड़ कर खींचने लगे और लाकर चारपाई पर बैठा दिया | दादा बोलते रह गए कि हाथ पैर तो धो लेने दो |मगर हमने उनको उसका भी मौका नहीं दिया |

चारपाई पर बैठाकर हमने उनको पूरी कहानी सुना दी | कहानी सुनकर वह मुस्कुराए और बोले ठीक है, मैं हाथ पैर धो लेता हूं फिर हम पूजा करके उसे निकालेंगे | उन्होंने

अपना हाथ पैर धोया | फिर वह अपने पूजन कक्ष में गए | वहां से कुछ पूजन सामग्री उठाई | बापी ने दिया पकड़ा | मैंने घंटी पकड़ी, एक हाथ में पंच पात्र पकड़ा और पीपल के पेड़ के नीचे पहुंच गए |

दादा ने कुछ मंत्रों का जाप किया और पीपल के पेड़ का पूजन किया और पता नहीं क्या-क्या पूजन किया | उसके बाद बापी ने मिट्टी हटाई !

कलश गायब था…….

अब चौकने की बारी हम दोनों की थी | क्योंकि हम दोनों ने कलश को देखा था | जमीन ऐसी लग रही थी जैसे वहां कुछ भी नहीं निकला हो ! एकदम प्लेन ! मैं और बापी एक दूसरे को प्रश्नवाचक निगाहों से देख रहे थे | हम दोनों को कुछ भी समझ में नहीं आ रहा था | दादा की ओर हम लोगों ने देखा और एक साथ कहा - दादा यहीं पर हम लोगों ने कलश निकाल कर रखा था |

दादा बोले - तो फिर गया कहां ?

हम दोनों सर पकड़ कर बैठे थे |

दादा हंस पड़े बोले - बेटा भूगर्भ का खजाना इतनी आसानी से नहीं मिलता है, जैसे ही मिलता है उसे मंत्रों के द्वारा बांधकर अपने अधीन करना पड़ता है | वरना उसके अंदर स्थित शक्तियां उसे वापस जमीन के अंदर भेज देती हैं | तुम्हारे कलश के साथ भी वही हुआ है | अब उसे वापस बाहर लाने के लिए पूजा करना पड़ेगा |

हम दोनों निराश और हताश से दादा की ओर देखने लगे |

दादा ने कहा - तुम चिंता मत करो | मैं पूरा सामान लेकर आया हूं | अभी घंटा भर और पूजन चलेगा | जिसके बाद दादा का पूजन चालू हुआ उन्होंने नाग पूजन , पृथ्वी पूजन और वास्तु पूजन के साथ भूगर्भ सिद्धि के मंत्रों का 11 माला जाप किया और अपने सामने रखे हुए पंच पात्र में से थोड़ा सा जल निकालकर उस मिट्टी की ओर फेंका | दादा ने बापी को फिर खोदने का इशारा किया | बापी कुदाली लेकर फिर से भिड़ गया |

फिर ! लगभग एक डेढ़ फुट की खुदाई के बाद फिर से टँग की आवाज आई ! हम दोनों के चेहरे फिर से खिल उठे ।

अब कलश दिखाई देने लगा | दादा ने जगदंबा का ध्यान किया । ध्यान करने के बाद में चावल के कुछ दाने अपने चारों तरफ फेंके | कुछ दानों से हम को भी घेरा | उसके बाद काली मिर्च से कलश को घेरने के बाद उन्होंने अपनी जेब से गंगाजल की शीशी निकाली और तीन बार आचमन करने के बाद हम लोगों को भी तीन बार आचमन करने के लिए कहा | इतना सब हो जाने के बाद हम लोगों ने डरते डरते उस कलश को बाहर निकाला और उसे लेकर घर के अंदर आ गए |

अब बारी थी उसे खोलने की | बापी ने स्क्रुड्राइवर कटिंग प्लेयर जैसी चीजों का इंतजाम किया | मैं और बापी मिलकर उस ढक्कन को खोलने में लग गए | लगभग 15

मिनट के प्रयासों के बाद ढक्कन खुल गया | ढक्कन खुलते ही उसके अंदर काली-काली मिट्टी दिखने लगी। मैंने सोचा कि कहीं सारे सिक्के मिट्टी तो नहीं हो गए, लेकिन लगभग 2 अंगुल मट्टी को हटाने से उसके अंदर पडे हुए सिक्के दिखने लगे |

मैंने उन्हें देखा तो वे सिक्के लोहे के लग रहे थे काले काले से ! मैंने एक सिक्के को बाहर निकाला और उसे दादा को दिया | दादा ने उसे जमीन पर रगड़ा | जमीन पर रगड़ते ही उसका कालापन हट गया और अंदर से चांदी की चमक दिखाई देने लगी, यानी वास्तव में सिक्के चांदी के ही थे | मटकी को हम दोनों ने मिलकर पलटा | उसमें लगभग 500 के आसपास सिक्के थे | उनका वजन तकरीबन 15 से 20 किलो रहा होगा |

लगभग 500 सिक्के थे। जिनका वजन तकरीबन 15 से 20 किलो रहा होगा । खैर…...

यह सब तामझाम करते-करते रात के 10:45 बज चुके थे। मेरी साधना का समय हो चुका था। हाथ पैर पर मिट्टी लगी हुई थी इसलिए स्नान किया और अपना थैला लेकर शमशान की ओर बढ़ चला | साधना के 5 दिन बीत चुके थे। आज छठवां दिन था। समय कम था इसलिए मैं लगभग दौड़ता हुआ श्मशान में घुसा और जाकर अपने साधना स्थल पर बैठ गया।

तारापीठ की देवी

अपने चारों तरफ रक्षा घेरा बनाकर मैंने मंत्र जाप प्रारंभ किया। लगभग 11 माला मंत्र जाप हुआ होगा जब मुझे अट्टहास की ध्वनिया सुनाई देने लगी। यह कोई स्त्री कर रही थी।

अट्टहास बड़ा ही भयानक था।
रात के अंधेरे में ….
सुनसान जगह पर……
जहां कोई ना हो….
अगर कोई स्त्री अट्टहास करे…
तो कैसा लगेगा ?

यह महसूस करने के लिए आप किसी हॉरर फिल्म की चुड़ैल के हंसने की कल्पना कर सकते हैं। लगभग वैसी ही हँसी थी और इस प्रकार हंसने की आवाज लगातार काफी देर तक आती रही। यह हंसी की आवाज रात के 1:30 बजे तक लगातार आती रही। उसकी दिशा अलग-अलग होती थी।

कभी ऐसा लगता कि बाएं तरफ से आ रही है….
और कभी ऐसा लगता कि दाएं तरफ से आ रही है !
कभी ऐसा लगता कि कोई पीछे खड़े होकर हंस रहा है…….

लेकिन कोई दिखाई नहीं दे रहा था।

डेढ बजे के आसपास लगभग 10 फुट की ऊंचाई पर एक विशालकाय सिर दिखाई दिया। वह सिर लगभग 3 फीट चौड़ा होगा। वह सिर महाकाली के सिर जैसा दिख रहा था। उसका रंग एकदम काला था। उसके बाल लंबे लंबे थे और पीछे की तरफ फैले हुए थे। आँखें लाल लाल और बड़ी-बड़ी थीं। जीभ बाहर की तरफ निकली हुई थी। जीभ में से रक्त की बूंदें टपक रही थी। ऐसा लग रहा था जैसे एकदम ताजा खून पिया हो।

आंखों में ऐसा भाव था, जैसे अब मेरा खून पीना चाहती हो। अट्टहास की आवाज उसी के मुंह से निकल रही थी। जब तक वह चेहरा नहीं दिखाई दे रहा था तब तक केवल अट्टहास का भयानकपन ही महसूस हो रहा था, लेकिन जब चेहरा दिखाई देने लगा तो और भी डरावना लगने लगा।

वह दृश्य देखना डरावना था, लेकिन साधना काल में कई प्रकार के दृश्यों ने मुझे भी थोड़ा समर्थ बना दिया था। जिसके चलते मैं आसानी से उस भयानक दृश्य को देख पाया। वह आकृति उसी प्रकार मेरे सामने बनी रही। ह्रदय में भय उत्पन्न हो रहा था लेकिन फिर भी मंत्र जाप चलता रहा।

वह विशालकाय सिर मेरी तरफ तेजी से बढ़ कर आता और मेरे चेहरे से लगभग 1 फुट की दूरी पर रुक जाता। जब वह आकृति मेरे पास आती तो उसके मुख से निकलती हुई दुर्गंध मैं महसूस कर सकता था। उसकी आंखें देखने से ऐसा लगता था जैसे शरीर में छेद कर घुस जाएंगे।

इस बार जब वह पास आई तो उसकी लाल-लाल जीभ बाहर निकल कर मेरे चेहरे तक आई और उसने मेरे माथे को चाट लिया। मुझे ऐसा लगा जैसे किसी नुकीली वस्तु से मेरा माथा रगड़ खा गया हो। मेरे माथे से खून बहने लगा। खून मेरी आंखों से बहता हुआ नीचे टपक रहा था। सिर्फ उसका सिर ही था बाकी शरीर दिखाई नही दे रहा था। स्वयं उसका सर भी गर्दन से कटा था। उसकी गर्दन से भी खून की धारा बह रही थी जिसे वह अपनी जीभ बढ़ाकर बीच बीच मे चाट लेती थी.....और हर बार चाटने के बाद खून की धार फ़िर बह निकलती।

इसके बाद वह आकृति मेरी तरफ आती। उसकी जीभ बाहर निकलती ... कभी गले पर, कभी सीने पर, कभी हाथ पर, कभी पैर पर उसकी जीभ फिरती और उस स्थान से बहते हुए खून को चाटती हुई जीभ वापस चली जाती।

वह अपने खून से सने हुए जीभ को अपने होठों पर फिराती ! जैसे कह रही हो कि तेरा सारा खून मेरी जीभ के लिए है। धीरे धीरे मेरे शरीर मैं कोई भी हिस्सा ऐसा नहीं बचा जिसमें से खून न बह रहा हो।

आप महसूस कर सकते हैं कि जब आपके शरीर में हजारों घांव हो तो कैसी अनुभूति होती होगी । दर्द इतना ज्यादा हो गया था कि अब उसका एहसास होना भी बंद हो गया था…….

यही स्थिति पूरे साधना काल में रही । जब मेरा मंत्र जाप पूर्ण हुआ तो वह आकृति भी विलुप्त हो गई । इस प्रकार छठवीं साधना की रात्रि संपन्न हो गई । अब 2 रात्रियाँ और बच गई थी । जिसके बाद भगवती की कृपा होती तो मेरी साधना पूर्ण हो जाती ।

महाविद्या साधनाओं को अलग अलग मार्ग से अलग-अलग प्रकार से सिद्ध किया जा सकता है । इसमें दो प्रमुख मार्ग माने जाते हैं पहला होता है दक्षिण मार्ग और दूसरा होता है वाम मार्ग । वाम मार्ग में साधक और साधिका एक साथ बैठकर साधना करते हैं । दक्षिण मार्ग में महाविद्या साधना के समय ब्रह्मचर्य का पालन करना एक अनिवार्य आवश्यकता होती है । अघोर साधना मूलतः वाममार्गी साधनाओं के अंतर्गत आती है । यह तो हुई साधनात्मक बारीकियां । जो आप जब साधना में संलग्न होते हैं तो आपको या तो अपने आप पता चलती हैं या फिर आपका गुरु आपको उसके संबंध में मार्गदर्शन प्रदान करता है । मेरा अनुभव यह है कि जैसे-जैसे आप साधना में आगे बढ़ते जाते हैं , संबंधित देवी या देवता आपको मार्गदर्शन स्वयं या किसी न किसी माध्यम के द्वारा प्रदान करते ही हैं ।

यहां साधकों को एक और गलतफहमी होती है कि गुरु के बिना साधना करने से कोई भयानक हानि हो सकती है । वास्तव में गुरु की उपस्थिति उग्र साधना के लिए ज्यादा जरूरी है । उग्र साधना में मूल रूप से महाविद्याओं की साधना, श्मशान साधना शामिल है । इनमें ये शक्तियां साधक के ऊपर कई प्रकार के परीक्षण करती हैं इसलिए गुरु का होना जरूरी माना गया है ।

सौम्य मंत्र साधनाये गुरु के बिना भी की जा सकती हैं उसके लिए आप अपने इष्ट अर्थात जिस भगवान की साधना कर रहे हैं उसे ही गुरु रूप में स्वीकार करके साधना कर सकते हैं । इससे सफलता भी जल्दी मिलती है । खैर...

हम वापस तारा साधना की ओर चलते हैं । मेरा छठवां दिन निकल चुका था । अब 2 दिन की साधना और बची थी । छठवीं रात्रि बेहद ज्यादा घटनापूर्ण नहीं रही इसलिए मैं लगभग 3 बजे बिस्तर पर लेट चुका था । लेटते ही में नींद के आगोश में चला गया ।

तारा माई का विग्रह

सुबह बापी ने दरवाजा खटखटा कर उठाया और मुझे दादा के बुलाने की सूचना दी । मैं फ्रेश हुआ और नहा धोकर बाहर निकला । दादा और बापी मटकी के साथ बैठे हुए थे ।

दादा ने कहा - अघोरानंद अब इस मटकी का और इन सिक्कों का क्या करना है ? तुमने इसे खोजा है इसलिए इस पर तुम्हारा अधिकार है ।

मैंने कहा - दादा आपकी जमीन से निकला है इसलिए इस पर आपका अधिकार है ।

दादा जिद करने लगे - कम से कम इसका आधा तो तुमको रखना ही पड़ेगा।

मैंने कहा - अगर आप इतनी जिद कर रहे हो तो 11 सिक्के मुझे दे दो । बाकी आपको जो करना है कर लो।

काफी बहस बाजी के बाद दादा मेरी बात पर सहमत हुए। ग्यारह सिक्के उन्होंने मुझे दे दिए। अब तक बापी ने सारे सिक्कों को धो पोंछकर चमका दिया था। अब सारे सिक्के चांदी के लग रहे थे। ग्यारह सिक्के लेकर मैं तारापीठ की ओर चला गया। आप समझ गए होंगे कि मैं क्या करने जा रहा था।

वहां पहुंचकर मैंने वह 11 सिक्के तारापीठ के मंदिर में भगवती के चरणों में चढ़ा दिए। माई को प्रणाम करके वापस लौट गया क्योंकि उन्हीं की कृपा से मुझे यह सब प्राप्त हुआ था। मैंने उन सिक्कों को उन्हीं के चरणों में समर्पित करना ज्यादा श्रेष्ठ समझा।

जब मैं वापस घर पहुंचा तब तक खाना बन चुका था। दादा और मैं साथ में खाना खाने बैठे।

दादा बोले - मेरी बड़ी इच्छा थी कि तारा माई की सोने की मूर्ति अपने साधना कक्ष में रखू। अब मैं यह सोच रहा हूं कि चांदी की मूर्ति बनवा कर उस पर सोने का पानी चढ़ा लू। तुम्हारा क्या विचार है , क्या यह ठीक रहेगा ?

मैंने कहा - दादा एकदम सुंदर विचार है। आप इसको तत्काल कर ही डालो।

खाना खाने के बाद सिक्कों को लेकर हम लोग एक सुनार के पास पहुंचे। जो दादा की पहचान का था। सुनार ने सिक्के देखें। उनको परखा और बोला - यह 100% चांदी है। क्या आपको इसे बेचना है ?

दादा ने उसे बताया कि वह सोने की तारा माई की मूर्ति का सोच रहे थे। अगर वह संभव हो तो वैसा और अगर ऐसा संभव ना हो तो चांदी की मूर्ति बनाकर सोने का पानी चढ़ा दे।

सुनार ने सोने की मूर्ति बनाकर देने पर हामी भर दी लेकिन उससे पहले उसने शर्त रखी कि वह उन सारे सिक्कों को पिघला कर देखेगा तभी वह उनकी शुद्धता के बारे में पूरी तरह निश्चिंत हो सकेगा। उसी के आधार पर यह बता पाएगा की कितनी ऊंची सोने की मूर्ति बनाकर दे सकता है।

सुनार हमे अपनी दुकान के पीछे बने घर के कोने में बने एक कमरे में ले गया। उस कमरे में एक चिमनी भी लगी हुई थी। अंदर सुनार के पास एक छोटा बिजली से चलने वाला फर्नेस था। उसमे लगभग 2 किलो चांदी आ जाता। सिक्कों को उस भट्टी में डाला और 10 मिनट में वे पिघल गए। उनको एक दूसरी कोयला भट्टी में रखे बडे बर्तन में डाल दिया। सिक्के ज्यादा थे , इसलिये ऐसा उसे 8 - 10 बार करना पड़ा। जब पूरे सिक्के पिघल गए तो उसने उसमें से थोड़ा हिस्सा निकालकर कुछ केमिकल में डालकर देखा और

पता नहीं क्या-क्या किया। यह सब करने के बाद उसने घोषणा की कि चांदी ठीक है और लगभग 6 इंच ऊंची सोने की माई की प्रतिमा बन जाएगी।

दादा ने सहमति में सिर हिलाया और पूछा - कब दे पाओगे ?

सुनार ने कहा - मूर्ति का साँचा मेरे पास है , बस पिघलाकर डालना है। आप कल दोपहर को ले जाओ ।

हम वापस घर आ गए। मुझे खुशी थी कि प्रभु की कृपा से दादा की इच्छा की पूर्ति करने की व्यवस्था हो गई।

बापी सीधा साधा और ईमानदार नौकर था। वरना इतने सारे सिक्कों को देखकर अच्छे अच्छों का ईमान डोल जाता है। दादा ने उसे ताकीद भी की कि इस बारे में किसी को मत बताना क्योंकि उससे समस्या हो सकती है।

द्वारिका नदी का घाट

मूर्ति की व्यवस्था हो जाने के बाद वापस आते आते शाम के 6 बज चुके थे। मुझे द्वारिका नदी के घाट पर जाकर बैठने की इच्छा हुई और मैं दादा को बोलकर उधर जाने लगा।

बापी बोला - मैं भी आपके साथ चलूंगा।

मैंने दादा से पूछा उन्होंने अनुमति दे दी। हम दोनों साथ में घाट की ओर चल पड़े। रास्ते में चलते चलते बापी ने अपनी कहानी बताई। उसके पिताजी चौकीदार का काम करते थे। यहां काम करते करते एक बंगाली बाला से उनका संबंध बन गया। दादा ने दोनों की शादी करवा दी। उनका पहला बच्चा था, बापी। बापी के होने के 2 साल बाद उसकी एक छोटी बहन भी पैदा हुई। एक बार यह चारों द्वारिका नदी में नाव से आ रहे थे, तब नाव डूब गई और बापी के मां-बाप और बहन की मृत्यु हो गई।

केवल बापी को नदी में मछुआरों ने अर्ध मूर्छित अवस्था में पकड़ लिया और किनारे ले आए। उन्होंने ही उसे पाला। जब वह दादा की सेवा में आया तो उस समय उसकी उम्र 16 साल की थी। वह घर के सारे काम करता है और खाना भी बना कर देता है। दादा एक प्राथमिक शाला में अध्यापक है। घर मे 8 कमरे हैं। जिनका किराया भी मिल जाता है। कुल मिलाकर पर्याप्त आय हो जाती है। दादा ने विवाह नहीं किया था | उनके साथ उनकी वृद्ध मां रहा करती थी जिनका 4 साल पहले देहांत हो चुका था। यह था बापी का इतिहास। खैर.....

हम दोनों घाट पर पहुंचे। मैंने सिगरेट पीने की सोची। बापी से पूछा क्योंकि उसे मैंने बीड़ी पीते हुए देखा था। वह भी तैयार हो गया। हम दोनों ने एक एक फ्लैक ली और उसका सुट्टा मारते हुए नदी के किनारे बैठे रहे।

अजीब सी शांति पसरी हुई थी.....

नदी का तट मुझे हमेशा से पसंद रहा है .....

नदी का किनारा मुझे असीम शांति का अनुभव कराता है और यहां का नदी तट उसी शांति से युक्त था।

मैं और बापी वही बैठकर सिगरेट पी रहे थे। तभी ! एक साधु एक महिला साधु के साथ आकर सामने खड़ा हो गया।

मैं पैंट शर्ट पहने हुए था। उस बाबा ने सामने आकर त्रिशूल जमीन पर पटका और जोर से आवाज लगाइ - अलख निरंजन !

मेरे अंदर से भी प्रबल इच्छा हुई कि मैं भी जोर से अलख निरंजन बोलूँ लेकिन मैंने उसको दवा लिया और मन ही मन अलख निरंजन बोलकर शांत रह गया।

मेरे गुरु ने कहा था - जो साधक होता है अगर वह वास्तविक साधक है तो तांत्रिक सामग्री उसके पास स्वयं चलकर या किसी माध्यम से आ जाती है। उसके लिए बहुत ज्यादा प्रयास नहीं करना पड़ता। उसका उदाहरण अब मेरे सामने आने वाला था।

उस साधु ने मुझसे कहा - बच्चा कल अमावस्या की रात थी। कुछ तांबे के अंग्रेजों के सिक्कों को मैंने चिता पर सिद्ध किया है। यह सिक्के मसान काली के मंत्र से सिद्ध है और हर तरह की मुसीबत से तुझे बचाएंगे। मैं चुपचाप सुनता रहा। बाबा को लगा कि मैं उसकी बात से प्रभावित हो जाऊंगा और सिक्का हासिल करने की जुगत में लग जाऊंगा। लेकिन ! जो मां की छाया के तले बैठा हो उसे किसी और सुरक्षा की क्या जरूरत ? यह सोचकर में भी शांत बैठा हुआ था।

बाबा ने आगे कहा - मैं यहां से बनारस जाना चाहता हूं। यहां की मेरी साधना पूरी हो गई है।

मुझे समझ में आ गया कि उसे शायद कुछ पैसों की जरूरत है। मेरी जेब में उस समय ₹200 पड़े थे। मैंने उसे निकाल कर दे दिए।

वह क्रोधित हो गया - बोला मैं भीख नहीं लेता। तू यह सिक्के लेगा तो मैं तेरे पैसे लूंगा।

मैंने कहा - बाबा इन सिक्कों का मैं क्या करूंगा ? माई के रहते बच्चे का कोई अहित नहीं हो सकता, आप रख लो।

बाल हठ यानी छोटे बच्चे की जिद। स्त्री हठ यानी रूठी हुई महिला की जिद। और योग हठ यानी साधु की जिद। यह तीन विश्व में प्रसिद्ध है। अब बाबा योग हठ में आ गया था। बोला - तुझे ये लेना पड़ेगा।

मैंने भी ज्यादा बहस करना उचित नहीं समझा और उस सिक्के को ले लिया और बापी को दे दिया। बापी ने उसे माथे से लगाया और जेब में रख लिया और साधु के चरण स्पर्श कर लिया। साधु ने उसे आशीर्वाद दिया।

उसके सिक्के को मैंने बापी को दे दिया था । शायद यह बात उसे अच्छी नहीं लगी । लेकिन बापी की श्रद्धा को देखकर उसने कुछ कहा भी नहीं । कुछ देर वह मेरी ओर देखता रहा । मैं सहज भाव से बैठा रहा फिर उसने कहा - मुझे भी सिगरेट पिला .....

हत्था जोड़ी

मैंने बापी के हाथ में पैसे दे दिए और बापी सिगरेट लाने दौड़ पड़ा । बाबा मेरे पास आया और उसने अपनी जेब में हाथ डाला । जब उसने हाथ बाहर निकाला तो उसके हाथ में एक हत्था जोड़ी थी । तंत्र साधना के क्षेत्र में हत्था जोड़ी को बेहद महत्वपूर्ण तांत्रिक सामग्री में से एक माना जाता है । यह एक प्रकार की जड़ होती है जिसमें आदमी के पंजे की आकृति बनी होती है और ऐसी ही दो आकृतियां आपस में जुड़ी हुई होती है ।

प्राकृतिक रूप से यह दोनों हाथ जैसी आकृतियां आपस में जुड़ी हुई होती है | जो दो लोगों के बीच में जुड़ाव या लगाव का प्रतीक है | इसे वशीकरण साधना में प्रयोग किया जाता है और यह बेहद अच्छे परिणाम देता है | ऐसा मैंने सुन रखा था | इसके साथ ही यह भी सुना था कि यह बड़ी दुर्लभ सामग्रियों में से एक है | बाबा ने वह हत्था जोड़ी मेरी तरफ बढ़ाई | गुरुजी की बात मुझे याद आई और मैंने दोनों हाथ बढ़ाकर उसे स्वीकार कर लिया | मेरी बड़ी प्रबल इच्छा थी कि एक बार वशीकरण प्रयोग करके देखू कि वास्तव में यह कितना शक्तिशाली होता है ।

अब बाबा मेरे पास आया और मेरे कान में बोला की यह हत्था जोड़ी है, तू तो जानता ही है | इसकी सिद्धि और प्रयोग की विधि तुझे यह रेणु माई सिखाएगी | आज मैं जा रहा हूं लेकिन यह अभी एक हफ्ते और यहीं पर रहेगी | इस बीच मिलकर इससे सीख लेना और उसने साथ खड़ी हुई महिला साधु को देखा उसने सिर हिला कर सहमति जताई ।

मैं प्रसन्नता और गुरुदेव की बात की सत्यता को महसूस कर रहा था कि अगर साधक की इच्छा शक्ति और साधना प्रबल हो तो तांत्रिक सामग्री वास्तव में अपने आप चल कर आती है | यह हत्था जोड़ी स्वयं से चलकर मेरे पास पहुंची थी |

साधु बाबा को मैंने पैसे दिए थे और उसके बदले में उन्होने सिक्का दे दिया था | यानि लेनदेन पूरा हो चुका था । उसके बावजूद बाबा के द्वारा मुझे यह दुर्लभ जड़ी प्राप्ति को गुरु कृपा समझ मैंने मन ही मन गुरुदेव को प्रणाम किया | बाबा का संकेत भी समझ लिया कि तारा साधना के आठवें दिन के बाद या इस बीच में कभी भी जाकर रेणु माई से वह प्रक्रिया तथा साधना विधि सीखनी है |

तब तक बापी एक सिगरेट लेकर आ गया था |

साधु ने उसे फटकार लगाई - यह जो तेरी मां खड़ी है इसका सिगरेट कौन लाएगा |

मैंने बापी को पैकेट लेकर आने का इशारा कर दिया | थोड़ी ही देर में बापी सिगरेट का पैकेट लेकर आ गया | साधु बाबा ने सिगरेट जलाई एक कश लगाया और मेरी तरफ

बढ़ा दिया और बोला - अलख निरंजन |

मैं भी मुस्कुरा कर बोला - अलख निरंजन |

मैं सिगरेट हाथ में लेकर उसके कश लगाने लगा | बापी ने सिगरेट का पैकेट बाबा जी को सौंपा | उन्होंने एक सिगरेट निकालकर बापी को दिया | एक सिगरेट निकालकर रेनू माई को दिया और एक खुद जलाकर खींचने लगे | अब हम चारों सिगरेट के कश खींच रहे थे |

बापी कभी मेरी और देखता, कभी साधु बाबा की ओर तो कभी रेनू माई की ओर | उसे समझ नहीं आ रहा था कि अचानक हमारे बीच इतना अपनापन कहां से आ गया कि मैं, जो दिया हुआ सिक्का लेने को तैयार नहीं था, वह बाबा के जूठे सिगरेट के कश मार रहा था |

अब मैं उसे क्या बताता कि साधु समाज में हर साधु दूसरे साधु को अपने परिवार का सदस्य ही मानता है । वास्तव में वसुधैव कुटुंबकम के शाश्वत सिद्धांत पर जीता है | थोड़ी देर तक धूए का खेल चलता रहा और उसके बाद बाबा और रेनु माई चल पड़े.....

हम दोनों वही घाट पर कुछ देर और बैठे रहे |

रात शुरू हो रही थी.....

अंधेरा बढ़ रहा था.....

हम दोनों ने अपनी चौथी सिगरेट सुलगा ली थी | नदी के उस पार से कोई तैरता हुआ आ रहा था | कुछ ही देर में उसने तैर कर नदी पार कर ली |

अरे ! यह तो एक महिला थी ! उसने तट पर आकर अपने कपड़ों को निचोड़ा और गीले कपड़ों में ही सीढ़ियां चढ़ने लगी | अंधेरे की वजह से कुछ स्पष्ट नहीं दिख रहा था | सीढ़ियों के आसपास लाइट की रोशनी थी | वह थोड़ा और करीब आई तो मुझे झटका सा लगा, क्योंकि यह तो छाया थी !

उसके बारे में सब जान लेने के बाद मेरे मन में उसके प्रति सम्मान बढ़ चुका था | वह मेरे पास आई तो मैंने सिगरेट को अपने पीछे कर लिया | वह सीधा मेरी ओर चल कर आई और मेरी पीछे की तरफ चली गई | मैंने हाथ छुपाकर पीछे रखा था उसमें सिगरेट फंसा हुआ था | उसने वह सिगरेट खींच ली ! एक कश लगाया ! उसका धुआं मेरी तरह उछाला और सिगरेट के कश खींचते हुई आगे चली गई | हम दोनों उसे देखते रह गए |

आम लोगों की नजर से अगर आप इसे देखें तो ऐसा लगेगा जैसे एक बदमाश लड़की ने अभद्र व्यवहार किया हो | अघोरियों के लिए यह एक सामान्य बात है । जब दो अघोरी मिलते हैं तो वह सिगरेट हो हुक्का हो या चिलम हो उसे शेयर जरूर करते हैं | यह उनका अपना तरीका होता है यह बताने का कि हम सब एक विराट परिवार के सदस्य हैं | यहां सब कुछ सबका है.....

बापी मुझे देखकर बोला - छोड़ो दादा, यह तो पगली है !

अब मैं उसे क्या बताता, जिसे दुनिया पगली समझती है, वह वास्तव में तारा माई की कृपा पात्र साधिका है|

खैर.....

उसके बाद हम लोग वापस अपने कमरे की तरफ लौट चले। दादा इंतजार में थे। बापी ने फिर चाय बनाई। हम तीनों बैठकर चाय पीने लगे। बापी ने दादा को पगली के मिलने की बात भी बताई। दादा मेरी तरफ देख कर मुस्कुराए। मैं भी मुस्कुराया।

जागृत श्मशान

आज की रात सातवीं रात थी। इसके बाद एक और रात बचती। लगभग 11:30 बजे रोज की तरह मैं अपने साधना स्थल पर पहुंच चुका था। प्रारंभिक पूजन तथा अन्य प्रक्रियाएं करके मैंने अपना मंत्र जाप चालू कर दिया। तीसरी माला होते होते वही जले हुए मांस और बाल की दुर्गंध फैलने लगी। वातावरण भारी होने लगा जैसा कि अब तक आप लोग भी समझ गए होंगे कि यह शमशान जागरण के प्रारंभिक संकेत थे। 11 माला पूरी होते-होते दुर्गंध असहनीय होने लगी। ऐसा लग रहा था जैसे मेरे बगल में ही कोई लाश जल रही हो और उसकी बदबू मेरे इर्द-गिर्द फैली हुई हो। थोड़ी देर में मेरे इर्द-गिर्द अजीब अजीब आकृति वाले भूत प्रेत दिखने लगी। उनमें से कुछ आकृतियां बड़ी विचित्र थी। डरावनी थी। कुछ बेहद सुंदर। कुछ पुरुष प्रेत एक आंख वाले थे तो कुछ-कुछ पुरुष प्रेत कई कई आंखों वाले भी थे। कुछ दुबले-पतले सींकिया पहलवान जैसे थे। कुछ मोटे तगड़े बड़ी तोंद वाले थे जो वास्तव में किसी अखाड़े के पहलवान लगते थे। इनमें से कुछ ऐसे भी थे जो कसरती बदन के मालिक लग रहे थे और उनकी चपलता अलग ही दिख रही थी। पहले तो वे आकृतियां मेरी तरफ तेजी से बढ़ती हुई आती लेकिन सुरक्षा चक्र के पास आते ही वापस लौट जाती। काफी देर तक ऐसा ही चलता रहा लेकिन वे सुरक्षा घेरा तोड़ नहीं पाए।

अब उन्होंने मानसिक रूप से विचलित करने के लिए अलग-अलग स्वांग करना चालू कर दिया। एक पुरुष प्रेत ने , जो हट्टे कट्टे पहलवान जैसा दिखता था, एक खूबसूरत महिला प्रेत को उठाकर जमीन पर पटक दिया। उसके बाद दोनों गुत्थमगुत्था होने लगे। पहलवान ने उसके दोनों स्तनों को अपने दोनों हथेलियों में जकड़ लिया। यहां तक तो ठीक था लेकिन इसके बाद उसने दोनों स्तनों को नोच कर निकाल लिया और एक-एक करके दोनों को खा गया। अब वह खूबसूरत महिला प्रेत खून से लथपथ नीचे पड़ी हुई थी। वह उछल कर खड़ी हुई और उसने पहलवान का गला तोड़ कर अलग कर दिया। बिना सिर का पहलवान भी कम नही था उसने उसके एक हाथ को खींचकर निकाल दिए। अब बिना सिर का पहलवान उसके एक हाथ को लेकर जमीन पर गिर पड़ा और उसके ऊपर महिला

प्रेत उसके सर को चबाते बैठी थी। थोड़ी देर में सारे प्रेतों ने उन दोनों पर हमला कर दिया और उन दोनों की बोटी बोटी नोच डाली।

बेहद वीभत्स दृश्य था ऐसा लग रहा था जैसे किसी लाश को कुत्ते झिंझोड़ रहे हो ! कोई बाई तरफ खींचता था ! कोई दाईं तरफ खींचता था ! किसी के हाथ में उसकी नाक आई थी ! किसी के हाथ में मांस का टुकड़ा ! किसी के हाथ में उसका सर था ! कुल मिलाकर अच्छे खासे आदमी को पागल बना देने लायक दृश्य था !

कुछ देर तक तो मेरी भी आंखें फटी की फटी रह गई ! ऐसे भयानक दृश्य जिनकी कल्पना भी नहीं की जा सकती वह मेरे सामने घटित हो रहे थे।

थोड़ी देर में वहां मारकाट मच गई। सारे भूत प्रेत आपस में ही एक दूसरे को मारने काटने में लगे हुए थे। कोई किसी की गर्दन खींच रहा था। कोई किसी महिला के स्तनों में लटका हुआ था और उसे उखाड़ने की कोशिश में था। कोई दूसरे प्रेत को नीचे पटक कर उसके एक पांव पर खड़ा हुआ था और दूसरे पाँव को उखाड़ने की कोशिश कर रहा था। यानी कुल मिलाकर पिशाचत्व का नंगा नाच मेरे सामने चल रहा था।

लगभग 1 घंटे तक यह सब होता रहा। बहुत प्रयास करके मैं अपना मंत्र जाप जारी रख सका। लगभग 1:30 बजे के बाद थोड़ी शांति हुई।

अब भी लगभग 25 मालाएं बची हुई थी। सारे भूत-प्रेत पिशाच गायब हो चुके थे और फिर से गहन शांति छा गई थी। मुझे लगा कि आज का तांडव समाप्त हुआ।

मैं पुनः मंत्र जाप में लग गया। तीन चार मालाएं की होगी तब तक वही कल वाली भयानक विशाल आकृति वाली महिला सामने प्रकट हो गई। इस बार उसका पूरा शरीर था और गहरे काले रंग की रंगत लिए हुए थी। उसका कद लगभग 6 फिट का रहा होगा। वह ठीक मेरे सामने लगभग 2 फुट की दूरी पर आकर खड़ी हो गई। उसके लंबे लंबे बाल कमर तक बिखरे हुए थे। पूरी देह निर्वस्त्र थी। पूर्ण विकसित वक्षस्थल जिसके ऊपर लाल रंग के फूलों की माला थी। चौड़ी कमर में छोटे-छोटे घास जैसे किसी चीज से बना हुआ छोटा सा अधोवस्त्र जैसा लटका हुआ था। वह सामने खड़े होकर मुझे घूर रही थी। कुछ देर के लिए मैं मंत्र जाप करना भूल गया।

तभी !

मेरे सीने पर उसने जोरों से एक लात मारी। मैं आसन में पीछे की तरफ गिर पड़ा।

उसने गड़गड़ाती हुई आवाज में पूछा - तू यह क्यों कर रहा है ? बंद कर यह सब। वरना तुझे कच्चा चबा जाऊंगी।

उसकी आंखें उसके कथन की पुष्टि कर रही थी। लगा कि आज मैंने उसकी बात नहीं मानी तो वह वास्तव में मुझे कच्चा चबा जाएगी। इसके बाद के पूरे जप काल में ऐसा ही चलता रहा। कभी वह लात मारती तो कभी पीठ पर मुक्का मारती। कभी बाल पकड़कर

खींचती | कभी गाल पर थप्पड़ मारती । उसके बीच में बैठकर मैं मंत्र जाप करता रहा । लगभग 6 फुट की महिला की ताकत का आप अंदाजा लगा सकते हैं । वह अपनी पूरी ताकत से झापड़ लात और मुक्के मारती थी । मेरे पास उसे खाते रहने के अलावा कोई उपाय नहीं था क्योंकि आसन से मैं उठ नही सकता था । यह भी पता था कि यह साधना का परीक्षण है और इसे पास किये बिना आगे बढ़ना असंभव है इसलिए सहन करते हुए अपने आसन पर बैठा रहा । कई बार मेरी चीख निकल जाती, क्योंकि उसका आघात इतना प्रबल होता था । इस दौरान कई बार में आसन पर लुढ़क गया । फिर दोबारा से उठ कर बैठा और मंत्र जाप चालू किया ।

देवी साधनाओं को संपन्न करना आग के दरिया से निकलकर जाने जैसा है । विशेष रुप से अघोर मार्ग से करना तो बेहद जटिल है क्योंकि वहां सिर्फ दो ही रास्ते हैं पहला सफलता और दूसरा मृत्यु । इसलिए अघोर साधनाओं में वही लोग प्रवृत्त होते हैं जो घर छोड़ चुके होते हैं या फिर बचपन से ही अघोर पंथ की ओर आकर्षित और समर्पित होते हैं । यह दुधारी तलवार पर नंगे पांव चलने जैसा काम है और इसे करने वाले को सबसे पहले अपने प्राणों का मोह त्यागना पड़ता है अपने देश का मोह त्यागना पड़ता है और अपना सर्वस्व साधना ओं को समर्पित करना पड़ता है तभी वह वास्तविक रूप में अघोरी बन पाता है ।

काले कपड़े पहन लेना । शमशान में 4 दिन घूम लेना । इंसानी खोपड़ी अपने पास रख लेना । अजीब अजीब से त्रिशूल और चिमटा टांग कर घूमना । गांजे की चिलम लगाना दारू पीना । यह सब अघोरी होने के बाहरी लक्षण है । साधना तभी सिद्ध होती हैं जब साधक अंदर से अघोरी होता है । जब वह यह समझने लगता है कि मेरा कुछ नहीं है । सब कुछ इस प्रकृति का है और यह प्रकृति और इसमें स्थित सारे तत्व मेरे हैं । यहां मौजूद हर कोई मेरा अपना है । चाहे वह मनुष्य हो । जीव जंतु हो । पक्षी हो या फिर पेड़ पौधे । तब जाकर उसके अंदर अघोरत्व पूर्ण रूप से विकसित होता है । शिवत्व आता है और साधनाओं में उसे धीरे-धीरे सफलता मिलने लगती है .....

मेरी राय में गृहस्थ साधकों को दक्षिण मार्ग से ही साधना करनी चाहिए क्योंकि वहां साधना खंडित हो जाने पर भी बहुत ज्यादा नुकसान नहीं होता और दुबारा से साधना संपन्न करने की स्थिति में साधक रहता है ।

किसी प्रकार उस रात्रि का मंत्र जाप पूरा हुआ । रात के लगभग 3 बज चुके थे । मेरे शरीर का हर हिस्सा दर्द कर रहा था । किसी तरह बड़ी मुश्किल से मैं 4 बजे अपने कमरे पर पहुंचा । जैसे ही बिस्तर पर लेटा बेहोशी जैसी नींद में चला गया ।

अगले दिन सुबह 12 बजे तक मैं सोता रहा । इस बीच बापी कई बार दरवाजे की सांकल खटखटा गया लेकिन मेरी हालत इतनी खराब थी और नींद इतनी गहरी कि मुझे

पता भी नहीं चला। 12 बजे जब नींद खुली तो मैंने नित्य कर्म संपन्न किये और बाहर आया। बापी मुझे देखते ही खुश हो गया। सिगरेट पीने और सिक्का मिलने के बाद उसकी आत्मीयता मेरे तरफ बढ़ गई थी। उसने जल्दी से चाय बनाई और मुझे पेश की।

मैंने पूछा - दादा कहां है ?

बापी बोला - दादा स्कूल गए हैं। अब शाम को आएंगे।

चाय पीने के बाद बापी ने नाश्ते का प्रबंध किया। ऐसा करने के बाद बापी बोला - दादा सिक्का बड़ा चमत्कारी है।

मैंने पूछा - तुझे कैसे पता ? तेरे साथ कुछ हुआ क्या ?

वह बोला - दादा को नहीं बताओगे तो बताऊंगा।

मतलब मामला कुछ गड़बड़ था पर जानना भी था इसलिए मैंने दादा को नहीं बताने पर सहमति जता दी।

बापी मेरे और करीब आ गया और बोला - आज मैं सिक्का रखके पत्ता खेलने गया था।

उसने सौ सौ के 4 नोट निकालकर दिखाए और बोला - देखो मैंने आज ₹400 जीते।

मैंने उसको ज्ञान देना जरूरी नहीं समझा क्योंकि मुझे पता था की वह मेरी बात मानेगा नहीं क्योंकि जुए की लत बड़ी मुश्किल से छूटती है।

मैंने उससे पूछा - तू कब से खेल रहा है।

वह बोला - दादा मैं तो 10 साल का था तब से खेल रहा हूं । लेकिन पांच दस रुपये से ज्यादा कभी जीत नहीं पाया। आज पहली बार है जब ₹400 जीता हूं। यह उसी सिक्के का कमाल है।

उसकी खुशी देखकर मैंने उसकी पीठ थपथपाई ….. वह खुशी खुशी चला गया।

तारा माई की स्वर्ण मूर्ति

शाम को दादा लौटे उनके हाथ में एक थैला भी था। हाथ पैर धो कर उन्होंने हम दोनों को साधना कक्ष में आने के लिए कहा।

हम लोग साधना कक्ष में पहुंचे तो देखा दादा की मूर्ति तैयार हो चुकी थी। बहुत सुंदर मूर्ति बनी थी। सोने की मूर्ति की चमक वैसे भी बहुत शानदार होती है। दादा ने भगवती तारा का पूजन संपन्न किया। मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा संपन्न करके उन्होंने उसे स्थापित कर दिया। दादा के चेहरे पर खुशी के भाव थे। जैसे उनकी बहुत बड़ी इच्छा पूर्ण हो गई हो। उन्होंने कृतज्ञ निगाहों से मेरी तरफ देखा। मैंने हाथ जोड़ लिए , क्योंकि मैं जानता था कि मैं तो निमित्त मात्र हूं। भगवती तारा जब साधना कक्ष में अपने स्वर्णमई रूप में स्थापित होना चाहती है तो वह कुछ न कुछ माध्यम बना ही देती है। मैं वही माध्यम भर था ……..

मैंने भगवती तारा को साष्टांग दंडवत प्रणाम किया और साधना कक्ष से बाहर निकला ।

मेरे मन में यह जिज्ञासा आई कि मूर्ति की धातु से क्या लेना देना ?

यह सवाल सामान्य रूप से पूछा जाना भी जायज है, क्योंकि हम ऐसा मानते हैं कि भगवान श्रद्धा के भूखे हैं। भक्ति और भाव के आधार पर फल प्रदान करते हैं।

मैंने अपनी यह जिज्ञासा दादा के सामने रख दी । वह काफी समय गुरुदेव के साथ भी रहे थे और उन्होंने साधनाओं में काफी समय गुजारा है । इसलिए उनका अनुभव इस प्रकार की मेरी बाल सुलभ जिज्ञासाओं को शांत करने में सक्षम रहता है।

दादा बोले - यह बात भी अपनी जगह पर सही है । अगर आप अपने चारों ओर दृष्टिपात करें तो जिन मंदिरों में अत्यंत वैभव पूर्ण मूर्तियां जैसे सोने की या हीरे जड़ी मूर्तियां मौजूद है , वहां पर एक विशेष प्रकार का चेतना युक्त प्रभाव दिखाई देता है। शक्तिपीठों की बात अलग है। उस पर मैं कोई टिप्पणी नहीं करूंगा लेकिन जितने भी मानव निर्मित मंदिर हैं उनमें से जिन मंदिरों में वहां के विग्रह किसी विशेष पत्थर से, रत्न से बने होते हैं उनका प्रभाव तथा शक्ति अलग होती है।

अष्टधातु में ही विभिन्न देवी-देवताओं की मूर्तियां बनाए जाने का प्रचलन है । अष्ट धातु का प्रयोग इसलिए होता है क्योंकि केवल सोने से मूर्ति बना पाना महंगा होने के कारण हर किसी के लिए संभव नहीं है।

सोने की बनी मूर्ति या रत्न से बनी मूर्ति का प्रभाव अलग होता है । जितने ज्योतिर्लिंग माने जाते हैं, उनमें भी लगे हुए शिवलिंग विशिष्ट पत्थरों से बने हैं। शक्तिपीठ में रखी हुई पिंडी भी विशिष्ट पत्थरों से बनी होती है । जिनके अंदर अलग प्रकार की शक्तियां मौजूद होती हैं | जब आप स्वर्ण से बनी हुई मूर्ति को घर में स्थापित करते हैं तो वह ज्यादा जल्दी चेतना प्राप्त करती है और साधक को उस शक्ति से जल्दी जोड़ देती है।

अब बात मेरी समझ में आ रही थी मैंने अपनी जिज्ञासा प्रकट की - दादा ! रत्नों से बनी हुई मूर्ति का क्या महत्व है ?

दादा बोले - रत्नों से बनी हुई मूर्तियां भी ज्यादा फलदायक होती हैं। रत्नों को चेतना युक्त माना जाता है इसीलिए ज्योतिषी ग्रह पीड़ा के समाधान के लिए रत्नों की अंगूठियां पहनने की सलाह देते हैं। कई मामलों में जातक को उसका सकारात्मक प्रभाव भी दिखाई देता है।

अब बात काफी कुछ समझ मे आ गयी थी ....

मुझे तारा माई के दर्शन की इच्छा हो रही थी, इसलिए मैं फिर से तारापीठ की ओर चल पड़ा | वहां का पुजारी भी अब मुझे पहचानने लगा था, क्योंकि मैं लगातार 1 सप्ताह से वहां जाकर बैठता था । मुझे देखकर वह मुस्कुराया । मैं भी मुस्कुराया और हाथ जोड़कर

प्रणाम किया । उसने मुझसे बंगाली में पूछा कैसा चल रहा है ? मैंने सिर हिलाकर बताया कि बढ़िया है ।

थोड़ी देर में छाया भी वहां आ गई | पुजारी उसे भी जानता था । उसने पुजारी को प्रणाम किया | आशीर्वाद लिया । वह भी मंदिर में बैठ गई | पुजारी को किसी काम से बाजार जाना था वह जाली वाला दरवाजा लगा कर बाजार चला गया । अब मंदिर में सिर्फ हम दोनों ही थे । उसने बंगाली भाषा में कोई भक्ति गीत गाना चालू किया | उसकी आवाज बहुत मधुर थी | उसमें एक दैवीय स्पर्श था | ऐसा लगता था जैसे वह दिल को छू रही हो | उसने अपना पूरा गीत पूरा किया | मैं उसी को देखता बैठा था | गाना पूरा होते ही वह खिलखिला कर हंस पड़ी |

बोली - जिंदगी में कभी लड़की नहीं देखी है क्या ?

मैं सकपका गया | वह खिलखिला कर हंस पड़ी ....

मैं भी मुस्कुरा उठा | वह उठकर मेरे पास आई और बोली - रात को सवा किलो मिनी पेड़ा जरूर लाना |

जब तक मै उसकी बात का मतलब समझता वह अपनी उसी अल्हड़ चाल में मंदिर से बाहर निकल गई और मैं उसे देखता रह गया | जाते-जाते उसने फिर पलट कर देखा और दोबारा से बोली - रात को पेड़ा लेते आना |

साधना और देवी देवताओं का संसार भी विचित्र है | कई बार आपको किसी माध्यम के द्वारा यह संकेत मिलता है कि आपको अपनी पूजा या साधना में क्या करना है ? छाया का संकेत भी कुछ-कुछ उसी श्रेणी का था | संभवतः तारा माई रात को पेड़े का भोग चाहती होगी |

शाम ढलने लगी थी और अभी साधना प्रारंभ करने के लिए काफी वक्त था | इसलिए मैंने सोचा कि कमरे पर जाकर थोड़ी देर आराम कर लूँ |

जब मैं कमरे में पहुंचा तो शाम के सात बज चुके थे ! लाइट गुल थी ! इसलिए पूरे कमरे में अंधेरा छाया हुआ था ! मेरे पास एक टॉर्च थी, लेकिन उस समय मुझे उसे जलाने की इच्छा नहीं हुई |

कमरे की अलमारी के अंदर से हल्की हल्की रोशनी छनकर आ रही थी ! मैंने गौर से देखा वाकई अलमारी के अंदर से हल्की-हल्की पीले रंग की रोशनी आ रही थी ! मुझे लगा की नागमणि से तो नीली रोशनी आती है फिर यह पीली रोशनी कहां से आ गई है | मैंने अलमारी का दरवाजा खोला ! नागमणि को मैंने रुमाल में लपेट कर एक स्टील के डब्बे में रखा हुआ था | इसलिए रोशनी उसमें से नहीं आ रही थी | यह रोशनी साधू बाबा के द्वारा दिए गए हत्था जोड़ी में से निकल रही थी | ऐसा लग रहा था, जैसे हल्का पीले रंग का एक पारदर्शी गोला हत्था जोड़ी के चारों तरफ बना हुआ है |

यह बड़ी अजीब सी बात थी ! क्योंकि वहां कोई प्रकाश का स्रोत नहीं था ! लेकिन उस हत्था जोड़ी के चारों तरफ हल्का हल्का पीला प्रकाश दिख रहा था | मुझे याद आया कि मुझे हत्था जोड़ी का प्रयोग सीखने के लिए अघोरी बाबा ने कहा था | हो सकता है, यह उसे याद दिलाने का कोई संकेत हो | मैंने तय कर लिया कि अगले दिन उठने के बाद सबसे पहला काम यही करूंगा कि रेणु माई के पास जाकर इसकी विधि प्राप्त करूं |

तारा माई के दिव्य दर्शन

आज की रात तारा साधना की आखिरी रात थी | आज हर हालत में मुझे समय पर बैठना था और कई अनजान अनुभवों से होकर गुजरना था । जो आज की रात मेरे सामने आने वाले थे । पिछले 7 दिन बेहद घटना पूर्ण थे । हर घटना अपने आप में एक दूसरे से अलग थी ।

इसी तरह से रात हुई और लगभग 11:15 बजे में श्मशान में पहुंच गया । अपने साधना स्थल पर पहुंचकर मैंने रोज की तरह आसन बिछाया । अपने चारों तरफ सुरक्षा मंत्रों के साथ घेरा बनाया । श्मशान साधना करते समय सुरक्षा चक्र बनाना बहुत जरूरी होता है , क्योंकि उसके अभाव में श्मशान की शक्तियां साधक को साधना करने ही नहीं देती है, सिद्धि तो बहुत दूर की बात है ।

साढ़े ग्यारह बजे मेरा मंत्र जाप चालू हो गया । आखिरी रात होने की वजह से उत्साह भी ज्यादा था । उत्सुकता के साथ साथ अब क्या होगा वाली जिज्ञासा भी मन में भरी हुई थी । गुरुदेव ने आदेश देकर तारापीठ में भेजा है तो भगवती की कृपा प्राप्त होगी यह तो निश्चित था । लेकिन उसका स्वरूप व अनुभव कैसा होगा यह जानने की उत्कंठा मन में बलवती होती जा रही थी ।

मंत्र जाप करते करते लगभग एक घंटा हो चुका था । जैसा कि आपको याद होगा मंदिर में छाया ने मुझे पेड़ा लाने के लिए कहा था, भूल जाऊंगा सोच कर मैंने वापसी में ही पेड़ा खरीद कर झोली में रख लिया था । वह पेड़ा भी मैंने बाहर निकाल कर अपने पास रख लिया । मंत्र जाप चल रहा था और लगभग 60 माला तक विशेष कुछ घटना नहीं घटी । लगभग 1 बजने जा रहा था मैं आंख बंद करके मंत्र जाप में लगा हुआ था ।

अचानक ! मुझे एक आवाज सुनाइ दी - पेड़ा लाया ?

मैंने अपनी आंखें खोली सामने छाया बैठी हुई थी । मैं हड़बड़ा गया । रात के 1 बजे उस महा स्मशान में एक युवती मेरे सामने बैठी है । वह भी पूर्ण निर्वस्त्र अवस्था में ! इससे पहले जब भी मैं छाया से मिला था, वह एक सामान्य स्त्री जैसी ही लगी थी । उसकी वेशभूषा और बंगाली स्टाइल की साड़ी की वजह से उसकी देहयष्टि का बहुत ज्यादा पता नहीं चलता था । लेकिन आज वह पूर्ण निर्वस्त्र अवस्था में जब मेरे सामने बैठी थी तो वह किसी प्राचीन मूर्ति में प्राण स्थापना प्राप्त अप्सरा जैसी लग रही थी ।

हल्की हल्की चांदनी बिखरी हुई थी और उस चांदनी में उसके शरीर के कटाव स्पष्ट दिखाई दे रहे थे। वह मेरे सामने मुश्किल से डेढ़ फुट की दूरी पर बैठी थी। उसका हाथ मेरी तरफ फैला हुआ था।

उसने दोबारा कहा - पेड़ा लाए ?

तब जाकर मुझे थोड़ा सा आभास हुआ। थोड़ी चेतना आई। मैंने अपने पास रखे हुए पेड़े के डब्बे को उसकी तरफ बढ़ाया ……

लेकिन ! …

उसने डब्बे में से पेड़ा लेने का कोई उपक्रम नहीं किया। उस डब्बे को हाथ में लेकर उसने अपना मुंह खोल दिया। मैंने कुछ देर संकोच किया लेकिन वह उसी अवस्था में बैठी रही…..

रात के उस ठंडे वातावरण में भी मैं पसीना पसीना हो गया……

मैंने घबराते घबराते उस डब्बे में से एक पेडा निकाला और छाया के मुंह में डाल दिया। वह उसे आराम से चबाकर खाने लगी।

उसने मुझे देख कर कहा - तुम अपना जाप जारी रखो ! हर माला के बाद मुझे 1 पेड़ा खिलाना।

अब यह एक नई मुसीबत थी ! उसे मैं कुछ बोल भी नहीं सकता था ! जब भी देवी या महाविद्या की साधना की जाती है, तो किसी बालिका, युवती या स्त्री का अपमान या उससे दुर्व्यवहार नहीं करना चाहिए, चाहे वह किसी भी आयु/जाति/पद की हो। ऐसा करने के पीछे का कारण यह है कि भगवती किसी भी स्वरूप में परीक्षण के लिए आ सकती है।

देवी साधनाओं का मूल भी यही है कि साधक के मन में स्त्री अर्थात संपूर्ण स्त्री जाति के प्रति सम्मान का भाव होना चाहिए। देवी अपने अनंत स्वरूपों में इस भूमंडल पर नर्तन करती हुई घूमती है। हर स्त्री में उस भगवती का कुछ ना कुछ अंश होता ही है। इसे समझना और स्वीकार करना देवी साधना में सफलता की मूलभूत आवश्यकता में से एक है।

जहां कहीं भी प्रकृति में नारी तत्व दिख रहा है, वहां पर सृजन की संभावना भी मौजूद होती है। दूसरे शब्दों में कहें तो वह सूक्ष्म रूप में मातृत्व की क्षमता से युक्त है ! जनन की क्षमता से युक्त है ! सृजन की क्षमता से युक्त है ! अपने जैसे एक और जीव को उत्पन्न करने की क्षमता से युक्त है ! इसलिए वह वंदनीय है और उसका सम्मान होना चाहिए। यह भावना रखकर जब देवी साधना में साधक प्रवृत्त होता है तब उसे पूर्ण सफलता मिलती है। वह देवी के सहस्त्र स्वरूपों में सानिध्य की कृपा भी प्रदान करती है और ऐसी सफलता प्राप्त साधक को स्त्री शक्तियां चाहे वह बालिका के रूप में हो ! बेटी के रूप में हो ! बहन के रूप में हो ! प्रेमिका के रूप में हो ! पत्नी के रूप में हो ! मां के रूप में

हो ! हर रूप में उनका सानिध्य उनकी कृपा और उनका परम प्रेम प्राप्त होता है । उसके ऊपर मातृ शक्तियां सदैव अपना संरक्षण भरा हाथ रखती है ।

इसलिए मैं छाया की बात को ठुकराने की स्थिति में नहीं था । मुझे वह स्वीकार करना ही था । अब स्थिति यह थी कि मैं मंत्र जाप करता हुआ बैठा था । एक माला मंत्र जाप होता और जब सुमेरु तक पहुंचता तो वह अपना पेड़े का डब्बा मेरी तरफ बढ़ाती ! मैं एक पेडा निकाल कर उसके मुंह में डालता ! वह मुझे देख कर रहस्यमय ढंग से मुस्कुराती और आराम से पेड़ा खाते हुए मुझे देखते रहती । कुछ देर तो मैं भी उसको देखता, लेकिन फिर आंख बंद करके अपने मंत्र जाप में संलग्न हो जाता…

फिर एक माला पूरी होती और जब सुमेरु तक पहुंचता ! फिर से उसका पेड़े का डब्बा मेरे सामने आ जाता !

अगर मैं तब भी आंख बंद किया रहता तो वह जोर से बोलती - पेड़ा खिला ।

इस प्रकार 21 माला मंत्र जाप ऐसे ही हुआ । इस दौरान मैंने उसे 21 पेड़े खिलाए ।

इक्कीस माला के बाद वह आकर मेरे आसन में मेरे दाई तरफ बैठ गई !डब्बा अभी भी उसके हाथ में था ! अब स्थिति यह थी कि मैं बाँयी तरफ और वह दाहिनी तरफ बैठी हुई थी । उसकी टांग मेरी टांग से टकरा रही थी ।

मेरी स्थिति बहुत जटिल हो रही थी … क्योंकि उसकी उपस्थिति मात्र से मैं अत्यंत उत्तेजित महसूस कर रहा था….

मेरे लगातार प्रयास के बावजूद मेरी उत्तेजना कम नहीं हो रही थी….

किसी प्रकार मैं अपने आप को नियंत्रित करके बैठा जरूर था लेकिन मेरा शरीर मेरे नियंत्रण में नहीं था । उसमें उत्तेजना का प्रभाव मौजूद था । छाया मेरी बगल में बिल्कुल निश्चिंत बैठी हुई थी । अब वह पेड़े के डब्बे में से पेड़ा निकाल कर खुद ही खा रही थी । पेड़ा खाने का उसका तरीका भी बड़ा अजीब सा था । वह एक पेड़ा निकालती ! उसे हवा में उछालती ! और फिर उसे मुंह में लपक लेती !

जैसे ही मुझे लगा कि अब पेड़ा खिलाने वाली ड्यूटी खत्म हो गई तो मैं फिर आंख बंद करके । कस कर बंद कर के, मंत्र जाप में लग गया । लगभग 85 माला मंत्र जाप हो चुका था । अब 20-25 माला मंत्र जाप बचा हुआ था ।

मैंने एक बार पुनः छाया की तरफ देखा । डब्बे में अब सिर्फ दो चार पेड़े बचे थे, बाकी सब वह उदरस्थ कर चुकी थी ……

मैं फिर से आंख बंद करके अपने मंत्र जाप में संलग्न हो गया ….

इसके बाद चार-पांच मालाएं और शांतिपूर्ण ढंग से हुई । उसके बाद अचानक मुझे ऐसा लगा कि कोई मेरे ऊपर चढ़ रहा है । बड़ी अजीब सी स्थिति थी । छाया मेरे कंधे पर चढ़कर बैठ गई थी । उसकी दोनों टांगे मेरे गर्दन के दोनों तरफ थी । जैसे छोटे बच्चे अपने

पिता के कंधे पर बैठते हैं, ठीक वैसे ही वह मेरे कंधे पर सवार थी। उसने मेरे बालों को कस कर पकड़ा हुआ था।

अब कुछ मालाएं ही शेष थी …..

मैं मंत्र जाप कर रहा था ! अचानक ! उसने अपने हाथ में रखा हुआ पेड़ा मेरे मुंह में ठूंस दिया और अपनी हथेली से मेरे मुंह को बंद कर दिया ….

मैंने उसे रोकने की कोशिश की …..

उसका हाथ हटाने की भी कोशिश की …..

लेकिन उसने तब तक हाथ नहीं हटाया जब तक वह पेड़ा मेरे मुंह के अंदर गल नहीं गया !

वह मेरे से शरीर में कमजोर होगी ऐसा मैंने सोचा और उसके साथ ताकत आजमाइश करने की भरपूर कोशिश की लेकिन मैं अपने मुंह से उसके हाथ को नहीं हटा पाया …..

मेरा एक हाथ मंत्र जाप में संलग्न था। उस माला को मैं छोड़ नहीं सकता था। बाएं हाथ में जितनी ताकत थी उतना लगाकर मैंने कोशिश कर लिया, मगर उसने मुंह से हाथ नहीं हटाया ……

जब मैं मुंह में ही उसको रखा रहा, तो उसने मेरी नाक को भी दबा दिया …

अंततः वह पेड़ा मुझे निगलना ही पड़ा…..

मेरे पेड़ा निगलते ही वह नीचे उतर गई और मेरे सामने ताली बजा बजाकर हंसते हुए नाचने लगी।

ऐसा लग रहा था जैसे किसी बच्चे को उसकी पसंद का कोई काम करने का और वह भी जबरदस्ती करने का अवसर मिल गया हो ….

और उस खुशी में वह ताली बजा रहा हो ….

मैं हारी हुई अवस्था में उसकी ओर देखता हुआ टुकुर-टुकुर ताकता बैठा था। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि मैं क्या करूं ?

क्योंकि पेड़ा तो अंदर जा चुका था। मैंने फिर माला पकड़कर मंत्र जाप चालू कर दिया। वह अब भी मेरे सामने कूद कूद कर अपनी मस्ती में नाच रही थी …..

तभी मुझे ऐसा लगा जैसे मेरे अंदर से कुछ बाहर निकलने के लिए कोशिश कर रहा है एक-एक करके वे आठ काले कुत्ते जो आपको याद होगा ….जब साधना प्रारंभ हुई थी तो तारापीठ के सामने मेरे अंदर प्रवेश कर गए थे…. बाहर निकलने लगे।

जब भी वे बाहर निकलते तो मुझे ऐसा लगता जैसे मेरे शरीर को फाड़ दिया गया हो …….

भयंकर पीड़ा की अनुभूति होती…….

एक-एक करके भी आठों बाहर आ गए अब यह स्थिति थी कि छाया आगे आगे और उसके पीछे पीछे आठों कुत्ते मेरे चारों तरफ घेरा बनाकर नाच रहे थे। कई बार जैसे बच्चे

गोल गोल घेरे में घूम घूम कर नाचते हैं ठीक वही स्थिति थी । सबसे सामने छाया तालियां बजाकर कूद कूद कर नाचती चल रही थी और उसके पीछे पीछे यह आठों कुत्ते पूछ हिलाते हुए चल रहे थे…..

कुछ देर बाद छाया मेरे सामने खड़े होकर नाच रही थी और धीरे धीरे कुत्ते मेरे चारों तरफ गोल आकृति में तेजी से घूमने लगे लगभग 15 फीट के व्यास का गोला था जिसमें घूम रहे थे और उसके बीच में में बैठा हुआ था | छाया मेरे सामने नाच रही थी धीरे-धीरे कुत्तों की घूमने की रफ्तार बढ़ने लगी | ऐसा लग रहा था जैसे मेरे चारों तरफ गोल दीवाल सी बन गई हो एक बवंडर जैसा मेरे चारों तरफ घूम रहा था या यूं कह सकते हैं कि मैं ऐसा महसूस कर रहा था जैसे लगभग 15 फुट व्यास वाले एक गोल कमरे में बैठा हुआ हूं | उसके बाहर का मुझे कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था क्योंकि मेरे चारों तरफ गोल गोल गोल गोल वे कुत्ते घूम रहे थे

तब तक लगभग 100 मालाओं का मंत्र जाप पूरा हो चुका था । अब सिर्फ गिनती की मालाएं शेष थी । मैंने उससे ध्यान हटाया । आंखें बंद की और फिर से मंत्र जाप चालू कर दिया । थोड़ी देर में आवाजें आनी बंद हो गई । मैंने आंख खोल कर देखा तो छाया मेरे सामने बैठी हुई थी और मुझे घूर रही थी ।

कुत्तों का घूमना जारी था और मेरे चारों तरफ वह गोल बवंडर की दीवार अब भी मौजूद थी जिसका ऊपरी हिस्सा दिखाई नहीं दे रहा था ऐसा लग रहा था जैसे वह अनंत ब्रह्मांड तक फैला हुआ हो…...

मैंने फिर से आंखें बंद कर ली और अपने मंत्र जाप में संलग्न हो गया ।

मैं अपनी आखरी माला मंत्र जाप कर रहा था, तभी एक बेहद मीठी सी आवाज आई - तुमने मुझे क्यों याद किया ?

मुझे लगा छाया ही आवाज बदल कर बोल रही है । इसलिए मैंने आंखें नहीं खोली और मेरा मंत्र जाप चलता रहा । फिर से वही मधुर आवाज आई - तुमने मुझे क्यों बुलाया ।

अबकी बार मैंने धीरे से आंखें खोली !

मेरे सामने का सारा दृश्य बदल चुका था !

जिस स्थान पर छाया बैठी थी उस स्थान पर एक अद्वितीय सौंदर्य की स्वामिनी !

लगभग 16-17 वर्ष की एक युवती !

सुर्ख गुलाबी रंग की ! बेहद चमकीली ! रेशमी साड़ी पहने हुए ! सोलह सिंगार के साथ बैठी हुई थी ।

करोड़ों सूर्य की आभा को मात देता हुआ तेजस्वी मुख मंडल .....

करुणा वात्सल्य और स्नेह से भरी हुई तेजस्वी आंखें.....

मैं अवाक रह गया !

मेरी आंखें उस अद्वितीय सौंदर्य से हट ही नहीं रही थी !

क्योंकि वह भगवती का सौंदर्य था !

साक्षात भगवती महातारा अपने जाज्वल्यमान स्वरूप में मेरे सामने बैठी हुई थी !

मेरी आंखें फटी की फटी रह गई ! मैं मंत्र जाप भूल गया ! माला पूरी होने में मुश्किल से तीन-चार दाने ही बचे थे ।

मेरी आखरी माला चल रही थी । लेकिन मुझे उन चार मनको को भी चलाने का होश नहीं रहा ! मैं उस अभूतपूर्व अद्भुत अनिर्वचनीय दृश्य को अपनी आंखों के माध्यम से हृदय में उतारने के लिए सन्नद्ध हो गया । मैं उस दिव्य स्वरूप को देखता ही रह गया ।

कुछ पल के बाद मुस्कुराकर स्वयं माई ने कहा - माला पूरी कर ले ।

मै हड़बड़ाया । मैंने बाकी बचे तीन चार दाने पूरे किए । माला को सामने रखा और साष्टांग दण्डवत मुद्रा में उनके चरणों में लोट गया ।

भगवती तारा !

तारापीठ की अधिष्ठात्री !

भगवान शिव को नीलकंठ का स्वरूप देने वाली !

भगवती महातारा !

अपने देदीप्यमान स्वरूप में !

इस तुच्छ भक्त के सामने साक्षात !

मैं उनके चरणों में साष्टांग दंडवत प्रणाम करता हुआ !

अपना सर्वस्व उनके चरणों में समर्पित करता हुआ ! लेटा हुआ था ।

यह स्थिति कुछ सेकेंड रही होगी । फिर उन्होंने धीर गंभीर स्वर में कहा - उठ ।

मैं कुछ सुनने कुछ करने की स्थिति में नहीं था । उन्होंने ही उठाकर मुझे बिठाया । मेरी आंखों से आंसुओं की धारा बह रही थी । ऐसा लग रहा था जैसे कहीं बंधा हुआ कोई बांध टूट पड़ा हो । उस दिव्य स्वरुप की आंखों से वात्सल्य का भाव इतनी सरलता से प्रवाहित हो रहा था कि मेरे अंदर का शिशु तत्व ! मेरे अंदर का बालक ! जाग उठा । भावमयता का प्रवाह मेरे अंदर से उमड उमड कर निकल रहा था…….

मैं फफक फफक कर रो रहा था…..

मेरी आंखों से आंसू की धारा लगातार बह रही थी ....

भगवती मेरे सर पर हल्के हल्के से अपना हाथ फेरती बैठी थी । जब काफी देर हो गया और में थोड़ा संतुलित हुआ ! माई ने अपने आंचल से मेरी आंखें पोंछी । वात्सल्य भारी आंखों से मुझे देखकर उन्होंने पूछा - बोल बेटा , तुझे क्या चाहिए ?

अब मैं क्या बोलता ! जगत जननी ! इस संपूर्ण विश्व की अधिष्ठात्री ! जगदंबा महाविद्या ! स्वयं ! साक्षात ! जिस साधक के पास आ जाए ! वह क्या मांगेगा ? फिर मांगने

के लिए बचा भी क्या ?

मैं निःशब्द उनके सामने बैठा रहा । मैंने अपने दोनों हाथ याचना के लिए उनके सामने फैला दिए …..

मेरे मुंह से कोई शब्द निकलने की स्थिति में ही नहीं थे ……

शब्दों की स्वामिनी ! महा नील सरस्वती ! महातारा ! मेरे सामने साक्षात खड़ी थी । अब आप ही सोचें मेरे शब्द निकलते भी कैसे ?

मैंने निःशब्द ! भावनाओं के महासागर में डूबता हुआ ! अपने दोनों हाथों से बने हुए भिक्षा पात्र को उनके सामने रख ! फफक फफक कर रो रहा था…..

अपने अश्रु पुष्प जो मैंने उनके चरणों में समर्पित किए ! शायद उन्होंने उसे स्वीकार कर लिया !

उन्होंने फिर पूछा - बेटा तुझे क्या चाहिए ?

मैं बहुत प्रयास करके भी कुछ नहीं बोल पाया । बस रोता रहा, जैसे आंखों में आंसुओं का महासागर उमड़ आया हो ।

फिर तीसरी बार उन्होंने पूछा - बेटा बोल तुझे क्या चाहिए ?

मेरे मुंह से बस इतना ही निकल पाया - मां मुझे तो सब कुछ मिल गया ! अब मैं और क्या मांगू ?

माई ने स्नेह से मेरे सर पर हाथ फेरा और अदृश्य हो गई …..

अब तक कुत्तों का घूमना जारी था और मेरे चारों तरफ वह गोल बवंडर की दीवार अब भी मौजूद थी जिसका ऊपरी हिस्सा दिखाई नहीं दे रहा था ऐसा लग रहा था जैसे वह अनंत ब्रह्मांड तक फैला हुआ हो……

माई के अदृश्य होने के साथ ही उनका घूमना भी धीरे-धीरे धीमा होने लगा और फिर से वह धीरे-धीरे मेरे चारों तरफ चक्कर लगाने लगे और एक-एक करके शून्य में विलीन हो गए…….

मैं किंकर्तव्यमूढ सा ! वहीं पर पत्थर की तरह बैठा रहा ! उस अद्भुत ! अनिर्वचनीय! पारलौकिक ! शब्दों की व्याख्या से परे ! दिव्य अनुभव के आस्वादन का आनंद लेता हुआ ! इस लोक से ! इस संसार से ! इस जीवन से ! इस देह से ! शायद इस आत्मा से भी परे के उस अनंत ऐश्वर्य को अपने हृदय में समाहित करता हुआ !

जैसे एक पूरे महासागर को छोटी सी गगरी अपने अंदर समेट लेना चाहती हो ….

वैसा ही प्रयास करता हुआ मैं बैठा रह गया ….

लगभग आधे घंटे तक वैसी ही स्थिति रही । उसके बाद मुझे थोड़ा थोड़ा होश आया और तब जाकर मुझे समझ आया कि जिसे में छाया समझ रहा था वह वास्तव में भगवती स्वयं थी …..

उसने स्वयं मंदिर में आकर मुझसे अपने लिए भोग में पेड़े की व्यवस्था करने को कहा....

उसने स्वयं मेरे हाथों से पेड़े ग्रहण किए .....

उसने स्वयं अपने हाथों से मुझे पेड़ा खिलाया ....

यह एक एक बात अपने आप मे अद्भुत है !

शायद इसकी व्याख्या शब्दों में नहीं हो सकती...

यह अलौकिक ! शब्दों से परे ! मीमांसा से परे ! व्याख्या से परे !

जीवन के किसी भी आनंद से बढ़कर ! इस स्वर्गिक आनंद की, उस अनुभव की व्याख्या करना असंभव है।

बस ! बाकी आप समझ लीजिए....

उन अद्भुत क्षणों के बाद सामान्य होना बहुत मुश्किल स्थिति होती है !

मैं पागलों की सी अवस्था में वहां पर बैठा हुआ था। मैं समझ नहीं पा रहा था कि मैं भगवती के दर्शन , आगमन, उनके स्पर्श से हर्षित हूँ या उनके चले जाने से विचलित ?

उनके आशीर्वाद देने से प्रसन्न हूँ या अपने कुछ न बोल पाने की स्थिति के लिए दुखी ?

मैं सफल हुआ ? असफल हुआ ? मैं क्या हुआ ? सब कुछ धुंधला ! सब कुछ अजीब सा ! सब कुछ गड्डमड्ड हो गया था।

यह स्थिति मानसिक विचलन जैसी थी ...

साधना में गुरु की आवश्यकता क्यों होती है इस बात को अब आप समझे।

वह ऐसी स्थिति थी जहां कुछ भी हो सकता था। वहां पर मैं अपने सामान्य स्थिति से हटकर कुछ भी कर सकता था। मैं ऐसी स्थिति में पहुंच चुका था जिसके बाद संसार से लेकर सब कुछ बेमानी लग रहा था.....

ऐसी स्थिति में सदगुरु अपने शिष्य को सही मार्गदर्शन करने के लिए और उसे वास्तविक साधना का पाठ पढ़ाने के लिए अपनी भूमिका निभाते हैं।

गुरूदेव अपने सूक्ष्म स्वरूप में उपस्थित हो चुके थे.....

सफेद प्रकाश का गोला मेरे सामने स्पष्ट हो रहा था .....

मैं समझ गया गुरूदेव आ गए हैं.....

लेकिन मैं जिस अवस्था में बैठा था मुझे कुछ भी करने का ध्यान नहीं रहा...

मैं पत्थर की तरह बैठा हुआ था.....

गुरूदेव मेरे सामने प्रकट हुए।

उन्होंने अपने सफेद प्रकाश के आवरण में मुझे ले लिया।

ठीक वैसे ही जैसे एक रोते हुए शिशु को उसकी मां आंचल में अपने आगोश में ले लेती है । कुछ देर और फफकने के बाद वह शांत हो जाता है । ठीक वैसे ही गुरुवर की दिव्य काया ने मुझे अपनाया । मैं उनसे लिपट गया । मैं उनके हाथों का स्पर्श महसूस कर रहा था । उनके हाथ मेरे पीठ पर फिर रहे थे ।

ठीक वैसे ही जैसे मां अपने शिशु को ढाढस बंधाती है !

साहस बढ़ाती है !

धैर्य प्रदान करती है !

उसे शांत करती है !

वैसे ही गुरूदेव का हाथ मेरे सर पर, मेरे पीठ पर, फिर रहा था और उन्होंने मुझे अपने से सटा कर रखा हुआ था ।

मैं अभी भी रो रहा था । काफी देर के बाद मैं थोड़ा संतुलित हुआ ।

मुझे ध्यान आया ! अरे ! गुरूदेव को प्रणाम करना तो मैं भूल ही गया था.....

मैं उनके चरणों में दंडवत हुआ तो वह भी खिलखिला कर हंस पड़े - ठीक हो गया तू ।

मेरे आँसू भरी आंखों में भी एक मुस्कान बिखर गई ।

सद्गुरु हर संकट से शिष्य को निकालता है । गुरु वह शक्ति है , गुरु वह चेतन्यता है, गुरु वह परमात्मा का आत्मिक स्वरूप है जो अपने शिष्य को साधनाओं के माध्यम से, दीक्षा के माध्यम से, एक नया जीवन प्रदान करता है ।

उस शिष्य को वह अपने ज्ञान को प्रदान करता हुआ अपने मानसिक गर्भ में पालता है । इसलिए उसका व्यवहार भी ठीक वैसा ही होता है, जैसे अपने गर्भ में बच्चे को पालने वाली मां का होता है ।

फर्क सिर्फ इतना होता है कि मां के देखने की सीमा होती है और उस सीमा के अंदर वह अपने शिशु का हर तरह से ध्यान रखने की कोशिश करती है ।

जो सिद्ध गुरु होता है उसकी सीमा तो पूरा ब्रह्मांड है । वह हर क्षण अपने शिष्य ! अपने मानस पुत्र ! की रक्षा भी करता है ! उसकी देखभाल भी करता है ! उस पर नजर रखता है ! और उसके संरक्षण, उसके विकास के लिए निरंतर प्रयत्नशील भी रहता है .....

गुरुवर ने मुझे संभाल लिया वरना मेरी तो सारी कहानी ही उस दिन खत्म हो जाती ....

उन्होंने मेरी पीठ थपथपाई बोले - माई के दर्शन हो गए ? मैंने सहमति में सर हिलाया .....

अब तक मैं काफी हद तक सँभल चुका था ।

गुरुवर ने पूछा - कमरे पर पहुंच जाएगा या पहुंचा दूँ ।

मैंने कहा - चला जाऊँगा गुरूदेव ।

मैं अपना सामान समेटने लगा । सुबह के लगभग 4 बजे का समय रहा होगा । सामान समेट कर थैले में रखने के बाद मैं आगे चलने को हुआ । मानसिक स्थिति अभी पूरी तरह से सही नहीं थी । इसलिए लड़ खड़ा गया ।

गुरूदेव अभी भी मौजूद थे ! उनका सफेद रंग का आवरण फिर एक बार मेरे पास आया और मुझे अपने घेरे में ले लिया ! उसके बाद क्या हुआ मुझे पता नहीं !

जब मुझे दरवाजे पर खटके की आवाज आई तो मैंने घड़ी देखा । समय हो चुका था दोपहर 12 ।

यानी पिछले 7-8 घंटों से मैं सो रहा था….

बापी दरवाजा खोलकर अंदर आ रहा था । मुझे कमरे के अन्दर देख कर वह हड़बड़ा गया …..

बोला - आप अंदर कैसे आये ? बाहर तो ताला लगा था ……

अब मैं उसे क्या बताता ? लड़खड़ाने के बाद क्या हुआ ? यह मुझे बिल्कुल याद नहीं था ! यानी गुरूदेव ने मुझे कमरे में पहुंचाया था ।

मुझे बिस्तर से उठने का मन नहीं किया । इसलिए बिस्तर पर ही पड़ा रहा ।

मेरी अलसाहट देख बापी वापस चला गया । मैं फिर सो गया । लगभग 1 घंटे के बाद मेरी नींद खुली | दोपहर का एक बज चुका था ।

अब ऐसा लग रहा था कि नींद पूरी हो चुकी है…

पेट में चूहे कूद रहे थे…

भूख के मारे बुरा हाल था…..

मैं उठा और बिस्तर पर बैठे-बैठे गुरु को प्रणाम किया ।

तभी जैसे अंदर से कोई आवाज आई और मैंने तकिए को उठाकर देखा !

मेरी आंखें फटी की फटी रह गई ……

वहां पर सोने के दो टुकड़े पड़े हुए थे …

वे लगभग 5 -10 ग्राम के रहे होंगे ।

मेरे आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा ।

मैंने यह अवश्य सुना था कि भगवती तारा के साधक को सिरहाने पर नित्य द्रव्य की प्राप्ति होती है ।

आज मैं साक्षात देख रहा था कि मेरे तकिए के नीचे 2 तोला सोना पडा हुआ था !

मैंने तकिए को वापस रख दिया और बिस्तर पर बैठ गया !

अर्थात मुझे तारा सिद्धि प्राप्त हो चुकी थी ...

मैं 10 मिनट तक बिस्तर पर उसी प्रकार बैठकर अपने आप को शांत करता रहा ।

फिर मैंने दोबारा से तकिया उठा कर देखा कि कहीं मैंने सपना तो नहीं देखा । वहां पर सचमुच ही दोनों टुकड़े पड़े हुए थे ।

तभी कुछ आवाज आई तो देखा दरवाजे के बाहर बापी खड़ा था |

उसने कहा - जल्दी नहा कर आओ ! नाश्ता लगाता हूं या खाना खाओगे ।

समय को देखते हुए मैंने कहा - नहा कर आता हूं तुम खाना ही लगा दो ।

उसके बाद मैंने दरवाजा बंद कर लिया और फिर से तकिया उठा कर उन दोनों सिक्कों को हाथ में लेकर देखा । यह तो सचमुच सोने के टुकड़े थे । मैं समझ नहीं पा रहा था कि उनका क्या करूं ?

उस समय सोने का भाव लगभग ₹12000 तोला का चल रहा था , यानी कि वह करीब ₹24000 का सोना रहा होगा ।

मुझे तटस्थ होने में थोड़ा समय लगा । उसके बाद मैं तकिए को वापस रखकर नहाने चला गया |

स्नान करने के बाद सामान्य दैनिक पूजन करके मैं बाहर निकला ।

बापी तब तक खाना लगा चुका था ।

मैंने भोजन किया ।

दादा स्कूल जा चुके थे…

खाना खाकर मैं वापस अपने कमरे मैं लौट आया ।

बिस्तर पर लेट कर मैं कल की घटनाओं के बारे में विचार करने लगा । सब कुछ किसी फिल्म के सीन की तरह मेरे सामने से एक-एक करके गुजर रहा था ।

सबसे सुखद था भगवती का आगमन और उनका आशीर्वाद ….

|| **श्री सद्गुरु चरणार्पणम** ||

अनिल शेखर “अमस”

अन्य रचनाएँ :-

1. तांत्रिक अघोरानंद ।
2. अघोरानंद की अप्सरा ।
3. अघोरानंद और बलात्कारी प्रेत ।
4. अघोरानंद और तारापीठ की छाया ।
5. अघोरानंद और चौंसठ योगिनी मंदिर का रहस्य ।
6. अघोरानंद और छाया की माया ।
7. अघोरानंद और कमीना प्रेमी ।

8. अघोरानंद और महमारण प्रपंच ।
9. परेतिन की शादी ।